E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

11 YEARS ANNIVERSARY

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

वर्ष -11 अंक -160 | प्रयागराज, बुधवार 10 सितम्बर, 2025 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

उपराष्ट्रपति चुनाव- वोटों की गिनती शुरू,8 बजे तक रिजल्ट,कांग्रेस का दावा- इंडिया गठबंधन के सभी 315 सांसदों ने वोट डाला

नयी दिल्ली। 15वें उपराष्ट्रपति के लिए मंगलवार को मतदान हुआ। लोकसभा और राज्यसभा के सदस्य वोट देते हैं। हालांकि, इसके

संसद में सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक वोटिंग हुई। चुनाव में कुल 781 सांसदों ने वोट डाला। 6 बजे से वोटों की गिनती की जाएगी। करीब 8 बजे तक रिजल्ट आ जाएगा। एनडीए ने 68 साल के सीपी राधाकृष्णन को तो इंडिया ने 79 साल के बी सुदर्शन रेड्डी को प्रत्याशी बनाया है। बीआरएस और ओडिशा के पूर्व सीएम नवीन पटनायक की पार्टी बीजेडी ने उपराष्ट्रपति चुनाव से किनारा किया। दोनों पार्टियों ने किसी भी गठबंधन का समर्थन नहीं किया। राज्यसभा में बीआरएस के 4 और बीजेडी के 7 सांसद हैं। लोकसभा में इकलौते सांसद वाले शिरोमणि अकाली दल ने भी पंजाब में बाढ़ के चलते वोट डालने से इनकार कर दिया। वाईएसआरसीपी के 11 सांसदों ने पहले ही एनडीए उम्मीदवार के पक्ष में वोट करने का फैसला किया था। जीता उम्मीदवार जगदीप धनखड़ की जगह लेगा। धनखड़ ने 21 जुलाई को खराब सेहत का हवाला देकर अपने पद से अचानक इस्तीफा दे दिया था। उनका कार्यकाल 10 अगस्त 2027 तक था। उपराष्ट्रपति पद के लिए लिए व्हिप नहीं जारी होता। सभी सांसदों ने अगर पार्टी लाइन पर वोट किया तो एनडीए उम्मीदवार राधाकृष्णन के 422 और विपक्ष के रेड्डी के 315 वोट माने जा रहे हैं। ऐसे में राधाकृष्णन जीत सकते हैं। हालांकि गुप्त मतदान में क्रॉस वोटिंग दोनों तरफ से समीकरण बिगाड़ सकती है। समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा कि पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ चुनाव खत्म होने के बाद ही सामने आएंगे। सभी जानते हैं कि भाजपा एक यूज एंड थ्रो पार्टी है। पंजाब के फरीदकोट से निर्दलीय सांसद सरबजीत सिंह खालसा और खडूर साहिब से सांसद अमृतपाल सिंह उपराष्ट्रपति चुनाव 2025 का बहिष्कार किया है। इंडि अलायंस प्रत्याशी बी सुदर्शन रेड्डी ने कहा- मैंने अपना संदेश दे दिया है। मुझे लोगों से प्यार और समाज से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली है। मुझे पूरा विश्वास है। हम जीतने जा रहे हैं। मैं केवल लोगों की अंतरात्मा को जगाने की कोशिश कर रहा हूं। मैंने यह नहीं कहा कि क्रॉस-वोटिंग होगी।

जयशंकर बोले- ट्रेड पॉलिसी निष्पक्ष और सबके फायदे वाली हो,ब्रिक्स समिट में ट्रम्प का नाम लिए बिना कहा- दिक्कतें खड़ी करने से फायदा नहीं

नयी दिल्ली। विदेश मंत्री एस जयशंकर सोमवार को ब्रिक्स समिट की इमरजेंसी वर्चुअल समिट में शामिल हुए। इस दौरान जयशंकर ने कहा- ट्रेड पॉलिसी निष्पक्ष, पारदर्शी और सभी के फायदे वाली होनी चाहिए। अमेरिकी

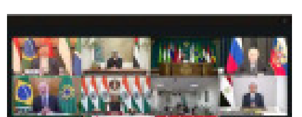

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प का नाम लिए बिना जयशंकर ने कहा कि दिक्कतें खड़ी करने और लेन-देन को मुश्किल बनाने से कोई फायदा नहीं मिलेगा। व्यापार को हमेशा सुगम बनाना चाहिए। वर्चुअल समिट में चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग, रूस के राष्ट्रपति व्लादमीर पुतिन, ब्राजील के राष्ट्रपति लूला डिसिल्वा भी शामिल हुए। पहले बैठक में पीएम मोदी शामिल होने की खबर भी थी। इस समिट का मकसद अमेरिका की टैरिफ नीतियों से पैदा हुई व्यापारिक चुनौतियों पर चर्चा करना था। अमेरिका ने भारत और ब्राजील जैसे देशों पर 50फीसदी तक टैरिफ लगाया है। ब्रिक्स 11 प्रमुख उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं वाले देशों का एक समूह है। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने अमेरिका की व्यापार चुनौतियों का सामना करने के लिए एकजुट होने पर जोर दिया। जिनपिंग ने कहा, कुछ देशों द्वारा शुरू किए गए व्यापार युद्ध और टैरिफ युद्ध विश्व अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते हैं और नियमों को कमजोर करते हैं। एस जयशंकर की 4 मुख्य बातें- सप्लाई चेन मजबूत होः जब भी संकट आता है, तो चीजों की कमी हो जाती है। इसे रोकने के लिए देशों को आपसी सहयोग बढ़ाना होगा। मजबूत और सुरक्षित सप्लाई चेन बनानी होंगी, ताकि सामान समय पर पहुंच सके। व्यापार घाटा सुलझाना जरूरीः भारत का सबसे बड़ा व्यापार घाटा ब्रिक्स देशों, खासकर चीन से है। इस समस्या को जल्दी सुलझाना जरूरी है, ताकि ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार संतुलित और सबके लिए फायदेमंद हो। वैश्विक संकट में बड़े संगठन फेलः कोरोना, युद्ध और जलवायु संकट ने पूरी दुनिया को परेशान किया है। लेकिन संयुक्त राष्ट्र जैसे बड़े संगठन इन समस्याओं को हल करने में नाकाम रहे हैं। इसलिए इन संस्थाओं में सुधार की जरूरत है।व्यापार को राजनीति से जोड़ना सही नहींः व्यापार को राजनीति या गैर-व्यापारिक मामलों से जोड़ना फायदेमंद नहीं है। ब्रिक्स देशों को आपसी व्यापार की समीक्षा करनी चाहिए। भारत 2026 में ब्रिक्स समिट की अध्यक्षता करेगा और 18वां ब्रिक्स शिखर सम्मेलन आयोजित करेगा। यह जिम्मेदारी ब्राजील से भारत को 1 जनवरी, 2026 से मिलेगी। मोदी ने 2025 में रियो डी जनेरियो में हुए 17वें ब्रिक्स समिट में भारत की योजना को साझा किया। भारत का लक्ष्य ब्रिक्स को एक नए रूप में पेश करना है, जिसका फोकस होगा- मानवता पहले, भारत ब्रिक्स को लोगों के हितों को प्राथमिकता देने वाला मंच बनाएगा, जैसा कि उसने जी 20 की अध्यक्षता में किया था। लचीलापन और नवाचार- भारत वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए नई तकनीकों और सहयोग पर जोर देगा। सतत विकास- जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण संरक्षण और वैश्विक स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर ध्यान दिया जाएगा। ग्लोबल साउथ की आवाज- भारत विकासशील देशों के हितों को बढ़ावा देगा और वैश्विक संस्थानों जैसे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद, आईएमएफ और विश्व बैंक में सुधार की मांग करेगा।

न लीडर न चेहरा,संसद तक कैसे पहुंचे नेपाली जेन-ज़ी,मेयर बालेन पर क्यों उठे सवाल,19 मौत के बाद सोशल मीडिया फिर शुरू

नयी दिल्ली। नेपाल में ये आंदोलन कैसे शुरू हुआ। इतनी ज्यादा भीड़ कैसी

जुट आई। क्या इसके पीछे कोई चेहरा या लीडर है? प्रदर्शन के चश्मदीद जर्नलिस्ट, एक्सपर्ट और पॉलिटिकल पार्टियों से बात कर पूरा मामला समझा। 8 सितंबर को नेपाल में हुए आंदोलन में ज्यादातर स्टूडेंट थे। इनमें से कुछ तो स्कूली ड्रेस में ही पहुंचे थे। शुरू में प्रदर्शन काफी शांतिपूर्ण था। इसे कवर कर रहे जर्नलिस्ट शंभू दंगल बताते हैं कि वो संसद के गेट नंबर-2 के सामने पुल के पास खड़े थे। तभी प्रदर्शन ने हिंसक

नेपाल हिंसा- पूर्व पीएम की पत्नी को जिंदा जलाया

रूप ले लिया। अचानक प्रदर्शनकारी संसद परिसर में दाखिल होने लगे। इन्हें बाहर निकालने के लिए पुलिस ने गोलियां चलानी शुरू कर दीं। इस दौरान कई प्रदर्शनकारियों के साथ शंभू भी पुलिस की गोली लगने से जख्मी हो गए। प्रदर्शन में शामिल युवाओं ने ही उन्हें इलाज के लिए एवरेस्ट अस्पताल पहुंचाया। तब उन्हें पता चला कि अस्पताल में पहले से कई घायल प्रदर्शनकारी भर्ती थे। 'इतने लोग जख्मी हुए थे कि अस्पताल में सारे बेड भरे हुए थे। घायलों को जमीन पर लिटाकर पट्टी बांधी जा रही थी। स्टाफ काफी कम था और काफी तनाव में भी था। कुछ देर बाद मुझे इमरजेंसी में ले जाया गया और एक्स-रे किया। इसके बाद ट्रॉमा सेंटर रेफर कर दिया गया।' वे बताते हैं, 'ट्रामा सेंटर में स्थिति और भी भयावह थी। यहां बहुत सारे प्रदर्शनकारियों का इलाज चल रहा था। किसी की आंख चली गई थी, किसी के शरीर के अलग-अलग हिस्सों में गोली लगी थी। यहां तक कि इमरजेंसी में एक्स-रे करवाने के लिए भी लंबी लाइन लगी थी।' काठमांडू में स्टूडेंट्स पर फायरिंग का एक वीडियो भी सामने आया है। इसमें एक घायल स्टूडेंट की मदद करने के लिए कुछ युवक ने एम्बुलेंस रुकवाई। वो छात्र को अंदर ले ही जा रहे थे कि तभी ऊपर से पुलिस ने टारगेट कर उन पर फायरिंग कर दी गई। जिसमें एक युवक की मौत हो गई। नेपाल में हुए इस आंदोलन को लेकर हमने पिछले कुछ दिनों में सोशल मीडिया पर हुई पोस्ट की बारीकी से पड़ताल की। इनसे नेपाल में हुए इस आंदोलन की परत-दर-परत समझ आई। ये आंदोलन अचानक नहीं हुआ, बल्कि इसे शांतिपूर्ण तरीके से करने की प्रशासन से इजाजत ली गई थी। बाद में ये हिंसक हो गया। हैशटैग स्टॉप करप्शन, जेन-ज़ी नेपाल और वेकअप नेपाल का इस्तेमाल करके फेसबुक और बाकी कुछ सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से ही इस आंदोलन की नींव रखी गई। इसे ज्यादा से ज्यादा यूथ तक पहुंचाने में काठमांडू के मेयर और नेपाली रैपर बालेन शाह की फेसबुक पोस्ट ने बड़ी भूमिका निभाई। असल में बालेन शाह ने 7 सितंबर को एक पोस्ट की थी। जिसमें लिखा था- 'कल (8 सितंबर) की रैली साफतौर पर जेन-ज़ी की है। मैं 28 साल से कम उम्र का हूं, लेकिन अब मैं उनकी तुलना में बूढ़ा दिखता हूं। मैं उनकी इच्छा, मकसद और सोच समझना चाहता हूं। कल की इस रैली में कोई भी पार्टी, लीडर, कार्यकर्ता या सांसद अपने निजी फायदों के लिए शामिल नहीं होना चाहिए। उम्र के कारण मैं जा नहीं सकता, लेकिन मेरा पूरा सपोर्ट है।' इस पोस्ट को 21 हजार से ज्यादा बार शेयर किया गया। साढ़े 3 लाख से ज्यादा यूजर्स ने इस पर रिएक्ट किया। 36 हजार से ज्यादा यूजर्स ने इस पर कमेंट किया था। सभी कमेंट में ज्यादा से ज्यादा लोगों को प्रदर्शन में बुलाने की बात कही गई। आंदोलन को लेकर एक और सोशल मीडिया पोस्ट है, जिसे नेपाली यूथ ने काफी वायरल किया। इस पोस्ट में लिखा है- 'ये हम सभी जेन-ज़ी का आंदोलन है। यहां किसी को लीडर नहीं बनाया जाता और कोई नेता बनने की कोशिश भी ना करे। सभी युवा नेता हैं। कोई भी मौके की तलाश में खुद को आगे दिखाने का काम न ही करे। - कोई एक्टर, नामी पर्सनैलिटी, लीडर यहां न आए। अगर सच में सपोर्ट करना है तो यूथ के साथ लाइन में लगकर आएं। ये किसी का भी प्रचार मंच नहीं है। - ये आंदोलन हमारे भविष्य, हमारी आवाज, हमारी आन-बान और शान के लिए है। कोई हिंसा नहीं, कोई नफरत नहीं, बस शांतिपूर्ण आवाज उठानी है।' नेपाल के सीनियर जर्नलिस्ट नरेश ग्यावली कहते हैं, '8 सितंबर को हुए हिंसक आंदोलन के पीछे दो बड़ी वजहें हैं। इस आंदोलन को दो दिनों में ही फाइनल किया गया। इसके पीछे तात्कालिक कारण तो सोशल मीडिया को बैन किया जाना है, क्योंकि इसे बैन किए जाने से यूथ काफी नाराज हुआ।' 'फेसबुक, इंस्टाग्राम और वॉट्सऐप समेत कई सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के लिए कुछ नियम-कानून बनाए गए हैं। जिसके लिए रजिस्ट्रेशन कराना जरूरी है। ये रजिस्ट्रेशन न कराए जाने पर 4 सितंबर को 26 सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को बैन कर दिया। इससे यूथ नाराज हो गया।' प्रदर्शनकारियों ने पूर्व पीएम झलनाथ खनाल के घर में आग लगा दी। घर में उनकी पत्नी राज्यलक्ष्मी चित्रकार थीं। वह गंभीर रूप से जल गईं। उन्हें तुरंत कीर्तिपुर बर्न अस्पताल ले जाया गया, जहां उनकी मौत हो गई।

नेपाल सरकार ने युवाओं के भारी विरोध के बाद सोमवार देर रात सोशल मीडिया से बैन हटा लिया है। कैबिनेट बैठक के बाद संचार मंत्री पृथ्वी गुरुंग ने कहा कि सरकार ने प्रदर्शनकारियों की बात मान ली है, हमने सोशल मीडिया ओपन कर दिया है, युवा अब विरोध बंद कर दें। इससे पहले नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली ने कल सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स से रोक हटाने से इनकार कर दिया था। इस प्रदर्शन की अगुआई जेन-ज़ी यानी 18 से 28 साल के युवाओं ने की थी। कल इस विरोध-प्रदर्शन में 19 लोग मारे गए थे, जबकि 400 से ज्यादा घायल हुए थे। यूएन मानवाधिकार ऑफिस ने भी इस हिंसा पर दुख जाहिर किया है और मामले की निष्पक्ष जांच की मांग की है।

बिना लीडर बिना किसी चेहरे के नेपाल में हिंसक प्रदर्शन के बीच पीएम ओली का इस्तीफा

संसद भवन में घुसे प्रदर्शनकारी, आगजनी की, राष्ट्रपति के घर तोड़फोड़

काठमांडू। नेपाल में हिंसक प्रदर्शन के बीच प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली ने इस्तीफा दे दिया है। उनके इस्तीफे की मांग को लेकर मंगलवार को राजधानी काठमांडू समेत नेपाल के प्रमुख शहरों में प्रदर्शन हुए हैं। प्रदर्शनकारी संसद भवन में घुस गए हैं और आगजनी की है। ओली के अलावा अब तक 4 मंत्रियों ने इस्तीफा दे दिया है। इनमें गृह मंत्री रमेश लेखक, कृषि मंत्री रामनाथ अधिकारी, स्वास्थ्य मंत्री प्रदीप पौडेल और जल आपूर्ति मंत्री प्रदीप यादव शामिल हैं। इस बीच प्रदर्शनकारियों ने पूर्व प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल प्रचंड, शेर बहादुर देउबा, कल गृहमंत्री के पद से इस्तीफा देने वाले रमेश लेखक और संचार मंत्री पृथ्वी सुब्बा गुरुंग के घर आगजनी भी की है। देश में भ्रष्टाचार और सोशल मीडिया पर बैन लगाने के विरोध में लगातार दूसरे दिन युवाओं का विरोध प्रदर्शन जारी है। अब तक इसमें 19 लोगों की मौत हुई है। भारी दबाव के बीच नेपाल में गठबंधन सरकार

टूटने का खतरा बढ़ गया है। देश में जुलाई 2024 से 88 सीटें वाली शेर बहादुर देउबा की नेपाली कांग्रेस और 79 सीटें वाली केपी शर्मा ओली की सीपीएन (यूएमएल) मिलकर सरकार चला रही है। अभी तक सभी इस्तीफे नेपाली कांग्रेस के नेताओं ने दिए हैं। पीएम ओली ने हिंसक प्रदर्शन के बीच पद से इस्तीफा दे दिया है। कल से उनके प्रदर्शनकारी और विपक्षी नेता उनके पद की इस्तीफे की मांग कर रहे थे। ओली 1 साल और 2 महीने ही पद पर रह सके। वे 15 जुलाई 2024 को तीसरी बार पीएम बने थे। पूर्व नरेश ज्ञानेंद्र शाह ने जेन-ज़ी आंदोलन पर सरकारी कार्रवाई के दौरान हुई जनहानि पर निराशा जताई है। उन्होंने कहा कि युवाओं की जायज मांगों पर ध्यान दिए बिना उनकी जान लेना बेहद दुखद है। प्रदर्शनकारियों ने मंगलवार को झापा स्थित नेपाली कांग्रेस महासचिव विश्वप्रकाश शर्मा के घर में आग लगा दी। इससे पहले, प्रदर्शनकारियों ने काठमांडू कांग्रेस महासचिव गगन कुमार थापा के डर और बनेश्वर हाइट्स स्थित पूर्व उपराष्ट्रपति बिमलेंद्र निधि के घर में आग लगा दी थी।नेपाल के राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल के बालाजू बोहोरातार स्थित निजी आवास के पास गोलीबारी की खबर है।विरोध प्रदर्शन के दौरान, दोपहर करीब 12 बजे भीड़ ने पौडेल के आवास में आग लगा दी। स्थिति पर काबू पाने में नाकाम रहने के बाद घर की सुरक्षा में तैनात सुरक्षाकर्मियों को भागना पड़ा। विरोध प्रदर्शनों पर हुई हिंसक कार्रवाई के खिलाफ विपक्षी दलों ने मंगलवार को सिंह दरबार में बैठक की। इस बैठक में राष्ट्रीय स्वतन्त्र पार्टी को छोड़कर सभी संसदीय विपक्षी दलों के नेता शामिल हुए और सामूहिक रूप से प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली के इस्तीफे की मांग की। विपक्षी नेताओं ने आरोप लगाया कि सरकार प्रदर्शनकारी युवाओं की चिंताओं को समझने और उनका समाधान करने में नाकाम रही है। उन्होंने प्रदर्शनों के दौरान हुई मौतों को 'अस्वीकार्य' बताया।

सोना ऑलटाइम हाई पर, रु1106 बढ़कर रु1.09 लाख/10 ग्राम पहुंचाःइस साल कीमत रु33,000 बढ़ी; चांदी रु1.25 लाख किलो बिक रहा

नयी दिल्ली। सोने-चांदी के दाम आज यानी 9 सितंबर को ऑल टाइम हाई पर पहुंच गए हैं। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन के अनुसार आज सोना 1,106 रुपए बढ़कर 1,09,143 रुपए प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गया। इससे पहले सोना 1,08,037 रुपए पर था। वहीं, चांदी 276 रुपए बढ़कर 1,24,689 रुपए प्रति किलो हो गई है। इससे पहले इसकी कीमत 1,24,413 रुपए थी। वहीं, इस महीने यानी सितंबर में ही सोना 6,755 रुपए महंगा हो चुका है। 31 अगस्त को ये 1,02,388 रुपए पर था। वहीं चांदी की कीमत इस दौरान 7,117 रुपए बढ़ी है। 31 अगस्त को ये 1,17,572 रुपए पर थी।भोपाल सहित 4 महानगरों में 10 ग्राम सोने की कीमत- दिल्लीः 24 कैरेट सोने की कीमत रु1,10,440 और 22 कैरेट सोने की कीमत रु1,01,250, मुंबईः 24 कैरेट सोने की कीमत रु1,10,290 और 22 कैरेट सोने की कीमत रु1,01,100, कोलकाताः 24 कैरेट

सोने की कीमत रु1,10,290 और 22 कैरेट सोने की कीमत रु1,01,100, चेन्नईः 24 कैरेट सोने की कीमत रु1,10,730 और 22 कैरेट सोने की कीमत रु1,01,500, भोपालः 24 कैरेट सोने की कीमत रु1,10,340 और 22 कैरेट सोने की कीमत रु1,01,150, इस साल अब तक सोने की कीमत 32,981 रुपए (40फीसदी) बढ़ी है। 31 दिसंबर 2024 को 10 ग्राम 24 कैरेट सोना 76,162 रुपए का था, जो अब 1,09,143 रुपए का हो गया है। चांदी का भाव भी इस दौरान 38,672 रुपए (43फीसदी) बढ़ गया है। 31 दिसंबर 2024 को एक किलो चांदी की कीमत 86,017 रुपए थी, जो अब 1,24,689 रुपए प्रति किलो हो गई है। सोने की कीमतों में तेजी के 5 कारण- वैश्विक अनिश्चितताः ट्रम्प के टैरिफ प्लान और व्यापार युद्ध के डर से निवेशक सोने को सुरक्षित मानकर खरीद रहे हैं। केंद्रीय बैंकों की खरीदः चीन और रूस जैसे देश बड़ी मात्रा में सोना खरीद रहे हैं, जिससे मांग बढ़ी है। युद्ध और तनावः रूस-यूक्रेन के युद्ध खत्म न होने से अस्थिरता से लोग सोने में निवेश बढ़ा रहे हैं। महंगाई और कम ब्याज दरेंः मुद्रास्फीति के डर और फेडरल रिजर्व की कम ब्याज दरों से सोना आकर्षक हो गया है। डॉलर के मुकाबले रुपए में गिरावटः डॉलर के मुकाबले रुपए में गिरावट के चलते भी सोना महंगा हो रहा है। केडिया एडवाइजरी के डायरेक्टर अजय केडिया कहते हैं कि अमेरिका के टैरिफ के चलते जियो पॉलिटिकल टेंशन बनी हुई है। इससे गोल्ड को सपोर्ट मिल रहा है और इसकी डिमांड भी बढ़ रही है। ऐसे में इस साल सोना 1 लाख 10 हजार रुपए प्रति 10 ग्राम तक जा सकता है।

बच्चों के सामने ही पत्नी की गला घोंटकर हत्या,सऊदी से आया था पति, छोटे बेटे-बेटी को पड़ोसी को देकर भागा

प्रयागराज। गंगापार के उतरांव थाना क्षेत्र के दमगड़ा गांव में विदेश से लौटे पति ने झगड़े के बाद पत्नी से मारपीट की। इसके बाद बच्चों के सामने पत्नी

की गला घोंटकर हत्या कर दी। पत्नी की हत्या के बाद दुधमुंहे बच्चे और छोटी बेटी को गोद में उठाया और भाग निकला। पड़ोस में रहने वाले कौसर दर्जी के घर पहुंचा और दुधमुंहे बच्चे और बेटी को उनके हवाले कर कहा- इसे दूध पिला देना और संभाले रहना। मैं डॉक्टर बुलाने जा रहा हूं। इसके बाद वो फरार हो गया। महिला की मौत की खबर पाकर मंगलवार सुबह मायके वालों ने हंगामा किया। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया। दोनों बच्चे अब मायके वालों के पास है। हत्या के बाद से महिला का ससुर और जेठानी भी फरार हैं। सास को हिरासत में लेकर पुलिस पूछताछ कर रही है। गंगापार के उतरांव थाना क्षेत्र के दमगड़ा गांव के रहने वाले मुश्ताक मंसूरी के चार बेटे हैं। तीसरे नंबर का बेटा अनवर उर्फ गोली (35) सऊदी अरब से एक महीने पहले 8 अगस्त को घर आया था। इन दिनों वह गांव में रह रहा था। सोमवार की रात एक बजे उसका पत्नी सलमा बानो (30) से झगड़ा हुआ। पत्नी से जमकर मारपीट की। इसके बाद दोनों बच्चों के सामने अनवर ने अपनी पत्नी का गला घोंट दिया। जिससे उसकी मौके पर मौत हो गई। सलमा के गले पर निशान पाए गए। साथ ही इतनी कस के गला दबाया गया कि खून जम गया। उंगलियों के निशान साफ नजर आ रहे है। मृतका की खाला शबीना बेगम ने बताया- अनवर बाबा और ताबीज आदि के चक्कर में भी पड़ा था। इसी वजह से उनके घर में अक्सर झगड़ा होता रहता है। कल रात में उसने सलमा बानो की गला दबाकर हत्या कर दी। उसके तीन बच्चे है। एक 5 महीने का है। अनवर एक महीने पहले सऊदी अरब से आया था।एसीपी सुनील कुमार सिंह ने बताया- शव का पोस्टमॉर्टम कराया जा रहा है। रिपोर्ट आने के बाद ही कुछ कहा जा सकता है। फिलहाल गले पर गहरे निशान हैं। परिवार वालों से पूछताछ की जा रही है। अनवर की तलाश जारी है। दोनों बच्चे पड़ोस में मिल गए हैं।

चिराग तले अँधेरा-आईटी इंस्पेक्टर के घर में 4 साल से सेक्स रैकेट

प्रयागराज। नैनी के पीडीए कॉलोनी के एक मकान में शनिवार को सेक्स रैकेट पकड़ा गया। पुलिस ने मकान से 2 महिलाएं और चार पुरुषों को अरेस्ट किया। पकड़े गए

लोग बिहार, पश्चिम बंगाल, मेरठ, चित्रकूट के रहने वाले हैं। पुलिस जांच में सामने आया कि 4 साल से सेक्स रैकेट चल रहा था। जिस मकान में सेक्स रैकेट चल रहा था। वह वह मकान आयकर निरीक्षक हिमांशु कुमार का है। जो बनारस में तैनात हैं। मामले को लेकर कॉलोनी के लोगो में रोष हैं वहीं महिलाओं की भीड़ भी जुटी हुई थी। महिलाओं से पूछने पर बताया कि 8 साल पहले हिमांशु कुमार ने यह मकान बनवाया है। यह मकान 3बीएचके बना है। मकान मालिक बनारस में आयकर निरीक्षक के पद पर तैनात हैं। मकान मालिक हिमांशु कुमार ने अपने साले संतोष कुमार को देखरेख के लिए दे दिया। जब लोग उससे पूछते थे कि मकान में क्या होता है तो वह कहता था कि यह गेस्ट हाउस है। फिर संतोष ने यह मकान अपने साथी अशोक शुक्ला और अनुज को सौंप दिया। इसके बाद दोनों ने मिलकर यहां सेक्स रैकेट शुरू कर दिया। नीरा ने बताया, मैं यहीं रहती हूं। कुछ समय पहले मैं अपनी बालकनी में खड़ी थी। हिमांशु के मकान में ताला पड़ा था। मगर एक कमरे की खिड़की खुली थी, मैंने अंदर लड़के-लड़की को आपत्तिजनक स्थिति में देखा। फिर मैंने अपने पति को बुलाया। पति ने भी देखा। हम लोगों ने इसकी सूचना पुलिस को दी, मगर पुलिस ने कार्रवाई नहीं की। वहीँ एक महिला ने बताया - मैंने इस मकान में कभी मकान मालिक को नहीं देखा। यहां न दूध वाला आता है और न सब्जी वाला। ऐसा कोई नहीं दिखता है। अंदर से ताला बंद रहता है। मकान के आस पास लड़के खड़े होकर सिगरेट पीते रहते है। अगर कोई रहता तो ताला क्यों बंद होता। मैं 6 साल से रह रही हूं।

रोज सुबह निकलती हूं टहलने के लिए। रोज भोर में लड़की लड़के आ जाते है। कल जब यहां लोग पकड़े गए तो पुलिस ने यहां की महिलाओं और इस्कॉन के गुरु जी को धक्का दिया। पुलिस डंडा लेकर मारने के लिए आगे आई। पुलिस बोली तुम लोग यहां के नहीं हो तो क्यों बोल रहे हों। लेकिन हम इस कॉलोनी के भले न हो पर इस देश के जरूर है। यहां गलत नहीं होने देंगे।

फाफामऊ पुल 10 सितंबर से बंद, 15 दिन चलेगा काम,डायवर्जन प्लान लागू 32किमी की बढ़ जाएगी दूरी

प्रयागराज। फाफामऊ पुल मरम्मत के लिए 10 सितंबर से बंद किया जाएगा। पुल की मरम्मत 15 दिन तक चलेगी। इसको लेकर

यातायात पुलिस ने एडवाइजरी जारी कर दी। साथ ही रूट डायवर्जन का खाका सार्वजनिक कर दिया ताकि लोग पहले से जान सकें कि कहां से कैसे जाना है। फाफामऊ पुल बंद होने का असर शहरियों के लिए बड़ी मुसीबत लेकर आएगा। एक तो लाखों की वो आबादी प्रभावित होगी तो इस पुल के जरिए शहर में प्रवेश करती है साथ ही लखनऊ, प्रतापगढ़, फैजाबाद मुख्य मार्ग का यह सबसे अहम पुल है। ऐसे में हजारों वाहनों के लिए बाईपास के इंतजाम हुए हैं जो कि मुश्किलों भरे हैं। प्रयागराज से लखनऊ और प्रतापगढ़ जाने के लिएःसिविल लाइंस से बालसन चौराहा, शास्त्री पुल, अंदावा-सहसो एनएच-2 का प्रयोग करेंगे। फाफामऊ से प्रयागराज जाने के लिए- फाफामऊ थरवई सहसो- शास्त्री पुल, जीटी जवाहर से प्रयागराज आ सकेंगे। फिर इसी से लौटेंगे। लखनऊ से आने वाले वाहन- श्रृंगवेरपुर से कोखराज से पूरामुफ्ती से धूमनगंज/एयरपोर्ट होते हुए प्रयागराज आ सकेंगे। फाफामऊ पुल से टू-व्हीलर वाहन का आना-जाना चलता रहेगा। जरूरत पड़ने पर इनका संचालन बंद किया जाएगा। फाफामऊ पुल बंद होने पर विकल्प के रूप में सहसों मार्ग लोगों के लिए उपलब्ध रहेगा लेकिन फाफामऊ से शहर की दूरी करीब 32 किलोमीटर बढ़ जाएगी। ऐसे में लोगों को अधिक दूरी, अधिक समय व अधिक किराए का सामना करना पड़ेगा।

सुप्रीम कोर्ट के निर्णय से दुखी शिक्षक आगामी 16 सितम्बर को प्रधानमंत्री को भेजेंगे ज्ञापन-राजेश शुक्ला

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। केन्द्र सरकार द्वारा गुप-चुप तरीके से सेवारत शिक्षकों की सेवारत शर्तों में किए गए संशोधन और सुप्रीम कोर्ट द्वारा उसे बाध्यकारी किए जाने से आहत शिक्षकों की एक आपात बैठक आज पूमावि चक अहमदपुर नजूल में उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ,शाखा-रायबरेली के जिलाध्यक्ष श्री राजेश कुमार शुक्ला जी की अध्यक्षता में संपन्न हुई। जिलाध्यक्ष राजेश कुमार शुक्ला ने कहा कि केन्द्र सरकार द्वारा सेवा शर्तों में संशोधन किए जाने और सुप्रीम कोर्ट द्वारा इसे बाध्यकारी किए जाने से शिक्षक समाज हतप्रभ है। अध्यक्ष,जिला संघर्ष समिति पंकज द्विवेदी ने कहा कि शिक्षक के समक्ष आज आजीविका का संकट खडा हो गया है,सुप्रीम कोर्ट के निर्णय से दुखी शिक्षक आगामी 16 सितम्बर को प्रधानमंत्री को संबोधित ज्ञापन जिलाधिकारी, रायबरेली को सौंपेंगे। जिला मंत्री मुकेश चंद्र द्विवेदी ने कहा कि केन्द्र सरकार द्वारा गुप-चुप तरीके से किए गए संशोधन से देश भर में 10 लाख से अधिक सरकारी शिक्षकों के समक्ष बेरोजगारी का संकट खडा हो गया है। जनपदीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजेश कुमार यादव ने कहा कि शिक्षक की भर्ती के जब भी,जो भी मापदण्ड सरकार द्वारा तय किए गए उनका पालन करते हुए शिक्षक भर्ती हुआ है। जनपदीय उपाध्यक्ष डा बृज किशोर ने कहा कि शिक्षक अपनी आजीविका के लिए क्रमबद्ध लडाई लडेगा। जनपदीय कोषाध्यक्ष सुधीर सिंह ने कहा कि इस निर्णय से शिक्षक दु:खी एवं चिन्तित है,केन्द्र सरकार से लडाई लडी जाएगी। जनपदीय संयुक्त मंत्री डा चंद्र मणि बाजपेई ने कहा कि सरकार की मंशा शिक्षक समाज को तबाह करने की है। जनपदीय उपाध्यक्ष जटाशंकर बाजपेई ने कहा कि खेल के बीच में खेल के नियम बदलना कहां का न्याय है। जगतपुर अध्यक्ष डा संजय सिंह ने कहा कि संघर्ष के अलावा कोई चारा नही बचा है। सरेनी अध्यक्ष राकेश द्विवेदी ने कहा कि भारत सरकार द्वारा टीईटी को लेकर बनाये गये कानून के क्रम में सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिए गये निर्णय से देश भर के दस लाख से अधिक सरकारी शिक्षकों के सामने दो वर्ष बाद सेवा से बाहर किए जाने का खतरा उत्पन्न हो गया है। छतोह अध्यक्ष आदित्य पाण्डेय ने कहा कि हम प्रधानमंत्री एवं केन्द्रीय शिक्षा मंत्री से अनुरोध करते हैं कि शिक्षकों के साथ न्याय करने की घोषणा करें,उनकी घोषणा ही शिक्षकों के लिए वास्तविक सम्मान होगा। बैठक के अंत में टीईटी के चलते नौकरी जाने के भय से फांसी लगाकर आत्महत्या करने वाले शिक्षक मनोज साहू की आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखते हुए उनकी आत्मा की शान्ति हेतु प्रार्थना की गई। इस अवसर पर जनपदीय उपाध्यक्ष दिनेश सिंह,जनपदीय उपाध्यक्ष अनुराग शुक्ला,जनपदीय संगठन मंत्री आकाश त्रिपाठी,डलमऊ अध्यक्ष योगेश सिंह,बछरावां अध्यक्ष अमन शुक्ला,अमावां अध्यक्ष अशोक पाल,डीह अध्यक्ष कमलेश ओझा,डीह मंत्री नीलेश शुक्ला,सलोन अध्यक्ष राजेश पाण्डेय,सलोन मंत्री रमेश सिंह,जनपदीय संघर्ष समिति के कार्यवाहक अध्यक्ष सुरेन्द्र यादव सहित शिक्षक समाज ने शिक्षक दिवस का बहिष्कार किया।

राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (एनसीएपी) की बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। कलेक्ट्रेट सभागार में अपर जिलाधिकारी (प्र) सिद्धार्थ की अध्यक्षता में राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (एनसीएपी) की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में सड़क निर्माण एवं मरम्मत, साइड पटरी का विकास, जन-जागरूकता, क्षमता संवर्धन तथा हरित क्षेत्र विस्तार जैसे महत्वपूर्ण बिंदुओं पर गहन चर्चा की गई। अपर जिलाधिकारी ने निर्देश देते हुए कहा कि स्वच्छ वायु कार्यक्रम को जन-जन तक पहुँचाने के लिए वृहद जनजागरूकता अभियान चलाया जाए। सड़कों की मरम्मत के साथ-साथ उनके किनारों पर हरित पट्टी का विकास सुनिश्चित किया जाए। लगाए गए पौधों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाए। किसानों को पराली न जलाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए तथा इसके विकल्प उपलब्ध कराए जाएं। उन्होंने कहा कि स्वच्छ वायु कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी विभागों का समन्वय और जनसहयोग आवश्यक है। बैठक में ईओ नगर पालिका स्वर्ण सिंह, कृषि उपनिदेशक विनोद कुमार, जिला उद्यान अधिकारी जयराम वर्मा सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

राकेश तिवारी के नेतृत्व में विश्व हिन्दू परिषद का जिलाधिकारी कार्यालय में प्रदर्शन कर सौंपा गया ज्ञापन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। बीते सोमवार विश्व हिंदू परिषद के बैनर तले समस्त कार्यकर्ताओं ने जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचकर प्रदर्शन करते हुए जिलाधिकारी को सौंपा ज्ञापन। बीते दिनों बारह वफात जुलूस के दौरान सलोन कस्बे में फिलिस्तीन का झंडा फहराने को लेकर समस्त संगठनों में आक्रोश देखने को मिला। जहां आज जिला अध्यक्ष राकेश तिवारी, विवेक सिंह प्रांत मंत्री, अवध प्रांत विश्व हिंदू परिषद ने मांग की है, कि ऐसे लोगों पर राष्ट्र द्रोह का मुकदमा दर्ज कराया जाए। यह कौन लोग हैं जिन्होंने फिलिस्तीन का झंडा फहराया है और पुलिस ने किन धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है।इसकी भी जांच होनी चाहिए। लगातार इस तरह के मामले बढ़ते ही जा रहे हैं। तो इन्हीं मुद्दों को लेकर मेरी शासन और प्रशासन से मांग है ऐसे लोगों पर गंभीर कार्रवाई की जाए।

राज्य स्तरीय सीनियर वर्ग पुरूष कबड्डी प्रतियोगिता हेतु जिला स्तरीय चयन ट्रायल्स 09 सितम्बर, मण्डल स्तरीय चयन ट्रायल्स 10 सितम्बर को

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। क्रीडाधिकारी धीरेंद्र कुमार पुरुषोत्तम ने बताया है कि वर्ष-2025-26 में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर राज्य स्तरीय सीनियर वर्ग पुरूष कबड्डी प्रतियोगिता के आयोजन किया जा रहा है जिसमें जिला स्तरीय चयन ट्रायल्स जिला खेल कार्यालय रायबरेली में 09 सितम्बर 2025 को प्रातः 11 बजे आयोजित की जा रही है तथा पुरूष कबड्डी प्रतियोगिता मण्डल स्तरीय चयन ट्रायल्स क्षेत्रीय क्रीडाधिकारी, क्षेत्रीय खेल कार्यालय लखनऊ में 10 सितम्बर 2025 को आयोजित की जाएगी। राज्य स्तरीय सीनियर वर्ग पुरुष बॉलीबॉल प्रतियोगिता आयोजन डा0भीमराव अम्बेडकर स्टेडियम सहारनपुर में 15 से 17 सितम्बर 2025 तक किया जाना निर्धारित है। जिसमें मण्डल की टीम को भाग लेना है। क्रीडाधिकारी ने बताया है कि प्रतियोगिता में भाग लेने वाली पुरुष वर्ग खिलाडियों आधार, निवास प्रमाण-पत्र फोटो लाना होगा। जनपद स्तर पर सफल बालक खिलाडी को मण्डलीय चयन ट्रायल्स में भेजा जायेगा। कबड्डी खिलाडी को पात्रता-प्रमाण पत्र लाना अनिवार्य होगा।

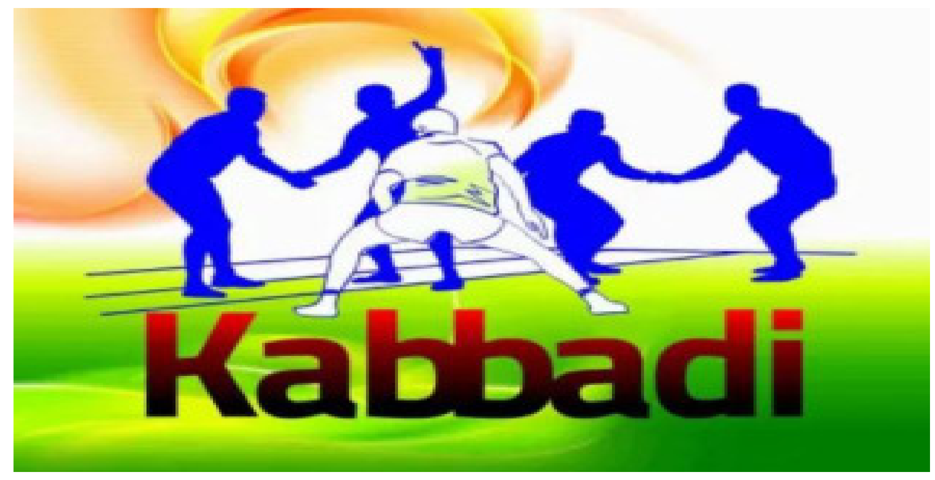

बालिका दिवस पर बेथनी कॉन्वेंट स्कूल, नैनी में विशेष कार्यक्रम

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। नैनी बेथनी कॉन्वेंट स्कूल में आज बालिका दिवस बड़े ही उत्साह और गरिमा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय में स्वास्थ्य एवं स्वच्छता विषय पर विशेष सत्र आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रसिद्ध स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. सिंथिया उपस्थित रहीं। अपने प्रेरणादायी संबोधन में डॉ. सिंथिया ने छात्राओं को स्वास्थ्य, व्यक्तिगत स्वच्छता और संतुलित जीवनशैली के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि 'स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है, और प्रत्येक बालिका को आत्मसम्मान के साथ अपने स्वास्थ्य और स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए।' इसके अतिरिक्त सिस्टर डॉ. शमीथा ने किशोरावस्था में होने वाले शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तनों पर छात्राओं को मार्गदर्शन दिया। उन्होंने कहा कि यह परिवर्तन स्वाभाविक और जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जिन्हें आत्मविश्वास और अनुशासन के साथ स्वीकार करना चाहिए। कार्यक्रम का शुभारंभ मिसेज़ नाज़िया द्वारा मुख्य अतिथियों के स्वागत भाषण से हुआ। अंत में विद्यालय की वाइस प्रिंसिपल सिस्टर ग्रेसी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए कहा कि 'बालिका को सशक्त बनाना ही समाज और राष्ट्र की प्रगति की आधारशिला है।' इस अवसर पर विद्यालय परिवार, शिक्षक-शिक्षिकाएँ और छात्राएँ बड़ी संख्या में उपस्थित रहीं। छात्राओं ने उत्साहपूर्वक प्रश्न पूछे और विशेषज्ञों से उपयोगी जानकारी प्राप्त की।

अमर शहीद लाला जगत नारायण की पुण्यतिथि पर रक्तदान शिविर का आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। नोएडा के जिला अस्पताल में मंगलवार को अमर शहीद लाला जगत नारायण की 44वीं पुण्यतिथि के अवसर पर रक्तदान शिविर एवं मेडिकल चैकअप कैम्प का आयोजन किया गया। इस मौके पर अस्पताल परिसर में उनकी प्रतिमा पर फूल अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गई। शिविर में बड़ी संख्या में लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और रक्तदान के माध्यम से सामाजिक सेवा में योगदान दिया। इस मौक़े पर नोएडा मीडिया क्लब के महासचिव जयप्रकाश सिंह भी पहुंचे और रक्तदान कर शिविर में हिस्सा लिया, रक्तदान करने के लिए उन्हें प्रशंसा पत्र देकर सम्मानित किया। आयोजन में नवोदय टाइम्स के ब्यूरो चीफ दिनेश शर्मा ,फ़ोटो जर्नलिस्ट प्रमोद शर्मा एवं अन्य गणमान्य लोग भी मौजूद रहे। इस शिविर में न केवल शहीद लाला जगत नारायण के स्वतंत्रता संग्राम में योगदान को याद किया, बल्कि रक्तदान जैसे पुण्य कार्य के माध्यम से सामाजिक जिम्मेदारी को भी बढ़ावा दिया गया।

उपभोक्ताओं के लिए स्माईर्ट मीटर बना वरदान, दिन के टैरिफ में 20 प्रतिशत की छूट

शहडोल। पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा स्मार्ट मीटर के माध्यम से उपभोक्ताओं को दिन के टैरिफ में 20 प्रतिशत की छूट प्रदान की जा रही है। स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं के लिए यह सभी छूट अथवा प्रोत्साहन की गणना सरकारी सब्सिडी को छोड़कर की जा रही है। पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा स्मार्ट मीटरिंग पहल के अंतर्गत, उपभोक्ताओं को उनके मासिक विद्युत बिल में टाइम ऑफ डे छूट का लाभ प्रदान किया है। स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं को उनकी खपत के आधार पर ये छूट दी जाती है। कार्यपालन अभियंता विद्युत मण्डल शहडोल श्री जनमेजय सिंह ने बताया है कि ऊर्जा की खपत को ट्रैक करने और ऊर्जा की बचत करने में मदद करता है।बिजली की खपत को सटीक रूप से मापता है, जिससे बिल में कोई गलती नहीं होती। एप के जरिए मोबाइल पर रियल-टाइम डेटा देखकर ऊर्जा की खपत को नियंत्रित कर सकते हैं। ऊर्जा की गुणवत्ता के बारे में जानकारी मिलती है, ताकि ऊर्जा की खपत को बेहतर बना सकते हैं। ऊर्जा की खपत को ऑनलाइन ट्रैक करने और नियंत्रित करने की सुविधा मिलती है। ऊर्जा की खपत को कम करने से पर्यावरण पर पड़ने वाला प्रभाव कम होता है।ऊर्जा की खपत को नियंत्रित करने और ऊर्जा की बचत करने में मदद कर सकता है। स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं के लिए जिसमें घरेलू, गैर घरेलू, सार्वजनिक जल कार्य और स्ट्रीट लाइट और निम्निदाब औद्योगिक उपभोक्तोओं के लिए सोलर ऑवर सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक की अवधि के दौरान उपभोग की गई ऊर्जा के लिए ऊर्जा प्रभार की सामान्य दर पर 20 प्रतिशत की छूट 10 किलोवाट तक स्वीकृत लोड / अनुबंध मांग वाले उपभोक्ता्ओं को ही दी जा रही है।

अनिरुद्धाचार्य के पुतले पर महिलाओं ने बरसाईं चप्पलें,बोलीं- कथावाचक को अरेस्ट करें-पुलिस ने हाथ जोड़े

वाराणसी। 'लड़कियां मुंह मारती हैं' वाले बयान पर कथावाचक अनिरुद्धाचार्य के खिलाफ गुस्सा थम नहीं रहा है। वाराणसी में मंगलवार को महिलाओं ने अनिरुद्धाचार्य के खिलाफ 1किमी लम्बा जुलूस निकाला। उनके पुतले पर चप्पलें मारीं। फिर जमीन पर पटककर लातों से कुचला। महिलाओं को पुतला फूंकने की कोशिश की तो पुलिस ने छीन लिया। इस दौरान महिलाओं की पुलिस से नोकझोंक हुई। पुलिस ने हाथ जोड़कर मामले को शांत कराया। महिलाओं ने कथावाचक को नारी विरोधी बताया। उनके हाथों में तख्तियों थीं, जिन पर 'अनिरुद्धाचार्य माफी मांगो' जैसे स्लोगन लिखे थे। महिलाओं ने कहा- कथावाचक को अरेस्ट करना चाहिए। महिलाओं ने करीब एक किमी तक जुलूस निकाला। दरअसल, कथावाचक अनिरुद्धाचार्य का एक महीने पहले एक वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आया था। इसमें उन्होंने लिव-इन को लेकर बयान दिया था। अनिरुद्धाचार्य ने कहा था- लड़कियां 4-5 जगह मुंह मारकर आती हैं। हालांकि, यह वीडियो दो साल पुराना है। शंकर सेना महिला विंग की अध्यक्ष प्रियंका द्विवेदी के नेतृत्व में करौली आश्रम से 200 महिलाओं ने कथावाचक का पुतला लेकर जुलूस निकाला। कथावाचक के खिलाफ नारेबाजी की। महिलाएं कलेक्ट्रेट में ज्ञापन देने जा रही थीं। जुलूस दीनदयाल संकुल गेट पर पहुंचा था, जहां पुलिस ने उन्हें रोक लिया। इस दौरान महिलाओं ने कथा वाचक के पुतले पर चप्पलें बरसाईं। पुलिस ने उनसे पुतला छीना तो महिलाएं गुस्सा हो गईं। महिलाओं ने कहा, कथावाचक अनिरुद्धाचार्य महिलाओं और बच्चियों के वस्त्रों, उनके निजी जीवन को लेकर टिप्पणी करते हैं। उनके द्वारा निरंतर अशोभनीय न घृणित वक्तव्य दिए जा रहे है, इस प्रकार की टिप्पणियों से पूरी नारी समाज आहत, असहज और अपमानित महसूस कर रहा है।

घरवालों को छोड़ो, मैं तुमको रानी बनाकर रखूंगा,रेप पीड़िता बोली- सबके सामने राखी बंधवाया, कानपुर में 20 लड़कियों के न्यूड वीडियो बनाए

कानपूर। पीड़िता ने बताया किसी काम से निचे गयी थी (केशव उत्तम) देखते ही मुझे गाना गाया 'मंगवा दो मुझको लाल परी' मैंने उसे इग्नोर किया और मैं ऊपर चढ़कर चली गई। इसके बाद दूसरे दिन मैं ऊपर थी तो इसने मुझे बालकनी से इशारे किए, आंख मटकाई तो मेरे से धोखे से हंसी निकल पड़ी। इसके बाद फिर ये मेरे पीछे पड़ गया।' ये कहना है, नौबस्ता निवासी 14 साल की रेप पीड़िता का। कैंटीन में काम करने वाला आरोपी केशव उत्तम हर किसी लड़की को अपने जाल में फंसाता था, फिर ब्रेन वॉश करता था और उनकी अश्लील वीडियो बनाकर धमकाने काम शुरू कर देता था। नौबस्ता निवासी एक युवक ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि मेरे मोहल्ले में एक मकान में किराए के मकान में प्राइवेट अस्पताल चलता है। हॉस्पिटल में फतेहपुर जहानाबाद निवासी केशव उत्तम कैंटीन चलाता है। मेरी 14 साल की बेटी कक्षा 8 में पढ़ती है। एक दिन आरोपी केशव ने उसे बहाने से अस्पताल बुला लिया। यहां उसने बेटी को बंधक बना लिया। उसके साथ रेप किया। उसने इसका वीडियो बना लिया।

इसके बाद से वह लगातार मेरी बेटी को परेशान करने लगा। वीडियो वायरल करने की धमकी देकर उसने कई बार बेटी के साथ रेप किया। एक दिन बेटी घर में गुमसुम बैठी थी। मैंने उससे इसकी वजह पूछी। उसने बताया कि केशव मेरे साथ छेड़छाड़ करता है। इसके बाद मैंने केशव को चेतावनी दी। लेकिन वह नहीं सुधरा। एक दिन वह मेरी बेटी को खींचकर अपने साथ ले जा रहा था। उसका वीडियो वायरल करने की धमकी देकर संबंध बनाने का दबाव बना रहा था। जानकारी मिलते ही मैं परिवार के साथ पहुंच गया। बेटी को छुड़ाने के साथ ही केशव को पीटा। तभी उसका मोबाइल वहां गिर गया। इस दौरान केशव भाग निकला। उसके फोन का पासवर्ड मेरी बेटी को पता था। उसने लॉक खोला। केशव के मोबाइल फोन की गैलरी में मेरी बेटी का न्यूड वीडियो था। इसके अलावा कई लड़कियों के भी न्यूड फोटो और वीडियो भी मोबाइल में थे।पीड़िता ने बताया- एक दिन उसने मुझे खुद से नंबर दिया। इसके बाद फोन पर बातचीत शुरू हुई। फोन पर बात शुरू हुई तो उसने कहा कि हम तुम्हें कभी नहीं छोडेंगे। आज तक हमने कभी किसी लड़की को नहीं छोड़ा, लड़कियों ने ही हमें छोड़ा हैं। पीड़िता ने कहा- आरोपी केशव उत्तम कहता था कि मम्मी-पापा को कुछ मत बताना। हमेशा वो फोन पर मम्मी-पापा के प्रति भड़काता था। कहता कि घर वालों को छोड़ो, मैं तुमको रानी बनाकर रखूंगा। वो कहता था कि तुम मुझे रक्षाबंधन में सबके सामने राखी बांध देना, तो फिर किसी को हम लोगों पर कोई शक नहीं होगा। इसका मैंने विरोध भी किया कि ये क्या बोल रहे हो तुम। मैं अगर प्यार करती हूं तो मैं ये सब नहीं करूंगी। तो बोलता था कि ये करने से मम्मी-पापा को कभी भनक नहीं लगेगी। एक बार राखी भी बंधवाई भी थी। पीड़िता बोली कि वो हमेशा कहता था कि तुम अगर बालिग होती तो मैं तुमसे शादी कर लेता, अगर 20 साल की होती तो मैं ले चलता, पर तुम बालिग नहीं हो। तुम्हारे मम्मी-पापा एक्सेप्ट नहीं करेंगे, लेकिन मेरे मम्मी-पापा तुमको एक्सेप्ट कर लेंगे। पीड़िता ने बताया- मुझे नहीं पता था कि केशव कैसा है, लेकिन जब मेरे पापा ने मुझे उसके मोबाइल की कुछ फोटो दिखाई तब मुझे उसके बारे में पता चला। फिर वो मुझे मारने की धमकी देने लगा। फोन करता था और बस धमकी देता था, लेकिन मैंने डर की वजह से घर वालों को ये बात नहीं बताई। पीड़िता ने ये भी बताया कि एक दिन ये छत पर आया और फोटो खींचने लगा। इस पर मैंने इसका विरोध किया, जब-जब फोटो खींचने का विरोध किया तो बस ब्रेकअप करने, छोड़ने की धमकी देने लगता था, कि अगर फोटो नहीं क्लिक कराओगी तो मैं तुमको छोड़ दूंगा। इस तरह से ये माइंड वॉश करता था, बहलता था, भरोसे में लेता था। बोलता था कि अगर तुमने मुझसे शादी कर ली तो हमारे घर में रानियों की तरह रहोगी, तुमको काम नहीं करना पड़ेगा। खूब अच्छे से रहोगी, खुशी-खुशी रहोगी। डीसीपी साउथ दीपेंद्र नाथ चौधरी ने बताया- छात्रा के पिता की तहरीर के आधार पर आरोपी केशव उत्तम के खिलाफ छेड़खानी, मारपीट, बंधक बनाने और पाक्सो एक्ट की धारा में रिपोर्ट दर्ज की गई है। जल्द ही उसे अरेस्ट करके जेल भेजा जाएगा। उसकी तलाश में दो टीमें लगी हैं।

इलेक्ट्रॉनिक्स एवं कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग विभाग को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद से 14.08 लाख का अनुसंधान अनुदान प्राप्त

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। जी.एल. बजाज इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड

मैनेजमेंट ने अनुसंधान एवं नवाचार के क्षेत्र में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। इलेक्ट्रॉनिक्स एवं कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग (ईसीई) विभाग को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, उत्तर प्रदेश द्वारा रु14.08 लाख का अनुसंधान अनुदान प्रदान किया गया है। यह परियोजना तीन वर्षों की अवधि के लिए स्वीकृत की गई है और इसका नेतृत्व ईसीई विभाग के डॉ. पुर्नेदु शेखर पांडे द्वारा प्रमुख अन्वेषक (Principal Investigator) के रूप में किया जाएगा। इस अवसर पर संस्थान के वाइस चेयरमैन श्री पंकज अग्रवाल ने कहा- 'जी.एल. बजाज में हम दृढ़ता से मानते हैं कि नवाचार और प्रभावशाली अनुसंधान को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, जो वास्तविक जीवन की चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करता हो। यह अनुदान हमारे अनुसंधान उत्कृष्टता के संकल्प को और सशक्त करता है तथा हमारे संकाय की अपार क्षमता को प्रदर्शित करता है, जो स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी में परिवर्तनकारी योगदान कर सकती है। हमें डॉ. पुर्नेदु शेखर पांडे और ईसीई विभाग पर गर्व है, जिन्होंने जी.एल. बजाज को यह गौरव दिलाया है।' यह उपलब्धि जी.एल. बजाज की उस दृष्टि को और मजबूत करती है, जिसके तहत संस्थान नवाचार, इन्क्यूबेशन और उद्यमिता को प्रोत्साहित करते हुए समाज एवं वैश्विक स्तर पर विश्व-स्तरीय शिक्षा और अनुसंधान के माध्यम से सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए निरंतर कार्यरत है।

भंगेल एलिवेटेड रोड के नीचे के काम को अबतक नहीं मिली नॉएडा की स्वीकृति- आरटीआई

समाजसेवी डॉ रंजन तोमर को दिया जवाब , काम शुरू होने की खबर झूठी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। शहर को जल्द ही भंगेल एलिवेटेड रोड के रूप में एक नया रोड मिल जायेगा लेकिन उसके नीचे सालों से परेशान चल रहे ग्रामीण मार्कीटों जैसे बरोला , भंगेल , सलारपुर आदि को अभी और इंतज़ार करना पड़ेगा , यह काम 2026 तक खिंचना तय है। नोएडा प्राधिकरण के दावों के उलट और इस तरह की ख़बरों के विपरीत जो कह रही थी की नीचे का कार्य शुरू हो गया है , एक आरटी आई में कुछ चौंकाने वाले तथ्य सामने आये हैं ?। शहर के समाज सेवी एवं नोएडा विलेज रेसिडेंट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉक्टर रंजन तोमर ने उत्तर प्रदेश राज्य सेतु निगम में एक आरटीआई लगाकर कुछ सवाल पूछे थे। प्राधिकरण और निगम के बीच करार में नीचे का रोड शामिल , लेकिन अबतक नहीं स्वीकृति। नॉएडा प्राधिकरण और उत्तर प्रदेश राज्य सेतु निगम के बीच करार में यह शर्त शामिल है के एलिवेटेड रोड के नीचे का कार्य सेतु निगम करके देगा। लेकिन बकौल निगम 'पुल के नीचे के कार्यों में मात्राओं का विचलन / अतिरिक्त कार्य मद परिलक्षित हो रहे हैं। जो नॉएडा प्राधिकरण में स्वीकृत की प्रक्रिया में हैं , शीघ्र स्वीकृत होना संभावित है 'अर्थात अभी तक स्वीकृत नहीं हुए हैं। मार्च 2026 तक पूर्ण होने की उम्मीद जताई निगम ने अपने जवाब में कहा है की 'पुल के नीचे का सम्पूर्ण कार्य जैसे की नाला , सेंट्रल वर्ज एवं रोड का कार्य स्वीकृत होने के उपरांत माह मार्च 2026 तक पूर्ण किया जाना प्रस्तावित है। सालों से परिस्थिति ठीक होने की बात जोह रहे ग्रामीण मार्कीटों को इस खबर से झटका ज़रूर लगेगा , और अब नॉएडा प्राधिकरण को चाहिए की वह जल्द से जल्द इस स्वीकृति को देकर काम शुरू करवाने में लग जाए , नोवरा द्वारा लगातार इस मुद्दे पर ज़ोर दिया गया है , ऐसी उम्मीद अब भी काम ही नज़र आ रही है की दी गई डेडलाइन तक भी नीचे का काम पूरा होगा।

भारतीय क्रिकेटर भुवनेश्वर कुमार ने फोर्टिस ग्रेटर नोएडा में अत्याधुनिक पीआईसीयू का किया उद्घाटन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। फोर्टिस ग्रेटर नोएडा ने आज अपने हेल्थकेयर इंफ्रास्ट्रक्चर को और मज़बूती देते हुए

अत्याधुनिक पीडियाट्रिक इंटेंसिव केयर यूनिट (पीआईसीयू) की शुरुआत की। इस सुविधा का उद्घाटन भारतीय क्रिकेटर और जाने-माने क्रिकेट आइकन भुवनेश्वर कुमार ने किया।फोर्टिस ग्रेटर नोएडा का नया पीआईसीयू क्षेत्र के सबसे बड़े पीआईसीयू में से एक है, जिसमें 10 बेड और विशेष आइसोलेशन रूम शामिल हैं।

यह यूनिट 1 माह से 18 वर्ष तक के बच्चों के इलाज के लिए बनाई गई है। इसमें अत्याधुनिक तकनीक जैसे पीडियाट्रिक वेंटिलेटर, नॉन-इनवेसिव वेंटिलेटर, कार्डियक और न्यूरोलॉजिकल मॉनिटरिंग, हीमोडायलिसिस, आर्टेरियल और सेंट्रल लाइन सपोर्ट, हाई-फ्रीक्वेंसी वेंटिलेटर और ईसीएमओ सपोर्ट उपलब्ध है। उद्घाटन के मौक़े पर क्रिकेटर भुवनेश्वर कुमार ने कहा, 'मैं फोर्टिस ग्रेटर नोएडा को इस अत्याधुनिक पीआईसीयू की शुरुआत के लिए दिल से बधाई देता हूं। यह एक ज़रूरी पहल है। पीआईसीयू बच्चों की गंभीर बीमारियों के इलाज में अहम भूमिका निभाता है, दीर्घकालिक स्वास्थ्य समस्याओं को रोकने में मदद करता है और मृत्यु दर को कम करने में सहायक साबित होता है।

'फोर्टिस ग्रेटर नोएडा के कंसल्टेंट पीडियाट्रिक्स, डॉ. कुशाग्र गुप्ता ने कहा, 'पीआईसीयू विशेष रूप से बच्चों के लिए बनाया गया आईसीयू है। बच्चों की बीमारियां बड़ों से अलग होती हैं, इसलिए उन्हें वयस्क आईसीयू में रखना उनके लिए सुरक्षित नहीं होता। संक्रमण का खतरा भी अधिक रहता है।

शहरी इलाकों और यहां आबादी बढ़ने के साथ-साथ जलवायु परिवर्तन की वजह से बच्चों से जुड़ी बीमारियों में तेज़ी आई है। डेंगू, मलेरिया, हेपेटाइटिस-ए, सांस का संक्रमण और एलर्जी-अस्थमा जैसी बीमारियां लगातार बढ़ रही हैं। ऐसे समय में पीआईसीयू का होना बेहद ज़रूरी है, ताकि समय पर और टॉप क्लास इलाज मिल सके।' फोर्टिस हेल्थकेयर के ज़ोनल डायरेक्टर मोहित सिंह ने कहा, 'यह नई सुविधा हमारे समर्पण का प्रमाण है।

हमारा ध्यान ग्रेटर नोएडा के बच्चों के लिए सबसे ऊंचे स्तर की स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने पर है। हमारे लिए केवल जीवन बचाना के लिए संवेदनशीलता के साथ और सटीक ढंग से इलाज करना भी बेहद अहम है।' फोर्टिस ग्रेटर नोएडा के फैसिलिटी डायरेक्टर सिद्धार्थ निगम ने कहा, 'पीआईसीयू में चौबीसों घंटे उपलब्ध चिकित्सकों की टीम और बेहतर चिकित्सा सुविधाएं मौजूद हैं। मजबूत क्रिटिकल केयर सपोर्ट की बदौलत यहां जटिल बीमारियों का इलाज संभव हो पाएगा, जिससे मरीज़ों के लिए बेहतर नतीजे मुमकिन होंगे।'

वाइबाक़ास्टिक इंप्लाईज यूनियन 'सीटू' के कार्यकर्ताओं की बैठक हुई संपन्न

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। वाइबा कॉस्टिक नोएडा इंडिया प्राइवेट लिमिटेड बी- 190,

फेस -2, नोएडा में कार्यरत कर्मचारियों की यूनियन वाइबाक़ास्टिक इम्पलाईज यूनियन संबद्ध सीटू के कार्यकर्ताओं की बैठक सीटू कार्यालय पर यूनियन के अध्यक्ष विकास कुमार की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में सीटू जिला कमेटी गौतम बुध नगर के 21 सितंबर 2025 को होने वाले जिला सम्मेलन और 10 व 11 अक्टूबर 2025 को सीटू दिल्ली एनसीआर राज्य सम्मेलन की तैयारी पर विचार विमर्श कर सम्मेलन को सफल बनाने का निर्णय लिया गया। बैठक को सीटू जिलाध्यक्ष गंगेश्वर दत्त शर्मा, महासचिव रामस्वारथ, यूनियन के पदाधिकारी सुनील पंडित, हुकम सिंह आदि ने संबोधित किया।

एवियर कॉलेज में कर्तव्य क्लब ने आयोजित किया ग्रीन कैंपस इनिशिएटिव

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। सेक्टर 62 स्थित एवियर कॉलेज ऑफ

हायर एजुकेशन के मानविकी और विधि विभाग के कर्तव्य क्लब ने आज ग्रीन कैंपस इनिशिएटिव का आयोजन किया। इस अवसर पर प्रबंधन, संकाय सदस्य और छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर पर्यावरण संरक्षण और सतत जीवनशैली को बढ़ावा देने का संकल्प लिया। इस अवसर पर सभी ने सामूहिक रूप से यह संकल्प लिया कि सभी, बिजली की बचत हेतु ऊर्जा-कुशल उपाय अपनाएंगे, पानी का विवेकपूर्ण और सीमित उपयोग करेंगे और वृक्षारोपण अभियानों में सक्रिय भागीदारी करेंगे। कर्तव्य क्लब लंबे समय से अपने ध्येय सेव मैनकाइंड सेव ह्यूमैनिटी को आगे बढ़ाते हुए समाज और पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाने में अग्रणी रहा है। इस पहल ने छात्रों और शिक्षकों को हरित जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत किया। कॉलेज की प्रबंध निदेशक कनिका सिंह ने इस प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि युवा शक्ति यदि प्रकृति संरक्षण में अग्रसर होती है तो निश्चित रूप से भविष्य सुरक्षित और संतुलित होगा। ग्रीन कैंपस इनिशिएटिव के माध्यम से एवियर ने एक बार फिर यह संदेश दिया कि संस्थान न केवल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए प्रतिबद्ध है, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने में भी सदैव अग्रणी रहेगा।

रिटायर्ड टीचर ने नाबालिग से छेड़छाड़ की,भीड़ ने पीटा,पंचायत में साले ने भी मारे थप्पड़,एफआईआर के बाद फरार

सहारनपुर। 70 साल के रिटायर्ड टीचर ने नाबालिग से छेड़छाड़ की है। उसे गोद में उठाकर आटा चक्की के

अंदर ले गया और अश्लील हरकत की। बुजुर्ग की हरकत से गुस्साए लोगों ने उसकी जमकर पिटाई कर दी। रात में मोहल्ले के लोगों ने पंचायत भी की। हरकतों को सुनकर उसके साले ने भरी पंचायत में कई थप्पड़ मारे। लोगों ने इस घटना का वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। आरोपी रिटायर्ड टीचर ने नाबालिग को झाड़ू लगाने के बहाने बुलाया था। मां की तहरीर पर पुलिस ने केस दर्ज किया है। आरोपी फरार है। घटना थावना फतेहपुर थाने की रविवार शाम की है। कस्बा छुटमलपुर की महिला ने बताया- मेरी 11 वर्षीय बेटी रविवार शाम करीब सात बजे आटा चक्की पर गेंहू पिसवाने गई थी। चक्की मालिक अजमेर सिंह ने मेरी बेटी को झाड़ू लगाने के बहाने बुला लिया। उसने मेरी बेटी के साथ छेड़छाड़ की। सामने आए छेड़छाड़ के वीडियो में दिख रहा कि नाबालिग पंखा हटा रही है। पीछे से आकर आरोपी अजमेर सिंह छेड़छाड़ करने लगा। वह उसे गोद में उठाकर अंदर लेकर जाता है। लड़की प्रतिरोध करती है।आसपास के लोगों ने बताया कि प्रतिरोध करते हुए वह चिल्लाने लगी। मोहल्ले का एक युवक वहां पहुंचा। उसने आरोपी अजमेर सिंह को फटकारा। इसी बीच लोग भी जुट गए। अजमेर सिंह, नाबालिग को छोड़कर बाहर आ गया। नाबालिग बचने के लिए चक्की के नीचे छिप गई। लोगों ने आरोपी की जमकर पिटाई कर दी। भीड़ का गुस्सा देख, आरोपी मौका पाकर वहां से भाग निकला। नाबालिग की मां, बेटी को लेकर थाने पहुंची। आरोपी के खिलाफ तहरीर दी। उधर, इस घटना के बाद मोहल्ले के लोग एक परचून की दूकान पर जुटे। यह दूकान, अजमेर सिंह के साले लल्ला की है। यहां पंचायत हुई। आरोपी रिटायर्ड टीचर भी वहां मौजूद था। लोगों के बीच में ही उसके साले उठे और गुस्से में तमतमाते हुए उसे थप्पड़ मारने लगे। थप्पड़ मारने का भी वीडियो सामने आया है। सीओ मनोज यादव ने बताया कि लड़की से छेड़छाड़ का वीडियो वायरल हो रहा है। वीडियो करीब 2 मिनट 25 सेकेंड का है। मामले में पीड़िता की मां की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। आरोपी को अरेस्ट करने के लिए एक टीम लगी है। जल्द ही उसे अरेस्ट कर लिया जाएगा।

धीरेंद्र शास्त्री हजरत-ए-आदम की औलाद- बोले मौलाना शहाबुद्दीनःकन्वर्टेड मुसलमान वाले बयान पर सांसद बर्क ने कहा- गुमराह मत करिए

मुरादाबाद। पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री के कन्वर्टेड मुसलमान वाले बयान पर मुस्लिम समुदाय में गुस्सा है। ऑल इंडिया मुस्लिम जमात के राष्ट्रीय अध्यक्ष मौलाना शहाबुद्दीन रजवी बरेलवी ने सोमवार को कहा- दुनिया में सबसे पहले हजरत आदम आए और तमाम इंसानियत उनकी ही औलाद हैं। धीरेंद्र शास्त्री भी आदम की ही औलाद हैं। असली-नकली का फर्क करने वाला खुद नकली होता है। उधर, संभल से सपा सांसद जिया उर्रहमान बर्क ने कहा- देशभक्ति गीत गाने से साबित नहीं होती, उसे साबित करने के लिए कुर्बानी देनी पड़ती है। देश की आजादी में इनके लोगों का कोई योगदान होने का इतिहास नहीं है। असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी एआईएमआईएम के यूपी अध्यक्ष शौकत अली ने कहा, धीरेंद्र शास्त्री कहते हैं कि हम हिन्दू राष्ट्र बनाएंगे। अगर हम मुस्लिम राष्ट्र कहेंगे, तो मुझ पर मुकदमा हो जाएगा। हमारे देश का कानून हमें इस बात की इजाजत देता है। कोई हमें नहीं छेड़े और अगर कोई हमें छेड़ेगा तो हम उसे छोड़ेंगे नहीं। संवैधानिक तरीके से हम उसका जवाब देंगे।धीरेंद्र शास्त्री के 2 बयान, जिस पर विवाद- असली मुसलमान विदेशों में धीरेंद्र शास्त्री ने मीडिया से बात करते हुए कहा- असली मुस्लिम तो विदेशों में हैं, यहां पर सब कन्वर्टेड मुसलमान हैं। अगर वो अपने पूर्वज खंगाले तो सब सनातनी मिलेंगे। 3000 साल पहले इस पृथ्वी पर यदि कोई रहता था, तो केवल सनातनी रहते थे। जिसका न आदि है और न अंत है। तीन हजार वर्ष पूर्व कोई रहता था, तो सिर्फ सनातनी रहते थे। इसलिए जितने भी लोग यहां रह रहे हैं, वह अपने पूर्वज खंगालें, तो उनके सभी पूर्वज सनातनी मिलेंगे। मंदिरों, मस्जिदों और गिरजाघरों में राष्ट्रगान होना चाहिए वहीं, चार दिन पहले दिल्ली प्रवास के दौरान छतरपुर में धीरेंद्र शास्त्री ने कहा- मंदिरों, मस्जिदों और गिरजाघरों में राष्ट्रगान होना चाहिए। सप्ताह में कम से कम एक बार तो सभी धार्मिक स्थलों पर राष्ट्रगान होना जरूरी है। अगर कोई भी धर्मस्थल राष्ट्रगान से मना करता है तो ये पता चल जाएगा कि कौन राष्ट्र दोही है और कौन राष्ट्रप्रेमी।

बाराबंकी एबीवीपी कांड के बाद योगी का फैसलाःयूनिवर्सिटी-कॉलेजों की मान्यता जांची जाएगी, बिना मान्यता वाले कोर्स पर होगा सख्त एक्शन

बाराबंकी। यूपी के सभी विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों की मान्यता की जांच होगी। सोमवार को सीएम योगी ने लखनऊ में अफसरों के साथ मीटिंग में यह फैसला लिया। सीएम ने कहा- विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों की जांच के लिए हर जिले में टीम बनाई जाएगी। इसमें सीनियर प्रशासनिक अधिकारी, पुलिस विभाग के अधिकारी और शिक्षा विभाग के अधिकारी शामिल होंगे। सीएम ने कहा- कमिश्नर अपने संबंधित जिलों में जांच की निगरानी करेंगे। सभी कोर्स की सूची और स्वीकृति पत्र की जांच की जाएगी। बिना मान्यता वाले कोर्स पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। जांच रिपोर्ट अफसर 15 दिन के अंदर सौंपेंगे। दरअसल, 1 सितंबर को बाराबंकी के श्री रामस्वरूप यूनिवर्सिटी में लॉ की मान्यता को लेकर बवाल हुआ था। पुलिस ने प्रदर्शन कर रहे एबीवीपी कार्यकर्ताओं और छात्रों को दौड़ा-दौड़ाकर पिटा था। माना जा रहा कि इसके बाद सरकार ने यह कदम उठाया है। सीएम ने कहा- विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में वही कोर्स कराए जाएं, जिसकी मान्यता हो। प्रत्येक शिक्षण संस्थान से शपथ पत्र लिया जाए कि बिना मान्यता के उनके यहां कोई कोर्स संचालित नहीं है। उन्होंने कहा कि बिना मान्यता के संचालित पाठ्यक्रम पर विश्वविद्यालय और महाविद्यालय प्रशासन के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। शिक्षण संस्थान को बच्चों की फीस माफ करनी होगी। सीएम ने कहा कि

आगरा में कैबिनेट मंत्री की मीटिंग में अफसर नहीं पहुंचे,बेबी रानी बोलीं- सीएम से शिकायत करूंगी,अखिलेश ने पूछा- किसके इशारे पर हुआ अपमान?

आगरा। आगरा में सोमवार को कैबिनेट मंत्री बेबी रानी मौर्या की मीटिंग में अजीब स्थिति पैदा हो गई। मंत्री करीब विकास भवन में एक घंटे तक इंतजार करती रहीं, लेकिन कोई भी अधिकारी मीटिंग में नहीं पहुंचा। वह ठीक 11 बजे मीटिंग के लिए विकास भवन पहुंच गई थीं। आखिरकार गुस्से में मंत्री बेबी रानी मीटिंग छोड़कर बाहर निकल आईं। उन्होंने कहा- 12 बजे तक कोई भी अधिकारी नहीं आया। आगरा का कोई भी अधिकारी किसानों की बात सुनना नहीं चाहता है। मैं इसकी लिखित शिकायत मुख्यमंत्री से करूंगी। वहीं, बैठक में अधिकारियों के नहीं आने पर किसानों ने नाराजगी जताई। बैठक में पहुंचे किसानों ने भी नाराजगी जताई और जमकर हंगामा किया। किसानों ने कहा, जैसे हम पहले आत्मदाह करते थे, वैसे आंदोलन फिर शुरू करेंगे। अखिलेश ने एक्स पर लिखा- ये आपसी खींचतान की कहानी तो नहीं?सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने मामले पर तंज कसा है। उन्होंने एक्स पर लिखा- अधिकारी किसके इशारे पर मीटिंग में नहीं पहुंचे। ये किसी आपसी खींचतान की कहानी तो नहीं है? दिल्ली-लखनऊ वाया आगरा।

बेबीरानी मौर्य, कैबिनेट मंत्री

एकतरफा प्यार में महिला को जिंदा जलाया,फर्रुखाबाद में 70फीसदी झुलसी, खुद उठी स्कूटी चलाकर अस्पताल पहुंची-मौत

फर्रुखाबाद। फर्रुखाबाद में युवक ने एकतरफा प्यार में शादीशुदा महिला को पेट्रोल डालकर जिंदा जला दिया। महिला की चीख-पुकार सुनकर आसपास के लोग पहुंचे। तब तक आरोपी फरार हो गए। लोगों ने आग बुझाई। करीब 70फीसदी झुलसी महिला खुद उठी और स्कूटी चलाकर अस्पताल पहुंची। हालत गंभीर होने पर उसे हायर सेंटर रेफर कर दिया। वहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। वारदात शहर मुख्यालय से 12 किमी दूर जहानगंज थाना इलाके में शनिवार सुबह 9-10 बजे हुई। महिला के पिता ने दावा किया कि बेटी ने मौत से पहले उसे आरोपी का नाम और उसके साथियों की संख्या बताई। पिता की तहरीर पर पुलिस ने आरोपी दीपक समेत 6 लोगों पर एफआईआर दर्ज की है। इसमें 5 अभी अज्ञात हैं। मामले में मृतक महिला की बहन ने बताया कि दीपक नाम का लड़का मेरी बहन को कई दिनों से परेशान कर रहा था। वो बहन पर दोस्ती करने का दबाव बना रहा था। मेरी बहन उसे इग्नोर कर रही थी। लेकिन वो पीछे पड़ा था। एएसपी संजय कुमार सिंह ने बताया कि आरोपियों की तलाश की जा रही है। महिला का पति दिल्ली में नौकरी करता है। जबकि महिला किराए के घर दो बेटों के साथ रहती थी।

निशा, मृतक

यूपी के युवक ने चुराए लालकिले से सोने के कलश,पुजारी बनकर कलश लेकर भागा,दिल्ली पुलिस ने हापुड़ से पकड़ा

नयी दिल्ली। दिल्ली के लाल किला परिसर से डेढ़ करोड़ रुपए के दो स्वर्ण कलश चुराने वाले 3 आरोपी यूपी के हापुड़ से गिरफ्तार हुए है। रविवार रात 2 बजे दिल्ली पुलिस की टीम ने आरोपी के घर पर दबिश दी और उसे पकड़कर दिल्ली ले गई। आरोपी की पहचान असौड़ा गांव निवासी भूषण वर्मा, बड़ा बाजार निवासी अंकित पाटिल और गौरव वर्मा के रूप में हुई है। दिल्ली पुलिस के मुताबिक, भूषण कलश चुराने का एक्सपर्ट है। सालभर पहले उसने दिल्ली के लाल मंदिर और फिर अशोक विहार के मंदिर से कलश चुराया था। उस पर 5 मुकदमे दर्ज हैं। भूषण जाति से सुनार है और गाड़ी चलाने का काम करता है। उसके घर से एक कलश जैसी वस्तु की रिकवरी हुई है। परिवार में भूषण के अलावा उसकी पत्नी, दो बेटियां और एक बेटा है। पुलिस के मुताबिक, भूषण ने पूछताछ में कई अहम बातें बताई हैं। जल्द ही मामले का खुलासा कर दिया जाएगा। 3

भाई के दोस्त से छोटी बहन ने लगाया दिल, चढ़ी ऐसी सनक की 3 गोलियों से मामला किया खल्लास

पूर्णिया। जिले में एक भाई ने अपनी सगी बहन की गोली मारकर की हत्या कर दी। घटना सोमवार देर शाम की है। भाई और बहन के बीच आपसी विवाद को लेकर यह बड़ी घटना को अंजाम दिया गया है। पुलिस पूरे मामले की जांच पड़ताल में जुटी है। घटना के संबंध में पिता सुधीर केसरी ने बताया कि वह अपने छोटे लड़के के साथ मधुबनी बाजार में अपने दुकान पर थे। दुकान बंद कर और समोसा लेकर घर पहुंचे तो देखा कि उनकी बेटी घायल होकर घर के फर्श पर पड़ी हुई थी। इस दौरान पता चला कि उनके बड़े बेटे विक्रम केसरी अपनी ही बहन छोटी को गोली मारकर फरार हो गया है। किसी तरह आनन-फानन में घायल बेटी को इलाज के लिए जीएमसीएच लाया, जहां ईलाज के दौरान मौत हो गई। पिता ने बताया कि विक्रम से छोटी कुमारी का अक्सर विवाद चलता था। घटना की सूचना के बाद मधुबनी थाना की पुलिस अस्पताल पहुंची और मृतका के पिता से गहन पूछताछ की। इसके बाद शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मृतका चार बहन और दो भाई में सबसे छोटी थी।

उर्वरक किल्लत को लेकर किसानों का विरोध प्रदर्शन,बीडीओ को मुख्यमंत्री के नामित पांच सूत्रीय ज्ञापन सौंपा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जिले में उर्वरक किल्लत को लेकर नाराज किसानों ने समाधान में शासन-प्रशासन का सहयोग अब तक संतोषजनक नहीं रहा। उन्होंने कहा कि किसान टूटे हुए झालों और गेटों की मरम्मत कर टेल तक पानी पहुंचाने की मांग की। इसके अलावा सिंचाई के

भारतीय किसान संघ के बैनर तले सभी विकास खंड कार्यालय परिसरों में मंगलवार को धरना-प्रदर्शन किया और मुख्यमंत्री को संबोधित पांच सूत्रीय ज्ञापन संबंधित खंड विकास अधिकारि प्रतिनिधि को सौंपा। इसी क्रम में रॉबट्र्सगंज ब्लॉक कार्यालय परिसर में भी संघ के पदाधिकारियों और किसानों ने जमकर प्रदर्शन किया और ज्ञापन को सौंपा।जिला अध्यक्ष राम बहादुर सिंह ने कहा कि जिस देश की अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान सर्वाधिक है, वहीं किसानों की समस्याओं के अपनी मेहनत से अन्नदाता कहलाता है, लेकिन जब उसे खाद, बीज और पानी की दिक्कत झेलनी पड़ती है तो वह खुद को ठगा महसूस करता है। जिलाध्यक्ष राम बहादुर सिंह ने आरोप लगाया कि खाद की किल्लत से खरीफ फसलों की पैदावार पर बुरा असर पड़ा है। यदि यही स्थिति रही तो आगामी रबी सीजन भी प्रभावित होगा। सरकार को चाहिए कि पहले से ही किसानों की जरूरत के अनुसार डीएपी और यूरिया की उपलब्धता सुनिश्चित करे, साथ ही गुणवत्तायुक्त बीज उपलब्ध कराए। उन्होंने नहरों की सफाई, लिए निर्बाध रूप से 10 घंटे बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने की बात कही। किसानों ने बाढ़ से हुई तबाही का मुआवजा दिलाने और मिर्च व टमाटर की खेती को हुए नुकसान का आकलन कर राहत पैकेज जारी करने की मांग भी की। प्रदर्शन में सदानंद मौर्य, दयाराम मौर्य, महेंद्र सिंह, प्रदीप सिंह, अमित सिंह, नागेश्वर तिवारी, गोपाल सिंह, बिंदेश्वरी सिंह, सुमित, रमाशंकर पांडेय, दिनेश, श्रीराम, मदन, चंद्रशेखर, रामरतन, छत्रसाल सिंह, चंद्रप्रकाश सिंह, ज्योति जंग सिंह समेत बड़ी संख्या में किसान मौजूद रहे।

पीएम मोदी का जीवन सेवा समर्पण से भरा जीवन हैःअनिल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के का आयोजन किया जा रहा है। जिसके तहत 17 सितंबर जिला की धुरी को बदली है। आज उसमे गांव गरीब किसान नौजवान और

जन्मदिन 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक चलने वाले सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम को लेकर भाजपा की जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन भाजपा कार्यालय राबट्र्सगंज पर सम्पन्न हुआ सेवा पखवाड़ा के दौरान आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की रूपरेखा पर चर्चा की गई। जिला कार्यशाला का शुभारंम्भ पं0 दीनदयाल उपाध्याय व डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्जवलित कर किया। कार्यशाला में बतौर मुख्यअतिथि जिला प्रभारी अनिल सिंह मौजूद रहे। कार्यशाला की अध्यक्षता भाजपा जिला उपाध्यक्ष अशोक मौर्या व संचालन जिला सह संयोजक/जिला मंत्री संतोष शुक्ला ने किया। 17 सितंबर मोदी के जन्मदिन से 02 अक्टूबर गांधी जयन्ती तक चलेगा सेवा पखवाड़ा होंगे विभिन्न कार्यक्रम - अनिल सिंह कार्यशाला को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि जिला प्रभारी अनिल सिंह ने कहा कि पीएम मोदी का जीवन राष्ट्र व समाज के प्रति समर्पित है इसलिए उनके जन्मदिन पर संगठन के केंद्रीय व प्रदेश नेतृत्व के निर्देश पर जिला से लेकर बूथ स्तर पर सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम स्तर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 75 वें जन्मदिन पर 75 यूनिट रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। उसी दिन बूथ स्तर पर स्वच्छता तथा स्वच्छता ही सेवा का संकल्प दिलाने का कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा तथा पीएम मोदी का लाइव संबोधन भी सुना जाएगा। 17 से 24 सितंबर तक स्वास्थ्य शिविर लगाया जाएगा। 18 सितंबर से 2 अक्टूबर तक मंडल स्तर पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा एवं 18 सितंबर को प्रधानमंत्री के जीवन पर आधारित प्रदर्शनी लगाई जाएगी। आगे कहा कि पीएम मोदी का जीवन सेवा समर्पण से भरा जीवन है। सेवा पखवाड़ा एक माध्यम है जनता के बीच जाने का। और कहा कि पीएम मोदी का जीवन सेवा समर्पण से भरा जीवन है, सेवा पखवाड़ा एक माध्यम है जनता के बीच जाने का। नरेन्द्र मोदी युवा रुप में भाजपा के संगठन महामंत्री के रुप मे गुजरात के लोकप्रिय मुख्यमंत्री तथा आज देश के प्रधानमंत्री के रुप मे किये जा रहे सेवा कार्य सभी वर्गो के लिए अत्यंत अनुकरणीय है, मोदी जी ने प्रधानमंत्री के रुप मे जाति और मजहब पर आधारित राजनीति महिलाएं है हम सबके लिए यह गौरव की बात है कि देश के प्रधानमंत्री के रुप मे नरेन्द्र भाई मोदी का हमे नेतृत्व मिला है। कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए जिला उपाध्यक्ष अशोक मौर्या ने आये हुए अतिथियों व कार्यकर्ताओं का आभार प्रकट कर धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यशाला मे मुख्यरुप से अनुसूचित आयोग के उपाध्यक्ष जीत सिंह खरवार, घोरावल विधायक अनिल मौर्या, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य तिरथराज, अशोक मिश्रा, रामलखन सिंह, नागेश्वर देव पाण्डेय, चांदप्रकाश जैन, पूर्व जिलाध्यक्ष अजीत चौबे, श्रवण गोंड, अजीत रावत, कार्यक्रम सह संयोजक प्रसन्न पटेल, रमेश पटेल, उदयनाथ मौर्या, रामसुन्दर निषाद, कृष्णमुरारी गुप्ता, संतोश शुक्ला, अनूप तिवारी, बृजेश श्रीवास्तव, पुष्पा सिंह, गुडिया तिवारी, राजन चौधरी, कमलेश चौबे, विनय श्रीवास्तव, दिलिप चौबे, आशुतोस चौबे, महेश्वर चन्द्रवंशी, सुरेश शुक्ला, परशुराम केशरी, प्रिया सोनकर, अनिल सिंह सहित कार्यकर्ता व पदाधिकारी, मण्डल अध्यक्ष, मण्डल प्रभारी आदि उपस्थित रहे।

युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने में सहायक साबित हो रहा कौशल विकास कार्यक्रम,'हर हाथ को हुनर, हर युवा को रोजगार'पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का फोकस

सोनभद्र/लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा को प्राथमिकता दे रही है। प्रदेश की सबसे बड़ी ताकत इसकी युवा आबादी है और योगी सरकार का लक्ष्य है कि प्रत्येक युवा को उसकी रुचि और योग्यता के अनुसार प्रशिक्षण देकर रोजगार से जोड़ा जाए। 'हर हाथ को हुनर और हर युवा को रोजगार' इसी दृष्टिकोण के तहत प्रदेश में कई कौशल विकास योजनाएं संचालित हो रही हैं। उल्लेखनीय है कि भारत सरकार ने 2015 में राष्ट्रीय कौशल विकास और उद्यमिता नीति लागू की थी। योगी सरकार ने इस नीति को जमीनी स्तर तक ले जाकर प्रदेश के युवाओं को अधिक से अधिक लाभ दिलाने का कार्य किया है। प्रदेश के सभी जिलों में आईटीआई, पॉलिटेक्निक, जन शिक्षण संस्थान और दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना जैसे कार्यक्रम युवाओं को प्रशिक्षण देकर रोजगार की राह पर अग्रसर कर रहे हैं। ई 2020 और योगी सरकार की पहल-राष्ट्रीय शिक्षा नीति (ई 2020) के तहत कक्षा 6 से ही व्यावसायिक शिक्षा को शामिल करने की पहल को उत्तर प्रदेश में तेजी से लागू किया जा रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने स्पष्ट कहा है कि छात्रों को केवल डिग्री नहीं बल्कि रोजगार योग्य शिक्षा और हुनर मिलना चाहिए। इसी सोच के तहत स्कूलों और कॉलेजों में व्यावसायिक प्रशिक्षण को बढ़ावा दिया जा रहा है। उत्तर प्रदेश में बढ़ रहे अवसर-योगी सरकार ने युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई कदम उठाए हैं.आईटीआई व पॉलिटेक्निकः इंजीनियरिंग और कंप्यूटर विज्ञान विषयों में व्यावहारिक प्रशिक्षण, ??डीडीयू-जीकेवाईः ग्रामीण युवाओं को 250 से अधिक क्षेत्रों में प्रशिक्षण और रोजगार, ??एनआरएलएमः गरीबी रेखा से नीचे के परिवारों और महिलाओं के लिए प्रशिक्षण, ??एनएपीएसः एमएसएमई इकाइयों में युवाओं को शिक्षुता और वजीफे की सुविधा,??जन शिक्षण संस्थानः अशिक्षित और कम शिक्षित वर्गों के लिए प्रशिक्षण रोजगार और स्वरोजगार दोनों पर फोकस-मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का मानना है कि कौशल विकास न केवल नौकरी के अवसर बढ़ाता है बल्कि स्वरोजगार की राह भी खोलता है।

मुख्यमंत्री पोर्टल पर की गई शिकायतों में झूठी फर्जी आख्या लगा रहा शिक्षा विभाग,नगवां में चल रहे अवैध विद्यालयों का संचालन किसके सह पर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) वैनी/सोनभद्र। विकास खंड नगवां में आधा दर्जन से अधिक अवैध विद्यालयों का संचालन धड़ल्ले से निद्रा में लीन है। ऐसे अवैध विद्यालयों के संचालन पर तेनूआ गांव निवासी बृजेश कुमार ने मुख्यमंत्री पोर्टल पर इसकी रोष व्याप्त है जिसकी शिकायत 16 सितंबर को ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन के बैनर तले मुख्यमंत्री को ज्ञापित प्रपत्र

बदस्तूर जारी है, समाचार पत्रों में प्रकाशन के बाद खंड शिक्षा अधिकारी नगवा ने संज्ञान में लेते हुए लगातार दो नोटिस जारी किया गया और कार्यवाही के लिए बीएसए सोनभद्र को प्रेषित किया लेकिन अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हुई। इसके बाद हरकत में आए अवैध स्कूल संचालकों ने अधिकारियों के ऊपर ही राजनैतिक दबाव बनाना शुरू कर दिया और दिलचस्प जुगाड लगा लिया खलियारी में स्थित स्वामी विवेकानंद स्कूल जिसकी मान्यता कक्षा पांच तक है उसने कैमूर मंजरी हाईस्कूल का बोर्ड लगाकर इंटर तक की कक्षाएं चलाने लगे कैमूर मंजरी के प्रबंधक ने जर्जर भवन दिखाकर अपनी विद्यालय स्वामी विवेकानंद में शिफ्ट कर दी और अपने उसी जर्जर भवन वाले विद्यालय में बगैर मान्यता प्राप्त आवासीय विद्यालय खोलवा दी अब आप समझ सकते हैं कि नगवां ब्लॉक में कैसे विद्यालयों की मान्यता बेची जा रही और शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है। पूरे नगवां ब्लॉक में आधा दर्जन से अधिक ऐसे विद्यालय है जो बगैर मान्यता के इंटर तक की कक्षाएं संचालित हो रही है और शिक्षा विभाग मौन धारण कर कुंभकर्णी शिकायत की थी जिलाधिकारी ने इसकी जांच जिला विद्यालय निरीक्षक को सौपी थी जिला विद्यालय निरीक्षक ने अपने स्तर से जांच न करके पंडित दीनदयाल उपाध्याय इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य को सौंपी थी जिसकी जांच करने गए अधिकारी द्वारा अवैध विद्यालयों में न जाकर किसान निर्मल इंटर कॉलेज के संचालक को ही धमकाने लगे और उसके सामने अवैध रूप से संचालित स्वामी विवेकानंद विद्यालय में जाना उचित नहीं समझे और आख्या लगा दी की नगवां ब्लॉक में चल रहे सभी अवैध स्कूल बंद करा दिया गया शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया है कि जांच अधिकारी द्वारा न ही हमसे संपर्क किया गया और न ही अवैध विद्यालयों की जांच की गई है और फर्जी मनगढ़ंत आख्या लगाई गई है। जब इस पूरे प्रकरण को लेकर खलियारी के पत्रकार विजय शंकर ने जिला विद्यालय निरीक्षक से सेल फोन पर वार्ता किया गया तो जिला विद्यालय निरीक्षक द्वारा टाल मटोल करने लगे और पत्रकार के ऊपर नाराज होकर पत्रकार की ही जांच करने की धमकी देने लगे जिससे पत्रकारों और पत्रकार संगठनों में जिलाधिकारी को सौंपा जाएगा। गौर करने की बात यह है कि क्या यूपी सरकार के जीरो टार्लेंस की नीति पर कार्य कर रहा है शिक्षा विभाग के अधिकारी क्या मुख्यमंत्री के आदेश का पालन नहीं हो पा रहा शिक्षा विभाग क्या जीरो टार्लेंस की नीति सिर्फ कागजों पर ही सीमित है धरातल पर भ्रष्टाचार और शिक्षा का काला कारोबार धड़ल्ले से चल रहा है। गरीब अति पिछड़ा ब्लॉक नगवां में छात्रों का आर्थिक शोषण किया जा रहा है जनप्रतिनिधि सहित शिक्षा विभाग क्यों मौन धारण कर बैठा है ऐसे लोगों पर कार्यवाही क्यों नही हो रही है कौन है इनका संरक्षक किसके सह पर चल रहे हैं अवैध विद्यालय कौन इनका मास्टर माइंड अभी तक वो शासन प्रशासन से कैसे बच रहा है। सूत्रों की माना जाय तो इस प्रकार से अवैध विद्यालयों के संचालन में किसी बड़े सफेद पोश नेता का संरक्षण प्राप्त है। जो भी हो इस प्रकार के मामले में उच्च शिक्षा की आस लगाए बैठे गरीब छात्र छात्राओं का शोषण हो रहा है जिलाधिकारी सोनभद्र से मांग की जाती है कि पूरे प्रकरण की उच्चस्तरीय जांच करवाकर कर संबंधित विभाग के विरुद्ध कठोर कार्रवाई किया जाना न्यायोचित होगा।

स्मृति में पेड़ लगाकर श्रद्धांजलि अर्पित कर शोक संवेदना की व्यक्त

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। रॉबट्र्सगंज सदर विधानसभा में मंगलवार तक में पेड़ लगाया गया साथ ही भरसही में गिरजा शुक्ला के पिता के स्मृति में पेड़ लगाकर श्रद्धांजलि लगाना ही काफी नहीं है। पेड़ों की सुरक्षा और देखभाल करना भी हमारी जिम्मेदारी है।

अस्सी दिनों से चल रहा पेड़ हैं तो प्राण हैं अभियान चरका महादेव मंदिर नेवारी डुमरिया में किया गया पौध रोपण वही मौजूद ग्रामीणों में सैकड़ों पौधों का वितरण किया गया । वहीं श्री मिश्रा ने बताया कि रॉबट्र्सगंज में 'पेड़ है तो प्राण है' अभियान के तहत पर्यावरण संरक्षण का कार्य तेजी से चल रहा है।मंगलवार को रॉबट्र्सगंज विधानसभा क्षेत्र 401 के खुझ्झा में परिवारिक सदस्य स्वर्गीय शौरभ शुक्ल के स्मृति अर्पित किया व शोक संवेदना व्यक्त किया व बेलगाई गांव में पौध रोपण किया गया। इस दौरान ग्रामीणों को सैकड़ों पौधे भी बांटे गए। अभियान के संयोजक युवा समाजसेवी संदीप मिश्रा जनपदवासियों के साथ मिलकर इस मुहिम को आगे बढ़ा रहे हैं। उनका कहना है कि पौधे हमारे जीवन के लिए प्राणवायु देते हैं। आज का पौध रोपण आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ वातावरण प्रदान करेगा। उन्होंने कहा कि सिर्फ पेड़ रॉबट्र्सगंज विधानसभा क्षेत्र के कई गांवों में पहले भी पौधारोपण किया जा चुका है। लोगों को पेड़ों की रक्षा का संकल्प भी दिलाया जा रहा है। स्थानीय निवासी भी उत्साह के साथ इस अभियान से जुड़ रहे हैं कार्यक्रम में प्रदुम्न बिन्द मोनू शर्मा राज कनौजिया विजय कुमार बिन्द शिव कुमार बिन्द सल्मान अली सोनू जाटव प्रदुमन शर्मा अरविन्द विश्वकर्मा सहित सैकड़ों लोगों ने भाग लिया।

शिक्षा बच्चों को ज्ञान कौशल और मूल्यों से भर देती हैःवंदना

सोनभद्र। सामाजिक संस्था इनर व्हील क्लब आर्या रॉबट्र्सगंज

की तरफ से जय ज्योति विद्यालय चुर्क की 8 वीं कक्षा की छात्रा दीक्षा चौबे को इनर व्हील क्लब आर्या उसकी शिक्षा के लिए 1 वर्ष तक अयोजित कर रहा है.सपने वह नहीं है जो हम सोते समय देखते हैं सपने वह है जो हमें सोने नहीं देते शिक्षा वह रक्षक है जो सपनों को साकार में बदल सकती है। शिक्षा बच्चों को ज्ञान कौशल और मूल्यों से भर देती है जैसे उनका समग्र विकास होता है आत्मविश्वास बढ़ता है और वह समाज में साकारात्मक योगदान दे पाते हैं जिसे वहां एक जिम्मेदार नागरिक बनाते हैं. इसमें आर्या क्लब की अध्यक्ष वंदना वर्मा सचिव पूजा अग्रहरि हैं उपाध्याय रितु अग्रवाल कोषाध्यक्ष सीमा अग्रवाल सहित निधि गुप्ता प्रकाश कौर स्तुति अग्रहरि आदि सम्मिलित हुए।

अधिवक्ताओं को भी मिले कैशलेश इलाज की व्यवस्था-राकेश शरण मिश्र,अधिवक्ताओं के हितों को अनदेखा कर रही है यूपी सरकार

संयुक्त अधिवक्ता महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को लिखा पत्र

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। प्रदेश के अधिवक्ताओं होते है तो उसका सब कुछ दांव पर लग जाता है। इलाज के

के लिए सदैव आवाज बुलंद करने वाले संयुक्त अधिवक्ता महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष राकेश शरण मिश्र ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी को पत्र लिखकर प्रदेश के अधिवक्ताओं के लिए कैशलेश इलाज की मांग की है।

श्री मिश्र ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को लिखे पत्र में मांग की है कि जब वेतन भोगी कर्मचारियों को आप कैशलेश इलाज की सुविधा देने की घोषणा कर सकते है तो अधिवक्ताओं के लिए क्यों नहीं। उन्होंने सवाल खड़ा करते हुए कहा है कि अधिवक्ता गैर वेतन भोगी होता है और उसकी दिन की या महीने की कोई निश्चित आमदनी नहीं होती जिससे वो भविष्य की परेशानियों के बारे में कुछ धन बचा कर रख सके। आज शिक्षा और मेडिकल में सबसे अधिक पैसा लग रहा है। ऐसे में कोई अधिवक्ता या उसके घर वाले किसी गंभीर बीमारी से पीड़ित अभाव में प्रतिवर्ष हजारों अधिवक्ता दम तोड़ रहे है। अभी हाल ही में जनपद सोनभद्र के वरिष्ठ अधिवक्ता हरिओम सेठ जो ओबरा तहसील में वकालत करते थे महीनों इलाज के अभाव में तड़पते रहे और अंततः पैसे के अभाव में उनकी इलाज ठीक से ना हो पाने के कारण उनका दुखद निधन हो गया और ना तो सरकार से उन्हें कोई मदद मिली और ना ही बार कौंसिल से। इसलिए संयुक्त अधिवक्ता महासंघ आपसे मांग करता है कि आप जल्द से जल्द प्रदेश के अधिवक्ताओं को पच्चीस लाख की कैशलेश इलाज की व्यवस्था करने और उत्तरप्रदेश में अधिवक्ता सुरक्षा अधिनियम लागू करने की घोषणा करें अन्यथा प्रदेश के अधिवक्ताओं को अपनी इन दोनों मांगों के लिए प्रदेश व्यापी आंदोलन करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा जिसकी समस्त जिम्मेवारी उत्तर प्रदेश सरकार की होगी।

ओरिएंटेशन वर्कशॉप में पारदर्शिता, गुणवत्ता और जवाबदेही सुनिश्चित करने पर जोर,दिव्यांगजनों और महिलाओं की सहभागिता पर विशेष ध्यान दिया जाएगा

प्रशिक्षण कार्यक्रमों को पूरी निष्ठा से संचालित करने के निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र/लखनऊ। मिशन मुख्यालय में आयोजित ओरिएंटेशन वर्कशॉप के सातवें दिन मिशन निदेशक पुलकित खरे ने प्रशिक्षण प्रदाताओं को संबोधित करते हुए कहा कि प्रदेश सरकार की मंशा अनुरूप 'सबको हुनर, सबको काम' के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन पूरी निष्ठा और प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रहा है। यह वर्कशॉप प्रशिक्षण प्रदाताओं से प्रत्यक्ष संवाद स्थापित करने के उद्देश्य से पहली बार आयोजित की गई है, ताकि प्रशिक्षण संचालन में आ रही चुनौतियों का समयबद्ध समाधान सुनिश्चित किया जा सके। मिशन निदेशक ने जानकारी दी कि मंत्री कपिल देव अग्रवाल के मार्गदर्शन में सभी जिलों में प्रशिक्षण केंद्रों का उद्घाटन स्थानीय विधायकगणों द्वारा कराया जाएगा। साथ ही सभी प्रशिक्षण बैचों का लाइव टेलीकास्ट सुनिश्चित किया जाएगा, जिससे पारदर्शिता, गुणवत्ता और जवाबदेही को मजबूती मिलेगी। उन्होंने बताया कि प्रदेश सरकार सामाजिक समावेशन को प्राथमिकता दे रही है। इसके अंतर्गत सभी प्रशिक्षण बैचों में दिव्यांगजन हेतु 5 प्रतिशत आरक्षण तथा महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत सहभागिता का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। वर्कशॉप में प्रशिक्षण प्रदाताओं के पूर्व प्रदर्शन की समीक्षा की गई तथा युवाओं को स्थानीय उद्योगों में रोजगार से जोड़ने हेतु रणनीति पर भी चर्चा हुई। यह भी अवगत कराया गया कि आगामी समय में हर 2 से 3 महीनों के अंतराल पर इस प्रकार की ओरिएंटेशन वर्कशॉप आयोजित की जाएंगी, ताकि प्रशिक्षण प्रदाताओं से प्रत्यक्ष संवाद और समस्याओं के त्वरित समाधान सुनिश्चित हो सकें। इस अवसर पर अपर मिशन निदेशक प्रिया सिंह ने प्रशिक्षण प्रदाताओं को निर्देशित किया कि वे पूर्ण पारदर्शिता, निष्ठा एवं प्रतिबद्धता के साथ प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन करें। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण की गुणवत्ता में कोई समझौता न हो तथा मिशन से प्रशिक्षित युवाओं को स्थानीय उद्योगों में ही रोजगार दिलाया जाए, जिससे उन्हें अपने ही क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के अवसर प्राप्त हों। कार्यशाला के तकनीकी सत्र में सहायक प्रबंधक विजय नामदेव ने मिशन पोर्टल की कार्यप्रणाली, डिजिटल पारदर्शिता, लाइव मॉनिटरिंग, डेटा प्रबंधन और प्लेसमेंट ट्रैकिंग जैसे विषयों पर विस्तृत प्रस्तुति दी।

सोनभद्र,चंदौली समेत यूपी के इन जिलों में होगी जोरदार बारिश,अगले 24 घंटे में चालू होने वाला है बारिश का सितम

सोनभद्र। उत्तर प्रदेश में मौसम फिर से एक बार पलटी मारने के मूड में हैं. आईएमडी के मुताबिक धूप और उमस से परेशान लोगों को राहत मिलने वाली है. आईएमडी की रिपोर्ट के मुताबिक आज यानी 9 सितंबर को प्रदेश के आसमान में काले घने बादलों का डेरा फिर से जमने वाला है. आने वाले कुछ घंटों में प्रदेश का मौसम पूरी तरह से बदल जाएगा. आज यूपी के कई जिलों में बारिश होने वाली है, जिसके चलते अधिकतम तापमान में भी कमी आएगी.लखनऊ के अमौसी स्थित मौसम केंद्र से मिली जानकारी के मुताबिक,मंगलवार को पूर्वी यूपी के कई जिलों में बारिश होगी.इस दौरान तापमान में भी गिरावट भी देखने को मिलेगी. 9 सितंबर को प्रदेश के आसमान में काले घने बादलों का डेरा फिर से जमने वाला है. 9 सितंबर को पश्चिमी यूपी में कहीं-कहीं पर और पूर्वी यूपी में कुछ स्थानों पर बारिश व गरज चमक के साथ बौछारें पड़ सकती है. इस दौरान पश्चिमी यूपी में कोई अलर्ट नहीं जारी हुआ है जबकि पूर्वी यूपी में कहीं-कहीं पर बादल गरजने व बिजली चमकने का अलर्ट जारी किया गया है.मौसम विभाग का पूर्वानुमान है कि आज वाराणसी, मिर्जापुर, चंदौली, सोनभद्र, गाजीपुर, बलिया, मऊ, जौनपुर, आजमगढ़, देवरिया, सुल्तानपुर, अंबेडकर नगर, गोरखपुर, कुशीनगर,बलरामपुर, श्रावस्ती, बस्ती, सिद्धार्थनगर, बहराइच, गोंडा में गरज चमक के साथ मध्यम से हल्की बारिश हो सकती है. दक्षिणी जिलों सोनभद्र, चंदौली, वाराणसी आदि में भी गरज चमक के साथ वज्रपात की संभावना है.मंगलवार को प्रदेश के राजधानी लखनऊ में मौसम साफ हुआ. धूप खिली और आसमान में हल्के बादलों की आवाजाही भी देखने के मिली. तापमान की बात करें तो आज कोई खास बदलाव नहीं होगा. नोएडा में धूप छांव का खेल जारी रहेगा यानी लोग उमस भरी गर्मी से परेशान रहेंगे. गाजियाबाद और मेरठ, आगरा, अलीगढ़ में भी मौसम ऐसा ही रहने का अनुमान है.

कोहली-रोहित के रिटायरमेंट के बाद भारत का पहला टूर्नामेंटःएशिया कप में गिल निभाएंगे विराट का रोल, क्या रोहित की तरह कामयाब होंगे सूर्या

नयी दिल्ली। टी-20 वर्ल्ड कप 2024 की जीत के साथ भारतीय क्रिकेट के सुनहरे युग का एक बड़ा अध्याय बंद हो गया। विराट कोहली, रोहित शर्मा और रवींद्र जडेजा जैसे दिग्गजों ने इस फॉर्मेट को अलविदा कह दिया। अब एशिया कप में पहली बार टीम इंडिया उनके बिना मैदान पर उतरेगी। शुभमन गिल पर कोहली की जगह रन बनाने का दबाव होगा, कप्तान सूर्यकुमार यादव को रोहित की कप्तानी का वारिस माना जाएगा और ऑलराउंडर अक्षर पटेल को जडेजा की जिम्मेदारी उठानी होगी। दूसरी ओर पाकिस्तान ने भी बाबर आज़म और मोहम्मद रिज़वान को हटाकर नया दौर शुरू किया है। ऐसे में एशिया कप सिर्फ खिताब की लड़ाई नहीं, बल्कि नई पीढ़ी के खिलाड़ियों की परीक्षा साबित होगा। क्या ये नए खिलाड़ी और कप्तान बड़े टूर्नामेंट में दिग्गजों को कामयाबी के साथ रिप्लेस कर पाएंगे। स्टोरी में आगे इसी की पड़ताल करेंगे। कोहली आखिरी टी-20 में प्लेयर ऑफ द मैच बने थे टीम इंडिया के टी-20 में दूसरे टॉप रन स्कोरर विराट कोहली ने 29 जून 2024 को सबसे छोटे फॉर्मेट को अलविदा कह दिया। इसी दिन भारत ने टी-20 वर्ल्ड कप के फाइनल में साउथ अफ्रीका को हराकर 17 साल बाद खिताब जीता था। कोहली को 76 रन की अहम पारी खेलने के लिए प्लेयर ऑफ द मैच का अवॉर्ड मिला था। विराट ने 2010 में भारत से टी-20 डेब्यू किया और 2012 से हर टी-20 वर्ल्ड कप में हिस्सा लिया। 3 बार वे टूर्नामेंट के टॉप रन स्कोरर रहे। इतना ही 2014 और 2016 में प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट भी बने। वे टी-20 एशिया कप और टी-20 वर्ल्ड कप इतिहास के टॉप रन स्कोरर भी रहे। टी-20 में विराट पर टॉप ऑर्डर में टीम को संभालने की जिम्मेदारी थी। आखिरी वर्ल्ड कप में ओपनिंग करते हुए उन्होंने इस जिम्मेदारी को संभाला। टी-20 टीम में शुभमन गिल अब विराट कोहली की जिम्मेदारी संभालते नजर आएंगे। या तो वे बतौर ओपनर खेलेंगे या नंबर 3 पर बैटिंग करेंगे। शुभमन ने 2023 में इस फॉर्मेट से भारत के लिए डेब्यू किया, लेकिन उन्हें विराट की गैरमौजूदगी में ही प्लेइंग-11 में जगह मिल पाई। वे पिछले टी-20 वर्ल्ड कप में भी टीम का हिस्सा नहीं बन पाए थे। अब शुभमन एशिया कप में टीम के उप कप्तान बनाए गए हैं और उनका टॉप ऑर्डर में खेलना भी कन्फर्म ही है। शुभमन के सामने भी विराट की तरह मुश्किल परिस्थिति में टीम को संभालने और अहम मैचों में जीत दिलाने की चुनौती होगी। उन्होंने भारत के लिए अब तक 21 टी-20 में करीब 139 के स्ट्राइक रेट से 578 रन बनाए हैं। इस दौरान उन्होंने 1 सेंचुरी और 3 फिफ्टी भी लगाई। विराट के साथ रोहित ने भी टी-20 वर्ल्ड कप फाइनल के बाद संन्यास ले लिया। वे इस फॉर्मेट में दुनिया के टॉप रन स्कोरर बनने और भारत को 17 साल बाद वर्ल्ड कप जिताने के बाद रिटायर हुए। टी-20 में वे टीम इंडिया को लीड करने के साथ ओपनिंग करते हुए तेज शुरुआत दिलाने की जिम्मेदारी भी संभालते थे। रोहित ने 2007 में ही भारत से टी-20 डेब्यू कर लिया था। वे टीम इंडिया से बतौर प्लेयर और बतौर कप्तान वर्ल्ड कप जीतने वाले इकलौते खिलाड़ी रहे। उन्होंने भारत से 9 वर्ल्ड कप खेले और टूर्नामेंट में टीम के दूसरे टॉप स्कोरर रहे। ओवरऑल टीम के लिए उन्होंने 159 मैच में करीब 141 के स्ट्राइक रेट से 4231 रन बनाए। इनमें 5 शतक और 32 हाफ सेंचुरी शामिल रहीं। टी-20 टीम में रोहित के बाद सूर्यकुमार यादव को कप्तान बनाया गया। वहीं ओपनिंग पोजिशन को लेफ्ट हैंड बैटर अभिषेक शर्मा ने अपना बना लिया। सूर्या पहले से ही टी-20 टीम का हिस्सा थे, लेकिन

अब वे कप्तानी में भी टीम को बेहतरीन लीड कर रहे हैं। सूर्या की कप्तानी में भारत ने अब 22 मैच खेले और 18 में जीत हासिल की। सूर्या 3 या 4 नंबर पर बैटिंग करते हैं और टीम का स्कोरिंग रेट बढ़ाए रखते हैं। उनके नाम अब तक 83 मैचों में करीब 167 के स्ट्राइक रेट से 2598 रन हैं। इनमें 4 सेंचुरी और 21 फिफ्टी भी शामिल रहीं। दूसरी ओर ओपनिंग पोजिशन पर अभिषेक भी भारत को विस्फोट शुरुआत दिलाने में कामयाब रहे हैं। उनके नाम 17 मैचों में 193.84 के स्ट्राइक रेट से 535 रन हैं। इनमें 2 सेंचुरी और 2 ही फिफ्टी भी शामिल हैं। यानी कप्तानी में सूर्या और ओपनिंग में अभिषेक एशिया कप में रोहित की जिम्मेदारी संभालेंगे।रोहित और विराट के साथ ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा ने भी टी-20 वर्ल्ड कप से संन्यास ले लिया। जडेजा लेफ्ट आर्म स्पिन के साथ जरूरत पड़ने पर लोअर ऑर्डर में बैटिंग भी कर लेते थे। उन्होंने 2009 में टी-20 डेब्यू करने के बाद 2024 तक टीम इंडिया से 6 टी-20 वर्ल्ड कप खेले और ट्रॉफी मिलने के बाद संन्यास ले लिया।जडेजा ने 74 मैचों में भारत के लिए 54 विकेट लेने के साथ 515 रन भी बनाए। बैटिंग और बॉलिंग के अलावा जडेजा टीम के बेस्ट फील्डर भी थे। वे कई मौकों पर फील्डिंग से ही टीम को टर्निंग पॉइंट दिला चुके थे। बैटिंग-बॉलिंग में तो जडेजा की कमी पूरी हो जाएगी, लेकिन फील्डिंग में उनकी कमी पूरी कर पाना टीम इंडिया के लिए बेहद मुश्किल नजर आ रहा है। अक्षर पटेल अब टी-20 टीम में जडेजा की जगह बतौर स्पिन ऑलराउंडर खेलेंगे। वैसे तो अक्षर पिछले वर्ल्ड कप में जडेजा के साथ ही प्लेइंग-11 का हिस्सा भी थे, लेकिन कई मौकों पर जडेजा को प्राथमिकता भी दी जाती थी। अब जडेजा के रिटायरमेंट के बाद अक्षर टीम के फर्स्ट चॉइस स्पिन ऑलराउंडर बन जाएंगे। अक्षर भारत की व्हाइट बॉल टीम में खुद को स्थापित कर चुके हैं। उनके नाम सबसे छोटे फॉर्मेट के 71 मैचों में 535 रन बनाने के साथ 71 विकेट भी हैं। टी-20 वर्ल्ड कप फाइनल में उन्होंने ही कोहली के साथ अहम पार्टनरशिप कर टीम को मुश्किल परिस्थिति से निकाला था। ऐसे में अक्षर ही जडेजा के परफेक्ट रिप्लेसमेंट हैं। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने अपने टी-20 स्क्वॉड से अनुभवी बैटर बाबर आजम और विकेटकीपर मोहम्मद रिजवान को बाहर कर दिया। टीम के हेड कोच माइक हेसन ने कहा कि दोनों का टी-20 स्ट्राइक रेट बेहद कम है, इससे टीम अटैकिंग क्रिकेट नहीं खेल पा रही है। बाबर-रिजवान को टीम में जगह बनानी है तो उन्हें अपना स्ट्राइक रेट सुधारना पड़ेगा। बाबर टी-20 फॉर्मेट में रोहित के बाद दुनिया के बाद दूसरे टॉप रन स्कोरर हैं। उनके नाम 128 टी-20 में पाकिस्तान के लिए 4223 रन हैं। इस दौरान उनके नाम 3 सेंचुरी और 36 फिफ्टी भी हैं। हालांकि, 129 के स्ट्राइक रेट से रन बनाने के कारण उन्हें स्क्वॉड में जगह नहीं मिल सकी। टी-20 में पाकिस्तान के दूसरे टॉप स्कोरर मोहम्मद रिजवान को भी कम स्ट्राइक रेट के कारण बाहर किया गया। उनके नाम 106 मैचों में 125 के स्ट्राइक रेट से 3414 रन हैं। इनमें 1 सेंचुरी और 30 फिफ्टी शामिल रहीं। वे बाबर के साथ मिलकर पाकिस्तान के लिए ओपनिंग करते थे। हालांकि, अब दोनों को ही स्क्वॉड से बाहर कर दिया गया। हारिस-नवाज ने पाकिस्तान टीम में जगह बनाई बाबर और रिजवान की जगह पाकिस्तान ने टी-20 टीम में विकेटकीपर मोहम्मद हारिस, बैटर हसन नवाज, सईम अयुब और साहिबजादा फरहान को शामिल किया। हारिस पाकिस्तान के लिए 2022 का टी-20 वर्ल्ड कप भी खेल चुके हैं। उनके नाम 27 टी-20 में 138 के स्ट्राइक रेट से 422 रन है। वे एक संेचुरी भी लगा चुके हैं। हसन नवाज ने पाकिस्तान के लिए 18 टी-20 में करीब 167 के स्ट्राइक रेट से 417 रन बनाए हैं। उनके नाम 1 सेंचुरी और 2 फिफ्टी भी हैं। साहिबजादा फरहान ने 2018 में टी-20 डेब्यू कर लिया था, लेकिन वे 19 मैच ही खेल सके। इनमें उनके नाम करीब 132 के स्ट्राइक रेट से 378 रन हैं। उन्होंने 3 फिफ्टी भी लगाई हैं। लेफ्ट हैंड ओपनर सईम अयुब पाकिस्तान टीम में अपनी जगह पक्की कर चुके हैं। उनके नाम 40 मैचों में 138 के स्ट्राइक रेट से 799 रन हैं।एशिया कप के लिए दोनों टीमों की पॉसिबल प्लेइंग-11 भारतः सूर्यकुमार यादव (कप्तान), अभिषेक शर्मा, शुभमन गिल, तिलक वर्मा, जितेश शर्मा (विकेटकीपर), हार्दिक पंड्या, शिवम दुबे, अक्षर पटेल, कुलदीप यादव/वरुण चक्रवर्ती, अर्शदीप सिंह और जसप्रीत बुमराह। पाकिस्तानः सलमान आगा (कप्तान), फखर जमान, सईम अयुब, साहिबजादा फरहान, हसन नवाज, मोहम्मद हारिस (विकेटकीपर), मोहम्मद नवाज, फहीम अशरफ, शाहीन शाह अफरीदी, हारिस रउफ और सुफियान मुकीम/अबरार अहमद।

एक डोनर बचा सकता है 8 जिंदगी, अंगदान से जुड़ी शर्तें और प्रोसेस जानें

नयी दिल्ली। समझेंगे एक्सपर्ट डॉ. प्रशांत विलास भंगुई, डायरेक्टर, लिवर ट्रांसप्लांट, मेदांता जी से सवाल

जवाब के माध्यम से। आज दुनियाभर में 'वर्ल्ड ऑर्गन डोनेशन डे' मनाया जा रहा है। इस दिन का उद्देश्य लोगों को अंगदान के

महत्व के प्रति जागरूक करना और यह समझाना है कि कैसे एक व्यक्ति की पहल कई जिंदगियों को नई सांसें दे सकती है। भारत में हर साल लाखों लोग ऐसे होते हैं, जिन्हें लिवर, किडनी, हार्ट या आंखों जैसे अंगों की सख्त जरूरत होती है, लेकिन समय पर डोनर न मिलने के कारण उनकी जान चली जाती है। जबकि एक ब्रेन डेड व्यक्ति के अंग करीब 8 लोगों की जान बचा सकते हैं। भारत में मानव अंग और ऊतक प्रत्यारोपण अधिनियम, 1994 जैसे कानून बनाए गए हैं।

सरकार की ओर से समय-समय पर जागरूकता अभियान चलाए जाते हैं, ताकि इस नेक काम को लेकर फैली भ्रांतियों को दूर किया जा सके। तो चलिए, जरूरत की खबर में आज जानते हैं कि कौन अंगदान कर सकता है? साथ ही जानेंगे कि- अंगदान करने का प्रोसेस क्या है? किन-किन अंगों का डोनेशन संभव है?सवाल- ऑर्गन डोनेशन क्या है? जवाब- जब हमारे शरीर का कोई अंग खराब हो जाता है और वो काम करना बंद कर देता है, तब उस अंग की जगह किसी दूसरे व्यक्ति का स्वस्थ अंग लगाया जाता है। इसे ऑर्गन ट्रांसप्लांट कहते हैं। अगर कोई व्यक्ति अपने शरीर का अंग किसी जरूरतमंद को देता है तो उसे अंगदान (ऑर्गन डोनेशन) कहते हैं। सवाल- भारत में ऑर्गन ट्रांसप्लांट की जरूरत और उपलब्धता के बीच कितना बड़ा अंतर है? जवाब- भारत में जिन मरीजों को ऑर्गन ट्रांसप्लांट की जरूरत होती है और जितने ट्रांसप्लांट असल में किए जाते हैं, उनके बीच बहुत बड़ा फर्क है। सवाल- ऑर्गन और टिश्यू डोनेशन में क्या अंतर है? जवाब- ऑर्गन यानी शरीर का बड़ा और पूरा अंग, जिसके सही तरीके से काम करने पर हमारी जिंदगी टिकी होती है। जैसे दिल, फेफड़े, किडनी, लिवर। इनमें खराबी आ जाए तो इंसान की जान खतरे में पड़ सकती है और इन्हें बदलने के लिए ऑर्गन ट्रांसप्लांट की जरूरत पड़ती है। टिश्यू यानी ऊतक, जो किसी

अंग का छोटा-सा हिस्सा या परत होते हैं। ये कई कोशिकाओं से मिलकर बने होते हैं और शरीर को खास काम करने में मदद करते हैं। जैसेकि- कॉर्नियाः आंख का पारदर्शी हिस्सा, जो रोशनी अंदर जाने देता है। स्किनः त्वचा, जो शरीर को ढकती और बचाती है। हार्ट वॉल्वः दिल के अंदर का हिस्सा, जो

खून के फ्लो को कंट्रोल करता है। सवाल- कौन-कौन से अंग और टिश्यू दान किए जा सकते हैं? जवाब- अंगदान सिर्फ दिल या किडनी देने तक सीमित नहीं है। जब कोई व्यक्ति अंगदान करता है तो उसके शरीर से कई अंग और ऊतक ऐसे निकल सकते हैं, जो जरूरतमंद मरीजों की जान बचा सकते हैं या उनकी जिंदगी को बेहतर बना सकते हैं। कुछ अंग सीधे जीवन बचाते हैं, जबकि कुछ टिश्यू जीवन की क्वालिटी सुधारते हैं। जैसे देखने की क्षमता लौटाना या जलने के घाव भरना। सवाल- शरीर का कौन सा अंग कब तक ट्रांसप्लांट किया जा सकता है। जवाब- हर अंग का एक निश्चित समय होता है, जिसके भीतर उसे ट्रांसप्लांट किया जाना जरूरी होता है। आइए समझते हैं कि कौन-सा अंग कितने समय में ट्रांसप्लांट किया जा सकता है। सवाल- क्या अंगदान केवल मौत के बाद ही किया जा सकता है? जवाब- अंगदान सिर्फ मौत के बाद ही नहीं, बल्कि जिंदा रहते भी किया जा सकता है। हालांकि जीवित व्यक्ति सभी अंग नहीं दे सकता है। वह सिर्फ कुछ अंग या उनका हिस्सा ही दान कर सकता है। अंगदान के दो तरीके होते हैं। लिविंग डोनर- जो व्यक्ति जिंदा रहते किसी जरूरतमंद को एक किडनी या अपने लिवर का एक हिस्सा देता है। ऐसा इसलिए संभव है क्योंकि इंसान एक किडनी के साथ भी जी सकता है और लिवर में खुद को दोबारा विकसित करने की क्षमता होती है।

डिसीज्ड डोनर- जब किसी व्यक्ति को ब्रेन डेड घोषित कर दिया जाता है (यानी मस्तिष्क हमेशा के लिए काम करना बंद कर देता है) तब उसके परिवार की सहमति से उसके अंग निकाले जाते हैं।सवाल- अगर कोई व्यक्ति अंगदान (ऑर्गन डोनेशन) करना चाहता है तो उसकी क्या प्रक्रिया है? जवाब- अंगदान करने की प्रक्रिया बहुत आसान है, इसके लिए आप इन स्टेप्स को फॉलो कर सकते हैं। स्टेप 1ः किसी सरकारी या भरोसेमंद संस्था की वेबसाइट पर जाएं। स्टेप 2ः वहां से डोनर फॉर्म डाउनलोड करें। यह बिल्कुल मुफ्त होता है। स्टेप 3ः फॉर्म को ध्यान से पढ़कर अपनी पूरी जानकारी के साथ भरें। स्टेप 4ः फॉर्म पर दो लोगों के हस्ताक्षर (साक्षी के रूप में) जरूरी हैं, जिनमें से एक आपका नजदीकी रिश्तेदार होना चाहिए। स्टेप 5ः फॉर्म जमा करने के बाद आपका रजिस्ट्रेशन होगा और आपको डोनर कार्ड जारी किया जाएगा। स्टेप 6ः यह कार्ड आपके पते पर डाक से भेजा जाएगा। इसे अपने पास सुरक्षित रखें। स्टेप 7ः अपने परिवार और करीबी लोगों को जरूर बताएं कि आपने अंगदान के लिए रजिस्ट्रेशन किया है, ताकि सही समय पर वे अस्पताल को जानकारी दे सकें। अगर किसी ने पहले से रजिस्ट्रेशन नहीं करवाया है तब भी मौत के बाद अंगदान संभव है। इसके लिए परिवार की अनुमति जरूरी होती है। सवाल- ऑर्गन डोनेट करने के लिए कौन-कौन सी जरूरी शर्तें होती हैं?जवाब- ऑर्गन डोनेशन एक सेंसिटिव और कानूनी प्रक्रिया है। इसे करते समय न सिर्फ मेडिकल जांच जरूरी होती है, बल्कि कानूनी और नैतिक शर्तों का भी पालन करना होता है। ताकि डोनेशन पारदर्शिता और सुरक्षा के साथ हो सके।सवाल- भारत में ऑर्गन डोनेशन को बढ़ावा देने के लिए सरकार क्या कदम उठा रही है? जवाब- भारत सरकार ने अंगदान को आसान, सुरक्षित और ज्यादा लोगों तक पहुंचाने के लिए कई कदम उठाए हैं। जैसेकि- 1994 में मानव अंग और ऊतक प्रत्यारोपण अधिनियम लागू किया गया। इसमें ब्रेन डेड व्यक्ति के अंग दान की अनुमति और अंगों की खरीद-बिक्री पर पूरी तरह रोक है। नेशनल ऑर्गन एंड टिश्यू ट्रांसप्लांट ऑर्गनाइजेशन देशभर में अंगों के सही और निष्पक्ष वितरण की देखरेख करता है। लोग अब इंटरनेट से आसानी से अंगदान के लिए रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं। सरकार और एनजीओ टीवी, रेडियो और सोशल मीडिया के जरिए अंगदान के फायदे और महत्व बताते हैं।हर साल 27 नवंबर को राष्ट्रीय अंगदान दिवस मनाया जाता है। मृत डोनर से अंग पाने की 65 साल की उम्र सीमा खत्म की गई। ट्रांसप्लांट के लिए अब किसी भी राज्य में डोमिसाइल सर्टिफिकेट जरूरी नहीं। ब्रेन डेड मरीज की जानकारी तुरंत प्राधिकरण को देना अनिवार्य है, जिससे अंग समय पर जरूरतमंद तक पहुंच सके।

गुड हैबिट्स- भोजन में ढेर सारी सब्जियां खाने की आदतःसब्जी खाने से दिमाग होता तेज, बढ़ती उम्र, कब्ज, अपच, बीमारियां दूर रहती हैं

नयी दिल्ली। दुनिया में 5 ब्लू जोन हैं। यहां के लोगों की औसत उम्र 100 साल से ज्यादा है। ये लोग लंबे जीवन के लिए 9 नियम

अपनाते हैं। उनमें सबसे खास है कि प्लांट बेस्ड खाना ही खाएंगे। ऐसी सभी चीजें खाएंगे, जो पेड़-पौधों के रूप में प्रकृति ने हमें दी हैं। ये खाने में ज्यादा-से-ज्यादा सब्जियां शामिल करते हैं। इसमें कोशिश ये होती है कि जितने ज्यादा रंगों की सब्जियां खाने में शामिल कर सकें। सब्जियां विटामिन्स, मिनरल्स और फाइबर से भरपूर होती हैं। इनसे मिले न्यूट्रिएंट्स से इम्यून सिस्टम मजबूत होता है और डाइजेस्टिव सिस्टम बेहतर होता है। इससे हार्ट डिजीज, स्ट्रोक और टाइप-2 डायबिटीज जैसी क्रॉनिक बीमारियों का जोखिम कम हो जाता है। खास बात ये है कि इनमें कैलोरी और फाइबर कम होता है। आज 'गुड हैबिट्स' कॉलम में ज्यादा सब्जियां खाने की आदत के बारे में जानेंगे। साथ ही जानेंगे कि- खाने में सब्जियां ज्यादा क्यों होनी चाहिए? ज्यादा सब्जियां खाने के क्या फायदे हैं? सब्जियां क्यों हैं इतनी खास? सब्जियां हमारे शरीर के लिए एक

सुपरफूड की तरह हैं। इनमें विटामिन्स, मिनरल्स, फाइबर और एंटीऑक्सिडेंट्स होते हैं, जो हमें अंदर से मजबूत बनाते हैं। लेकिन ऐसा क्या है जो इन्हें इतना जरूरी बनाता है? विटामिन और मिनरल्स का खजाना- फल और सब्जियां विटामिन ए,सी,ई और मिनरल्स जैसे मैग्नीशियम, जिंक, फॉस्फोरस

और फोलिक एसिड से भरपूर होती हैं। पोटेशियम के लिए एवोकाडो, शकरकंद, केला, आलूबुखारा और टोमैटो प्यूरी खाएं। स्वाद और टेक्सचर की ढेरों वैरायटी- हर फल और सब्जी का स्वाद और बनावट अलग होती है। आप चाहें तो तीखे स्वाद वाले प्याज, जैतून और मिर्च ट्राई करें या फिर हल्के स्वाद वाले मशरूम और कॉर्न। मीठा खाने का मन हो तो अंगूर, अनन्नास और आलूबुखारा खाएं और खट्टे स्वाद के लिए नींबू और चकोतरा बढ़िया हैं। फाइबर से भरपूर- अधिकतर फल और सब्जियां फाइबर से भरपूर होते हैं, जो पेट भरने और पाचन को दुरुस्त रखने में मदद करते हैं। ज्यादा फाइबर वाली सब्जियां हैं- मटर, ब्रोकली और फूलगोभी। फाइबर वाले फल हैं- रसभरी, नाशपाती और सेब। कम कैलोरी, कम फैट- अमूमन फल और सब्जियां कम कैलोरी और फैट वाली होती हैं, इसलिए इन्हें ज्यादा मात्रा में खा सकते हैं बिना वजन बढ़ने की चिंता के। उदाहरण के तौर पर, आधा कप अंगूर खाने से आप एक चौथाई कप के मुकाबले 200 से ज्यादा कैलोरी बचा सकते हैं। हां, एवोकाडो, जैतून और नारियल जैसे कुछ अपवाद भी हैं जिनमें थोड़ा ज्यादा फैट होता है। बीमारियों से बचाव- फल और सब्जियों में कुछ खास प्राकृतिक तत्व फाइटोकेमिकल्स होते हैं जो कई बीमारियों से बचाव करते हैं। इन्हें खाने से डायबिटीज टाइप 2, हार्ट अटैक, स्ट्रोक, हाई ब्लड प्रेशर और कैंसर का खतरा कम हो सकता है। खासकर ब्रोकली, पत्ता गोभी, सरसों और जलकुंभी जैसी क्रूसीफेरस सब्जियां कैंसर से बचाव में मददगार मानी जाती हैं। अच्छी सेहत में मददगार- इनमें सैचुरेटेड फैट, नमक और चीनी बहुत कम होती है, इसलिए ये बैलेंस्ड डाइट का हिस्सा बनती हैं।

ये वजन कम करने या बढ़ने से बचाने में मदद करती हैं। साथ ही सूजन कम करने, कोलेस्ट्रॉल और ब्लड प्रेशर घटाने में भी असरदार हैं। बहुत कम सोडियम और कोलेस्ट्रॉल- ताजे फल और सब्जियों में सोडियम बहुत कम होता है। जैसे बहुत लोग मानते हैं कि सेलरी में सोडियम ज्यादा होता है, लेकिन एक डंठल में सिर्फ 30 मिलीग्राम होता है, जो सिर्फ 1फीसदी डेली वैल्यू है। सब्जियां कैसे खाएं? अब सवाल यह है कि सब्जियों को अपनी रोज की डाइट में कैसे शामिल करें। बहुत से लोग सोचते हैं कि सब्जियां खाना बोरिंग है, लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है। कुछ आसान तरीके हैं-सब्जियों को सलाद बनाएंः पालक, टमाटर, खीरा और गाजर को मिलाकर एक रंग-बिरंगा सलाद तैयार करें। थोड़ा नींबू और नमक डालें, मजा दोगुना हो जाएगा। सूप में डालकर खाएंः ठंड के दिनों में सब्जियों का सूप बनाएं। गाजर, मटर और ब्रोकली डालकर

इसे सेहतमंद और स्वादिष्ट बनाएं। भूनकर खाएंः आलू, शिमला मिर्च और बैंगन को हल्का तेल लगाकर भून लें। यह नाश्ते के लिए भी बढ़िया है। स्मूदी ट्राई करेंः पालक या चुकंदर को फलों के साथ ब्लेंड करें। यह पीने में आसान और पोषण से भरपूर होता है। दाल में मिलाकर खाएंः अपनी रोज की दाल में थोड़ी सी सब्जियां डालें, जैसे लौकी या पालक। स्वाद और सेहत दोनों बेहतर होते हैं। सब्जियां खाने के फायदे - सब्जियां खाने से हमारे

शरीर को ढेर सारे फायदे मिलते हैं। इसके कुछ खास फायदे हो सकते हैं- पेट की सेहत बेहतर रहती है सब्जियों में फाइबर भरपूर मात्रा में होता है, जो पाचन तंत्र को दुरुस्त रखता है और कब्ज की समस्या नहीं होने देता। बीमारियों से बचाव होता है सब्जियों में मौजूद एंटीऑक्सिडेंट्स शरीर की कोशिकाओं को नुकसान से बचाते हैं और इम्यून सिस्टम को मजबूत करते हैं। वजन कंट्रोल में रहता है सब्जियां कैलोरी में कम और पोषण में ज्यादा होती हैं, जिससे वजन बढ़ने का खतरा नहीं रहता और शरीर फिट रहता है। दिमाग की कार्यक्षमता बढ़ती है हरी सब्जियों में पाए जाने वाले विटामिन्स और मिनरल्स मस्तिष्क को सक्रिय रखते हैं और याददाश्त बेहतर बनाते हैं। त्वचा निखरती है- विटामिन ए और सी से भरपूर सब्जियां त्वचा को स्वस्थ, चमकदार और जवां बनाए रखने में मदद करती हैं। हर दिन कम से कम 2-3 कटोरी सब्जियां खानी चाहिए। इससे न सिर्फ शरीर स्वस्थ रहता है, बल्कि आपका मूड भी अच्छा रहता है। सब्जियां न खाने का नुकसान- अगर सब्जियां नहीं खाते, तो शरीर को जरूरी तत्व नहीं मिलते। इम्यूनिटी कमजोर होती है, पेट खराब रहता है और वजन बढ़ने का खतरा रहता है। लंबे समय तक ऐसा चला तो डायबिटीज और हार्ट की बीमारियां भी हो सकती हैं। आपके शरीर को कई मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है- पाचन की दिक्कतः फाइबर की कमी से पेट खराब रहता है। कमजोरीः विटामिन्स न मिलने से थकान जल्दी होती है। बीमारियों का खतराः दिल और डायबिटीज जैसी बीमारियां बढ़ सकती हैं। वजन बढ़ता हैः सब्जियों की जगह जंक फूड खाने से मोटापा हो सकता है। सब्जियों को खाने में कैसे शामिल करें? सब्जियां खाना कोई मुश्किल काम नहीं है। बस थोड़ा सा दिमाग लगाएं और ये आपकी जिंदगी का हिस्सा बन जाएंगी। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। पहले मुझे पालक और भिंडी बिल्कुल पसंद नहीं थे। कुछ आसान तरीके आजमाएं और अब मेरी थाली में हर दिन कोई न कोई सब्जी जरूर होती है। सब्जियां खाना सिर्फ सेहत के लिए ही नहीं, पूरी जिंदगी के लिए फायदेमंद है। ये छोटी-सी आदत आपको लंबा और खुशहाल जीवन दे सकती है। आज से ही शुरू करें। अपनी थाली में रंग भरें और देखें कि आपका शरीर और मन दोनों कैसे खिल उठते हैं।

कोडिंग' की दाल में 'केयरिंग' का तड़का नौकरी की सही रेसिपी है

वह पोस्ट ग्रेजुएट है। उसने कई इंटर्नशिप भी की। फिर एक राजनेता के ऑफिस में काम किया, जहां वो उनके मतदाताओं से मिलती। वो स्मार्ट है। संचार में और वहां आने वाले लोगों

को संभालने में कुशल है। चूंकि वो आम महिला-पुरुषों को अधिकारीगण आदि से मिलाने में मदद करती थीं, जिनके निर्णयों से जनता को लाभ होता है। ऐसे में उसने किसी व्यक्ति की समस्या को समाधान प्रदाता से मिलाने की कुशलता विकसित कर ली। लेकिन उसकी एक ही समस्या थी। राजनेताओं के कामकाज का कोई समय नहीं होता। रोजाना लंबे समय तक काम करने से उसके बच्चे पर असर पड़ रहा था। इसीलिए उसने नौकरी बदलने का निर्णय किया। पिछली जनवरी में उसने एक बड़े अस्पताल में काम करने वाले मेरे एक परिचित से संपर्क किया, ताकि वह वहां नौकरी के लिए उनकी सिफारिश कर सके। और उसे नौकरी मिल गई।जाहिर तौर पर वह इसलिए चुनी गई, क्योंकि उसमें शिकायत करने वाले मरीजों को संभालने की क्षमता थी और जॉइन करने के पहले दिन से ही वह उन्हें शांत रखने लग गईं। 6 महीने का प्रोबेशन पूरे करने से पहले, महज एक महीने में ही उसने स्थायी नौकरी की मांग कर दी। और उसे वह भी मिल गई। उसका ख्याल मुझे तब आया जब मैं इस हफ्ते जारी पीरियोडिक लेबर फोर्स सर्वे के डेटा पढ़ रहा था।इसमें बताया गया कि 15 से 29 साल के शहरी युवाओं में बेरोजगारी दर एक महीने में एक प्रतिशत बढ़ गई है। जून में ये 18.8फीसदी हो गई। कहीं ना कहीं यह दो बातों की ओर संकेत करती है। 1. अकेली शिक्षा अब रोजगार-स्थायित्व की गारंटी नहीं। 2. नियोक्ता चाहते हैं कि आप जॉइन करने के पहले दिन से ही रिजल्ट देने लगें। मुंबई में कुशल व शिक्षित युवाओं की एक पीढ़ी अभी भी बेरोजगार है।जी हां, ये वही शहर है, जहां गर्व से कहते थे कि 'मुंबई में कोई भूखा नहीं सोता।' लेकिन आज यह बात सच नहीं है। मुम्बई ऐसा अकेला शहर नहीं है। अमेरिका से लेकर यूके तक दुनियाभर में कॉलेज ग्रेजुएट्स और पोस्ट ग्रेजुएट युवाओं के बीच बेरोजगारी दर में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है।अमेरिका के भी ऐसे मासिक बेरोजगारी डेटा की पड़ताल करें तो पता चलता है कि अमेरिकी पुरुषों में भी बेरोजगारी तेजी से बढ़ी है। यह पांच प्रतिशत से कम थी, जो अब 7फीसदी से अधिक हो गई है। जबकि महिलाओं में बेरोजगारी घटी है। इस दावे का समर्थन करने वाले एक डेटा से पता चलता है कि पिछले एक वर्ष में युवा महिला ग्रेजुएट्स द्वारा भरी गई 1.35 लाख नौकरियों में से 50 हजार नौकरियां अमेरिका के हेल्थ केयर सेक्टर में थीं।स्पष्ट रूप से इसका कारण उम्रदराज आबादी की बढ़ती मांग के साथ ऑटोमेशन, घरों में एआई संचालित उपकरणों का प्रवेश और रोजमर्रा की चिकित्सा जरूरतें हैं। ये सब बताता है कि एआई मौजूदा व्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी कारक है।इसका जवाब सही भी है और गलत भी। सही इसलिए, क्योंकि यह उतनी नौकरियां पैदा नहीं कर रहा, जितनी पुरानी नौकरियां खत्म कर रहा है। गलत इसलिए, क्योंकि एंट्री लेवल सॉफ्टवेयर डेवलपर्स के पदों पर भर्तियों में फिर उछाल देखा जा रहा है। इसलिए तकरीबन 30 वर्ष की उम्र के लोग, जो कम से कम 60 हजार रु. प्रतिमाह वाली नौकरी खोज रहे हैं, उन्हें उस स्थान की जनसांख्यिकी भी पढ़नी चाहिए, जहां नौकरी ढूंढ रहे हैं। और उन्हें कोडिंग से 'केयरिंग' की ओर रुख करना चाहिए। मुंबईकरों में नया नारा है, 'कोडिंग सीखने के साथ-साथ केयरिंग भी सीखो।'ऐसा इसलिए क्योंकि एक शहर के तौर पर मुंबई भी बूढ़ा हो रहा है। और उस आबादी को देखभाल चाहिए। यही कारण है कि शुरुआत में जिस लड़की का जिक्र मैंने किया, उसे हेल्थ सेक्टर में जल्दी नौकरी मिल गई। और वह पहले दिन से ही अपने नियोक्ता के लिए समस्याओं का समाधान करने वाली बन गई।फंडा यह है कि जैसे पैसा कंपनी के प्रदर्शन के पीछे भागता है, मेरा मतलब निवेशक निवेश से पहले कंपनी की परफॉर्मेंस देखते हैं, वैसे ही आपका प्रदर्शन करियर को आगे बढ़ाता है। हेल्थकेयर जैसा क्षेत्र चुनें, जो अभी फल-फूल रहा है। और यदि कोडिंग में 'केयरिंग' का तड़का लगा सकते हैं तो फिर देखिए कैसे आपकी 'रेसिपी' जायकेदार बन जाएगी। मेरा मतलब है आपकी सैलरी! (एन. रघुरामन)

दूध के पैकेट जैसी छोटी-सी चीज पर भी गौर करने का समय आ गया है

पिछले करीब एक माह से सुबह की कॉफी बनाना मेरी जिम्मेदारी थी, क्योंकि मोतियाबिंद की सर्जरी के बाद पत्नी का किचन स्टोव के पास

आना मना था। लेकिन बीते इस समय में वह कभी भी यह पूछना नहीं भूलीं कि 'क्या आपने दूध की थैलियों को उनकी तय जगह पर रख दिया है?' यह प्लास्टिक को इकट्ठा करने का अलग बैग है, जो एसी यूनिट के पीछे रखा रहता है।रिसाइकल कचरा इकट्ठा करने वाले को यह हम देते हैं, जो कि कॉलोनी में महीने में एक बार आता है। मैं 'हां' कहता हूं और उन्हें कॉफी का कप देता हूं। एक महीने में मैंने देखा कि धीरे-धीरे इस प्लास्टिक की थैली की ऊंचाई बढ़ने लगी और अंततः ये एसी यूनिट के पार निकल गई। और तब मुझे एहसास हुआ कि किसी एक घर से कितना अधिक प्लास्टिक निकल सकता है। इसमें सर्वाधिक दूध की थैलियां थीं। इसी ने मुझे दूध की थै?लियों को लेकर कुछ तथ्य खोजने के लिए बाध्य किया। दूध की जिन ?थैलियों को हम इस्तेमाल के बाद फेंक देते हैं, वे प्लास्टिक की होती हैं और मिट्टी में नष्ट होने में बहुत वक्त लेती हैं। ये समय 20 से 500 वर्ष तक हो सकता है। प्लास्टिक ऐसा पदार्थ है, जिसका प्राकृतिक तरीके से क्षरण नहीं होता। ना ही ये जैविक पदार्थों की भांति अपघटित होता है। बल्कि यह सूर्य के प्रकाश के संपर्क में आने पर माइक्रोप्लास्टिक में बंट जाता है। पर पूरी तरह गायब नहीं होता। अगर न्यूनतम आंकड़ों का अनुमान लगाएं, तो भी भारत में प्रति दिन ऐसी 20 करोड़ दूध के पैकेट की खपत होती है। 1946 में शुरू हुआ अमूल बड़े दुग्ध उत्पादक के नाते बड़ी संख्या में दूध की थैलियों का उपयोग करता है। सटीक आंकड़े भिन्न हैं, पर रिपोर्ट बताती हैं कि अमूल प्रतिदिन प्लास्टिक से बनी 2.6 करोड़ दूध की थैलियां बेचता है। मतलब, साल भर में करीब 949 करोड़ थैलियां। इसके अलावा कंपनी दही, छाछ जैसे अन्य दुग्ध उत्पाद भी प्लास्टिक की थैलियों में बेचती है, जिससे रोजाना काफी प्लास्टिक कचरा पैदा होता है। वर्ष 2020 में पंजाब विधानसभा में बताया गया कि पंजाब राज्य सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ द्वारा 1973 में शुरू किए गए 'मिल्कफैड' ने 2018-19 में दूध और अन्य डेयरी उत्पादों की पैकेजिंग में 80 करोड़ प्लास्टिक थैलियां काम में लीं। आज हम 2025 में हैं और अभी दूध की खपत करने वाले युवाओं के लिहाज से बड़ी आबादी वाले उत्तरप्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान, ओडिशा और झारखंड जैसे राज्यों के संघों की बात तो की ही नहीं है। मुझे सोमवार को यह सब याद आया, जब मैंने जाना कि कैसे बेंगलुरु में नंदिनी मिल्क सप्लाई करने वाला कर्नाटक मिल्क फेडरेशन (केएमएफ) अपने लोकप्रिय ब्रांड के लिए इको-फ्रेंडली पैकेजिंग शुरू करने जा रहा है। पायलट प्रोजेक्ट के तहत, वे रोजाना प्राकृतिक रूप से अपघटित हो सकने वाली 2 लाख ?थैलियों के उपयोग से बायोडिग्रेडेबल पैकेजिंग की ओर बढ़ रहे हैं। वे रोज लगभग 50 लाख लीटर दूध, 16 लाख लीटर दही बेच रहे हैं। नष्ट होने में कई सौ वर्ष लेने वाली पारंपरिक पॉलिथीन थैलियों के विपरीत ये इको फ्रेंडली विकल्प 90 दिन के भीतर प्राकृतिक रूप से विघटित हो जाते हैं।यहां तक कि इनको रासायनिक उर्वरक में भी बदला जा सकता है। केएमएफ की एक अन्य शाखा बेंगलोर मिल्क यूनियन लिमिटेड (बामूल) द्वारा हाल ही लॉन्च पायलट प्रोग्राम की सफलता के बाद अब ये नई पहल इसी वीकेंड शुरू होगी। ये परीक्षण उनके एक डेयरी फार्म में शुरू किया गया। वर्तमान में इसे चुनिंदा क्षेत्र में लागू किया जा रहा है, जिसमें इसे सकारात्मक प्रतिक्रिया, रिसाव की शिकायत नहीं होने और दूध की गुणवत्ता से समझौता नहीं होने के पैमानों पर परखा जा चुका है। चूंकि ग्राहक संतुष्टि बेहतर थी, इसलिए वे नए इलाकों को कवर कर रहे हैं। जाहिर है कि जल्द ही राज्यभर में इसे शुरू किया जा सकता है। फंडा यह है कि समय आ गया है, प्लास्टिक की थैलियों में दूध ले रहे हम भारतीयों को उस मिट्टी और समुद्र को बचाने के लिए कोई री-साइकिलिंग योजना अपनानी पड़ेगी, जो हम हमारी पीढ़ियों के लिए छोड़कर जा रहे हैं। अपनी पसंद का कोई भी तरीका अपनाएं, जब तक कि हमारे शहर बायोडिग्रेडेबल थैलियों पर ना आ जाएं, पर कृपया इन्हें कचरे में ना फेंकें। (एन. रघुरामन)

अनुशासित बनें या बुरी आदतों पर अधिक खर्च करें, फैसला आपका

सोमवार सुबह 4 बजे मैं अपनी बिल्डिंग से अपनी नियमित दूधवाला फ्लाइट (अल सुबह) के लिए निकला। बिल्डिंग का चौकीदार- जो हमेशा सोता मिलता है और विंग का अंदरूनी गेट खोलने के लिए उसे जगाना पड़ता है- आज बिल्कुल सजग था। उसने मुझे गुड मॉर्निंग भी बोला। मैं अचंभित हुआ। एयरपोर्ट जाते समय मैंने ड्राइवर से पूछा कि वह आज इतना खुश क्यों दिख रहा है, क्या उसे सिक्योरिटी सुपरवाइजर ने चेतावनी दी है? ड्राइवर ने मुस्कराते हुए कहा, नहीं सर, उसने मोबाइल पर फिल्में देखना बंद कर दिया है। यह जवाब मुझे 2016 के फ्लैशबैक में ले गया, जब एक मोबाइल कंपनी ने इंटरनेट को लगभग मुफ्त करते हुए उस चीज को बढ़ावा दिया, जिसे मैं डिजिटल समाजवाद कहता हूं।ये को-ऑपरेटिव सोसाइटी के चौकीदार धीरे-धीरे मुफ्त इंटरनेट का उपयोग कर फिल्में देखने लगे। फिर यह उनकी लत बन गई। भले ही उनकी तनख्वाह 8 से 10 हजार रुपए थी, लेकिन उन्होंने ईएमआई पर स्मार्टफोन खरीदे- जो उनकी तनख्वाह से कई गुना महंगे थे, क्योंकि वे मुफ्त इंटरनेट और फिल्में देखने के आदी हो चुके थे। जाने-अनजाने वे मान बैठे कि फिल्में देखने से वे रात को जागते रहेंगे। धीरे-धीरे यही धारणा उनकी नौकरी बनाए रखने के लिए ऑक्सीजन बन गई। अब 2025 पर आते हैं। जब कोई चीज ऑक्सीजन बन जाती है, तो कंपनियां उस उत्पाद की कीमतें बढ़ा देती हैं। भारत के लोगों का पसंदीदा नशा- मेरा मतलब डेटा- हाल ही में थोड़ा महंगा हो गया। लेकिन ऐसी दाम बढ़ोतरी उत्पाद की मांग घटाती नहीं है, क्योंकि वह तो ऑक्सीजन की श्रेणी में आता है। असल में तो वह महत्वाकांक्षी बन जाता है। ये चौकीदार लोग मोबाइल पर जमे रहने के लिए अपनी सुबह की चाय या वड़ा पाव तक छोड़ सकते हैं। कुछ यह कहने में गर्व महसूस कर सकते हैं कि मेरे पास पर्याप्त डेटा है और मैं प्रीमियम सेवाओं के लिए भुगतान करता हूं। यह उन स्मोकर्स की तरह है, जिनकी सिगरेट पर संशोधित जीएसटी के तहत 40फीसदी की उच्चतम स्लैब लगने वाली है। कुछ आकलन बताते हैं कि अभी 20 सिगरेट का जो पैकेट 340 रुपए का है, वो आगामी 22 सितंबर से 380 रुपए तक हो सकता है। यानी एक दिन में एक पैकेट पीने वाले को रोजाना 40 रुपए और महीने में 1200 रुपए अतिरिक्त खर्च करने होंगे।

सुंदरता हर तरफ है, इसलिए क्यों ना आज अपना 'बिन' निकालकर चलें

'अरे, यह तो ग्रे हेरॉन है, इसे जख्मी देखकर बहुत बुरा लग रहा है,' इस शुक्रवार को मैं अखबार हाथ में लिए चिल्लाया। पत्नी दौड़ती हुई आईं और पूछा, 'क्या हुआ?' मैंने उन्हें शुक्रवार के चार अखबार

दिखाए, जिनमें अलग-अलग ऐसे पक्षियों की तस्वीरें थीं, जो या तो मारे गए थे या घायल हो गए थे। इसके साथ ही गुरुवार को मुंबई के समीप ठाणे में एक हाउसिंग सोसाइटी द्वारा पेड़ों की बेतहाशा छंटाई की खबर थी। 'क्या आपको यकीन है कि ये ग्रे हेरॉन है, इग्रेट नहीं?' उन्होंने पूछा तो मैं अपनी पुरानी डायरी ले आया और उन्हें समझाया कि कैसे हेरॉन लंबी टांगों और चौड़े पंखों वाले जलचर पक्षी होते हैं। हालांकि हेरॉन, इग्रेट और बिटर्न जैसे पक्षी एक ही आर्डीडे परिवार के सदस्य हैं, लेकिन इग्रेट आमतौर पर पूरी तरह से सफेद होते हैं, जबकि हेरॉन कई रंगों के हो सकते हैं। वहीं बिटर्न की खासियत उनके घने, हल्के पीले-भूरे रंग के पंख हैं, जिन पर गहरी धारियां होती हैं। अगर मैं पक्षियों के बारे में मुझे कुछ जानकारी देने का श्रेय किसी को देना चाहूं, तो वे हॉलीवुड अभिनेता ओवेन विल्सन, स्टीव मार्टिन और जैक ब्लैक होंगे, जो मेरे मुताबिक हास्य दृश्यों में सर्वश्रेष्ठ हैं। यही कारण था कि जब वे तीनों एक साथ एक फिल्म में आए- 2011 में प्रदर्शित 'द बिग ईयर'- तो मैं उसे देखने का अवसर नहीं छोड़ पाया। फिल्म तीन पक्षी प्रेमियों की कहानी सुनाती है, और उनमें से हर कोई वही कर रहा होता है, जिसे 'द बिग ईयर' कहा गया है। वे ठान लेते हैं कि इस साल अमेरिका में किसी भी अन्य व्यक्तियों से ज्यादा पक्षी देखेंगे। और उन तीन पक्षी प्रेमियों के साथ हम दर्शक भी फिल्म में सैकड़ों पक्षी देखते हैं, और हर एक की गिनती करते हैं। लेकिन फिल्म का मर्म एक अच्छे जीवन के अर्थ के बारे में है, इस बारे में कि किसी व्यक्ति के लिए सिर्फ बड़े होने, पैसे कमाने, परिवार बनाने वगैरह से बढ़कर एक अधिक मनुष्य बनने के लिए क्या जरूरी है। फिल्म के तीनों ही नायक अपने-अपने जीवन का अर्थ समझते हैं। वे अलग-अलग चुनाव करते हैं कि क्या मायने रखता है और क्या नहीं; कौन मायने रखता है और कौन नहीं; और जीवन का वास्तविक अर्थ क्या है और क्या नहीं। फिल्म देखने के बाद के वर्षों में मैंने पक्षियों के बारे में बहुत सीखा। मुझे पता नहीं था? पक्षियों के बारे में इतना कुछ जानने को है। पहली चीज जो मैंने सीखी, वह थी बर्ड-वॉचिंग के लिए जरूरी उपकरण। फिल्म देखते हुए किसी ने कहा 'हमें अपना 'बिन' खोजना होगा।' फिल्म समाप्त होने के बाद मैंने उनसे कहा, 'माफ कीजिए, पर मैंने आपको 'बिन' कहते सुना।

पक्षियों को देखने के लिए आपको 'बिन' की क्या जरूरत है?' मुझे लगा था बिन का मतलब डस्टबिन होगा। वे जोर से हंसे और कहा कि यह बाइनोकुलर (दूरबीन) का छोटा नाम है! इसके बाद मैंने सबसे पहला जो काम किया, वो ये था कि अपना 'बिन' निकाला, जो मुझे क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने इस अखबार के लिए क्रिकेट को कवर करते समय उपहार में दिया था। बर्डिंग से हम प्रकृति में मौजूद विविधता के प्रति सजग हो पाते हैं। ज्यादातर पक्षी मूलतः एक जैसे ही हैं, खोखली हड्डियों, पंखों और पंजों से निर्मित। फिर भी प्रवास-मार्गों, भोजन के तरीकों और पंखों के संयोजन से उन्होंने जीवित रहने के अनगिनत तरीके खोज निकाले हैं। अलग-अलग तरह के घोंसले बनाने की उनकी क्षमता उनकी विशिष्ट रचनात्मकता को दर्शाती है, ठीक वैसे ही जैसे वास्तुकला का एक ही पाठ्यक्रम पढ़ने के बावजूद मनुष्य भवन-निर्माण में अलग-अलग प्रकार की सृजनात्मकता प्रदर्शित करते हैं। हालांकि मैं फिल्म के मुख्य पात्रों की तरह हर साल देखे जाने वाले पक्षियों की संख्या नहीं नोट करता, लेकिन पक्षियों के प्रति प्रेम मुझे अकसर घर से बाहर जाने को प्रेरित करता है, जिससे मुझे कम से कम बारिश के मौसम में हलका-फुलका व्यायाम करने का अवसर मिल जाता है। फंडा यह है कि हमारे चारों ओर चाहे जितनी लापरवाही क्यों न हो, दुनिया फिर भी बहुत सुंदर है। यह हमें चुनना है कि हमारे लिए क्या मायने रखता है और हमें किन लोगों से मिलना है। चूंकि आज वर्षा ऋतु का रविवार है, तो आप भी चयन करें और अपने 'बिन' के साथ घर से बाहर निकल पड़ें! एन. रघुरामन

एआई में यह एक गुण कभी नहीं आ सकेगा!

इस बार रक्षाबंधन पर 15 साल की अनामता ने 14 साल के शिवम को राखी बांधी। हमारे जैसे पाठकों के लिए इसमें कुछ भी नया नहीं है

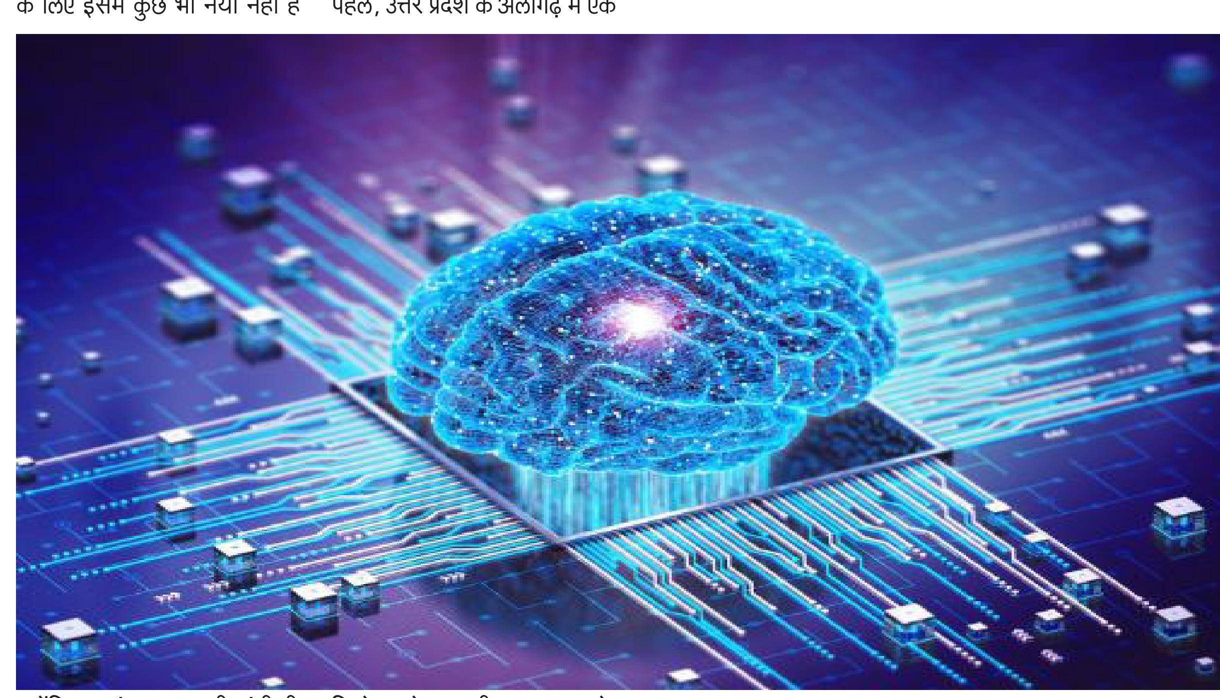

क्योंकि रक्षाबंधन पर राखी बांधी ही जाती है। लेकिन उस समय सिर्फ शिवम ही नहीं, लगभग सभी की आंखें नम हो गई थीं और शिवम के आंसू तो उसके हाथों पर गिरने लगे थे।उसने धीरे से उन्हें पोंछा, लेकिन जितना वह पोंछता, उसके आंसू उतने ही बहते जाते। वो आंसू तमाम आंसुओं की तरह थे- नम और कोमल। वो हाथ भी वही था, जिसे उसने पहले भी कई बार चूमा और सहलाया था, जब तक कि पिछले साल उसकी बहन की ब्रेन हैमरेज से मृत्यु नहीं हो गई।

परिवार का कोई भी सदस्य शिवम की आंखें पोंछने या उसके सिर या कंधे पर हाथ रखकर उसे शांत करने को आगे नहीं बढ़ पाया, क्योंकि कोई भी अपने आंसुओं को रोक नहीं पा रहा था। वो जानते थे कि रिया अब वापस लौटकर नहीं आ सकती। लेकिन अनामता के शरीर में वह रिया का ही हाथ था, जो शिवम को इस साल राखी बांध रहा था। तीन साल पहले, उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ में एक रिश्तेदार के घर की छत पर लटके हाई-टेंशन तार की चपेट में आने से अनामता का दाहिना हाथ काटना पड़ा था। उधर वलसाड के मिस्त्री परिवार ने जब अपनी बेटी रिया के अंगदान का फैसला किया और उसका हाथ अनामता को मिला।अनामता कंधे के स्तर पर हाथ का प्रत्यारोपण पाने वाली दुनिया की सबसे कम उम्र की लड़की बनी थी। पिछले सितंबर में रिया को ब्रेन-डेड घोषित किए जाने के बाद अनामता को प्रत्यारोपण के लिए एक जटिल सर्जरी से गुजरना पड़ा था। मिस्त्री परिवार इतने महीनों से जिस दर्द को महसूस कर रहा था, वह तब उस लड़की के लिए गहरे स्नेह में बदल गया, जब वो उनके बेटे की कलाई पर राखी बांधने के लिए गुजरात तक आई थी। उन्हें लगा जैसे रिया किसी और शरीर में वापस लौट आई हो!मुझे बताइए कौन-सा एआई आपमें ये भावनाएं जगा सकता है? वो तो वह भी नहीं कर सकता, जो 9 वर्षीय प्रणव दास ने चेन्नई में अपने भाई माधव दास के लिए किया था! जब माधव गिर पड़ा और उसके सिर पर टांके लगाने पड़े तो उसका सिर मुंडवाना गया था। प्रणव ने भी अपने बाल कटवा लिए, ताकि माधव खुद को अलग-थलग महसूस न करे। कितने एआई ऐसा कर सकते हैं?आज ये दोनों बच्चे लंबे बालों के साथ स्कूल आते हैं। उनके बाल करीने से बंधे होते हैं! क्योंकि दोनों भाइयों को यह अहसास हो गया है कि जिन युवा कैंसर रोगियों को इलाज के लिए सिर मुंडवाना पड़ता है, वो क्या महसूस करते हैं। उन्होंने ऐसा करने के लिए अपने प्रिंसिपल से लिखित अनुमति ली है और वे ?ऐसे बच्चों के लिए मुफ्त विग बनाने के लिए अपने बाल दान करते हैं। उनके इस प्रयास का स्कूल में खासा प्रभाव पड़ा। दूसरे बच्चे भी इसके लिए अपने बाल बढ़ाने लगे और चेरियन फाउंडेशन को मदद करने लगे, जो कि वंचित समुदायों को स्वास्थ्य-सेवाएं प्रदान करने को समर्पित एक एनजीओ है। हाल ही में इसने भारत भर में आर्थिक रूप से कमजोर कैंसर पीड़ितों को दान दिए गए विगों की संख्या के 2,000 के पार होने पर जश्न मनाया था। इसे वे 'अपने बालों को गिफ्ट देकर आत्मविश्वास का उपहार देना' कहते हैं।यह लेख सेल्वा बृंदा का उल्लेख किए बिना पूरा नहीं हो सकता। वे एक ऐसी मां हैं, जिनका प्यार असीम है। तमिलनाडु के त्रिची जिले के कत्तूर की इस गृहणी ने 22 महीनों (अप्रैल 2023 से फरवरी 2025 तक) की अवधि में 300.17 लीटर से ज्यादा ब्रेस्ट-मिल्क का दान दिया, जिससे समय से पहले जन्मे और बीमार अनगिनत नवजात शिशुओं की जान बची और एक राष्ट्रीय रिकॉर्ड भी बना। उन्होंने कहा, एक छोटा-सा योगदान भी उस बच्चे को पोषण दे सकता है, जिसे इसकी सख्त जरूरत हो। यह विचार अपने आपमें लोगों को सक्रिय होने के लिए प्रेरित कर सकता है। उनकी कहानी हमें एक बार फिर यह याद दिलाती है कि करुणा कैसे कोमल जीवन को बदल सकती है। फंडा यह है कि एआई किसी फैक्टरी या दफ्तर में तो सब कुछ कर सकता है, लेकिन यकीन मानिए, वो वह सब कभी नहीं कर सकता, जो मानवीय करुणा कर सकती है। अगर आप वाकई एआई को हराना चाहते हैं, तो अपने अंदर करुणा के गुण को अलग-अलग तरह से जितना हो सके बढ़ाएं। एन. रघुरामन

लव स्टोरी-5

पटना। लालू की बेटी से शादी करना चाहते थे पप्पू यादव,टेनिस खेलती सिख लड़की को देख दिल दे बैठे

पटना। पप्पू यादव पटना की बांकीपुर जेल में बंद थे। जेल से ही सटा एक मैदान था, जहां लड़के खेलने आया करते थे।

इसी समय पप्पू की पहचान विक्की नाम के एक सिख लड़के से हो गई। 1990 के दशक में राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव की पहचान सीमांचल में एक दबंग और बाहुबली नेता की थी। सिर्फ 24 साल की उम्र में 1990 में पप्पू सिंघेश्वर से विधायक और फिर 1991 में पूर्णिया से सांसद बन गए थे। पप्पू के लालू प्रसाद यादव से बहुत करीबी रिश्ते थे। पप्पू अक्सर लालू के घर आते। लालू के परिवार से भी मिलते। इन्हीं मुलाकातों के बीच पप्पू को लालू की बड़ी बेटी मीसा भारती से प्यार हो गया। उन्होंने सीधे लालू यादव से मीसा का हाथ मांग लिया। सीनियर जर्नलिस्ट संकर्षण ठाकुर की किताब 'द ब्रदर्स बिहारी' के मुताबिक लालू यादव, पप्पू यादव को दामाद के रूप में स्वीकार नहीं कर सकते थे। लालू ने पप्पू और मीसा की शादी से साफ इनकार कर दिया। यहां तक कि पप्पू से सारे रिश्ते भी खत्म कर दिए। बाद में 1999 में लालू ने मीसा की शादी इंजीनियर शैलेश कुमार से करा दी। जेल में लड़की की फोटो देख प्यार हुआ- 1991 में पप्पू यादव आरक्षण विरोधी आंदोलन में शामिल रहे थे। उन पर आंदोलन के दौरान हिंसा के आरोप लगे और नेशनल सिक्योरिटी एक्ट के तहत जेल जाना पड़ा। हालांकि, जेल में भी पप्पू यादव को खास सुविधाएं मिली हुई थीं। वो पास के मैदान में खेलने जा सकते थे और जेल सुपरिटेंडेंट के फोन से बाहर बात भी कर सकते थे। जेल से सटे मैदान में पप्पू यादव की दोस्ती विक्की से हुई और फिर उन्होंने विक्की की बहन रंजीत की तस्वीर देखी। पप्पू यादव जेलर के फोन से रंजीत के घर फोन करने लगे। पहले तो सिर्फ आवाज सुनने के लिए ब्लैंक कॉल करते, फिर रंजीत से इधर-उधर की बातें करना भी शुरू कर दीं। 'बिहाइंड बार्सः प्रिजन टेल्स ऑफ इंडियाज मोस्ट फेमस' के मुताबिक यह

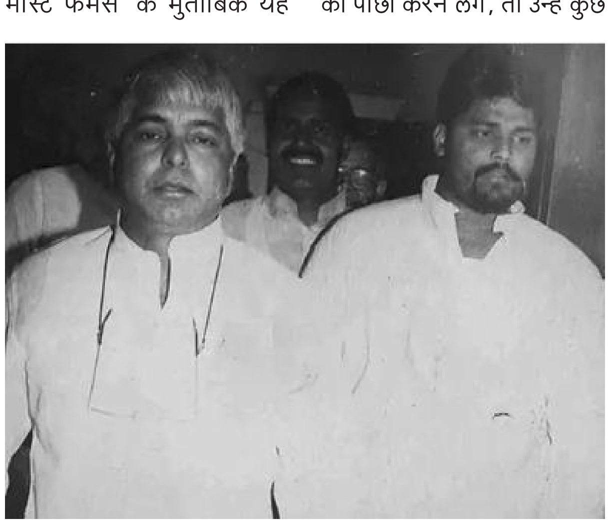

सिलसिला साढ़े तीन महीने तक चला। उसके बाद पप्पू को जमानत मिल गई।एक दिन पप्पू को पटना क्लब में हो रहे एक स्पोर्ट्स इवेंट में बतौर मुख्य अतिथि बुलाया गया। रंजीत ने भी इस इवेंट में हिस्सा लिया था। पप्पू ने जब

पहली बार 17 साल की रंजीत को टेनिस खेलते देखा तो वहीं अपना दिल हार बैठे। 'बिहाइंड बार्सः प्रिजन टेल्स ऑफ इंडियाज

मोस्ट फेमस' के मुताबिक पप्पू यादव से पहले रंजीत उनकी फोटो देख चुकी थीं, लेकिन उनकी भावनाएं पप्पू से अलग थीं। एक बार पप्पू यादव को बोटेनिकल गार्डन के गेस्ट हाउस में नजरबंद किया गया था। अखबार में इसकी खबर छपी थी। रंजीत ने पेपर में फोटो देखकर अपनी मां से कहा था, 'देखो कितना मोटा लड़का है।' कॉलेज के दिनों से ही पप्पू यादव की छवि एक दबंग की थी। विधायक बनने के बाद तो उनकी सीमांचल के कई गुटों से दुश्मनी भी हो गई। पप्पू को जान से मारने की धमकियां मिलने लगीं। इसलिए पहली बार विधायक बनने के बाद से वे हमेशा अपने साथ सिक्योरिटी लेकर चलते। पप्पू रंजीत के इतने दीवाने हो गए कि हर दिन उन्हें देखना चाहते। रंजीत पटना के मगध कॉलेज में पढ़ाई करतीं और पटना क्लब टेनिस की प्रैक्टिस

करने जातीं। जब भी उनका कोई मैच होता तो पप्पू बिना सिक्योरिटी के ही मोटरसाइकिल से उन्हें देखने पहुंच जाते। रंजीत को अंदाजा नहीं था कि पूर्णिया के सांसद को उनसे प्यार हो गया है। पप्पू यादव एक इंटरव्यू में बताते हैं- 'ढाई-तीन साल तक हमारी रंजीता जी से कोई बात ही नहीं हुई। उन्हें हमारे बारे में कुछ पता ही नहीं था।'

रंजीत ने शादी से इनकार किया, तो पप्पू ने नींद की गोलियां खा लीं। जब पप्पू आए दिन रंजीत का पीछा करने लगे, तो उन्हें कुछ ठीक नहीं लगा। रंजीत को भी आस-पास वालों से पता चल गया था कि पप्पू उन्हें पसंद करते हैं। रंजीत एक इंटरव्यू में बताती हैं कि विक्की से बात करने के बहाने वे घर पर कॉल करते, लेकिन कॉल उसी समय करते जब उन्हें पता होता कि विक्की घर पर नहीं है और मैं ही कॉल उठाऊंगी। पप्पू की इन हरकतों से रंजीत को समझ आने लगा था कि वे क्या चाहते हैं, लेकिन रंजीत के मन में प्यार जैसी कोई फीलिंग नहीं थी। एक दिन उन्होंने सीधे-सीधे पप्पू से बात की और उन्हें बता दिया कि हम दोनों का धर्म अलग है, इसलिए आगे कुछ नहीं हो सकता, लेकिन पप्पू ने तो रंजीत से ही शादी का मन बना लिया था। पप्पू यादव अपनी आत्मकथा, 'द्रोहकाल का पथिक' में बताते हैं कि बार-बार कोशिश करने पर भी रंजीत, उनके प्रपोजल को ठुकराती रहीं तो एक दिन आवेश में उन्होंने बहुत सारी नींद की गोलियां खा लीं। पप्पू को

पटना मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराना पड़ा। खैर, इससे पप्पू की जान तो नहीं गई, लेकिन रंजीत का दिल पिघल गया।रंजीत के मान जाने के बाद भी पप्पू यादव के लिए शादी की राह आसान नहीं थी। दोनों के धर्म तो अलग थे ही, ऊपर से रंजीत के पिता गुरुद्वारे के मुख्य ग्रंथी थे। उनकी मां को भी चिंता थी कि बेटी कैसे एक हिंदू परिवार में घुल-मिल पाएगी। हालांकि, पप्पू के परिवार की तरफ से कोई आपत्ति नहीं थी। वे एक इंटरव्यू में बताते हैं, 'हमारे पिता बहुत खुले विचार वाले थे। उन्हें दूसरी जाति या धर्म में शादी से कोई समस्या नहीं थी।' एक बार पप्पू, रंजीत के पिता को मनाने के लिए उनसे बात करने पहुंचे तो रंजीत के पिता ने उनके सामने एक शर्त रख दी कि शादी करनी है तो उन्हें सिख धर्म अपनाना होगा। दरअसल, रंजीत के पिता सोच रहे थे ऐसी शर्त रख देंगे तो पप्पू पीछे हट जाएंगे, लेकिन पप्पू धर्म बदलने को भी तैयार हो गए। रंजीत की मां ने कहा कि बेटी बिहार में नहीं दिल्ली में रहेगी। पप्पू इस बात पर भी राजी हो गए। सभी शर्तें मानने पर भी पप्पू को रंजीत से शादी की इजाजत नहीं मिल पाई। जब रंजीत के पिता ने शादी से साफ इनकार कर दिया तो पप्पू उनके भाई के पास गए और कहा- हम रंजीत से प्यार करते हैं और शादी करना चाहते हैं। भाई ने तंज कसते हुए कहता है, 'प्यार करते हो तो क्या? ऐश्वर्या राय से प्यार करोगे तो क्या उससे शादी हो जाएगी।' इसके बाद पप्पू रंजीत के दूसरे भाई से भी बात करने पहुंचे, लेकिन उन्होंने भी शादी से साफ इनकार कर दिया। 'द्रोहकाल का पथिक' में पप्पू बताते हैं कि जब उनके पास रंजीत के परिवार को मनाने का कोई रास्ता नहीं बचा तो वे राज्यसभा सांसद एस. एस. अहलूवालिया से मिलने दिल्ली पहुंच गए। अहलूवालिया भी सिख थे। रंजीत के परिवार में उनका खूब सम्मान था। आखिरकार उनके कहने पर रंजीत के माता-पिता शादी के लिए मान गए। रंजीत ने पप्पू को धर्म बदलने से मना किया और कहा कि दोनों अपना-अपना धर्म मानेंगे और एक-दूसरे के धर्म का सम्मान करेंगे।पप्पू और रंजीत के रिश्ते की शुरुआत से शादी तक सभी चीजें बड़े फिल्मी अंदाज में हुईं। जब रंजीत के घर वाले शादी के लिए मान गए, तो पूर्णिया के एक गुरुद्वारे में दोनों की शादी का कार्यक्रम तय हुआ। शादी के लिए रंजीत का परिवार एक चार्टर्ड फ्लाइट में अमृतसर से पूर्णिया आ रहा था।'द्रोहकाल का पथिक' में पप्पू बताते हैं कि रंजीत का परिवार शादी के समय तक नहीं पहुंचा। सभी परेशान होने लगे। यह चिंता भी थी कि इतनी मुश्किल से शादी जुड़ने के बाद दुल्हन का परिवार आखिर आया क्यों नहीं। जब वे लोग पहुंचे तो पता चला कि प्लेन उड़ा रहा पायलट रास्ता भटक गया था, इसलिए उन्हें पूर्णिया पहुंचने में देर हो गई। आखिरकार 6 फरवरी, 1994 को पप्पू यादव और रंजीत की शादी हो गई। शादी में पप्पू ने सिर पर गुलाबी रंग की पगड़ी और रंजीत ने लाल रंग का जोड़ा पहना था। शादी के लिए पूरा पूर्णिया सजा था। वीआईपी मेहमानों से लेकर आम लोगों तक के लिए इंतजाम किए गए थे। उस समय बिहार के मुख्यमंत्री रहे लालू प्रसाद यादव भी शादी में शामिल होने आए थे।शादी के एक साल बाद ही रंजीत रंजन भी पप्पू की तरह राजनीति में आ गईं। उन्होंने सुपौल सीट से बिहार विधानसभा का चुनाव लड़ा। हालांकि, इसमें उनकी हार हुई। इसके बाद वह पप्पू यादव के चुनावी कैंपेन में उनका साथ देती रहीं। पप्पू यादव रंजीत को एक अच्छी वक्ता और ईमानदार नेता मानते हैं। 2004 में लोक जनशक्ति पार्टी के टिकट से रंजीत ने सहरसा से लोकसभा चुनाव लड़ा और पहली बार सांसद बनीं।2008 में पप्पू यादव को 1998 के सीपीएम नेता अजीत सरकार हत्याकांड मामले में सीबीआई कोर्ट ने उम्रकैद की सजा सुना दी। वे पहले पटना के बेऊर जेल में रहे। बाद में दिल्ली की तिहाड़ जेल शिफ्ट किए गए। 2013 में हाईकोर्ट ने सबूतों की कमी के चलते उन्हें रिहा कर दिया।इस बीच 2009 में रंजीत ने सुपौल से कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ा, लेकिन हार गईं। 2014 में सुपौल से उनकी जीत हुई और दूसरी बार सांसद बनकर लोकसभा पहुंचीं। इस बार पप्पू भी आरजेडी के टिकट पर माधोपुर से चुनाव जीतकर संसद पहुंचे। अभी रंजीत राज्यसभा में छत्तीसगढ़ से कांग्रेस सांसद हैं और पप्पू लोकसभा में पूर्णिया से निर्दलीय सांसद।पप्पू और रंजीत की शादी को 30 साल से ज्यादा हो गए हैं। उनका एक बेटा और बेटी है। पिछले साल रंजीत ने बताया था कि वे दोनों डेढ़-दो साल से अलग रह रहे हैं। दरअसल, अक्टूबर 2024 में पप्पू यादव को लॉरेंस बिश्नोई गैंग की तरफ से जान से मारने की धमकी मिली थी। इसके बारे में जब रंजीत से पूछा गया तो उन्होंने बताया कि उनके और पप्पू यादव के बीच काफी मतभेद थे और अब वे अलग रह रहे हैं। इस धमकी से उनका और उनके बच्चों का कोई संबंध नहीं है।

राजस्थान में इतिहास की दूसरी सबसे ज्यादा बारिश,कुल्लू में लैंडस्लाइड, 1 की मौत; मथुरा में बांके-बिहारी मंदिर से 100 मीटर यमुना का पाना

लखनऊ। राजस्थान में इस मानसून सीजन राज्य के इतिहास की दूसरी सबसे ज्यादा बारिश 693.1एमएम हुई है। 108 साल पहले 1917 में 844.2एमएम बारिश दर्ज हुई थी। अब तक राज्य के 63फीसदी बांध फुल हो चुके हैं। बीते तीन महीने की बात करें तो जून में 125.3एमएम , जुलाई में 290एमएम और अगस्त में 184एमएम बारिश रिकॉर्ड हुई। हिमाचल के कुल्लू में सोमवार देर रात एक घर पर लैंडस्लाइड हुई। इसमें एक ही परिवार के 8 लोग दब गए। जिनमें से 4 लोगों की मौत हो गई। 3 लोग बचाए गए हैं, एक की तलाश जारी है। यूपी में गंगा, यमुना समेत सभी बड़ी नदियां उफान पर हैं। हथिनी कुंड बैराज से पानी छोड़े जाने के बाद मथुरा के वृंदावन में हालात बिगड़ गए हैं। 50फीसदी इलाका बाढ़ प्रभावित है। राधा वल्लभ मंदिर में पानी भर गया। वृंदावन का परिक्रमा मार्ग पूरी

तरह डूब चुका है। बांके बिहारी मंदिर से यमुना की दूरी 600 मीटर है, लेकिन अब महज 100 मीटर रह गई। वर्तमान में प्रदेश में लगभग 48 जिले बाढ़ की चपेट में है। गुजरात के अहमदाबाद में सोमवार रात बाइक सवार कपल पानी भरी सड़क से गुजर रहा था। रास्ते में गड्ढे में करंट का तार था, जिसकी चपेट में आने से दोनों की मौत हो गई। घटना का वीडियो भी सामने आया है। हरियाणाः अगले तीन दिन के मौसम का हाल 10 सितंबर : मौसम विभाग के अनुसार 10 सितंबर को पंचकूला और यमुनानगर में अधिकतर एरिया में हल्की बारिश की संभावना है। अंबाला, कुरुक्षेत्र, करनाल, पानीपत, सोनीपत और कैथल में कहीं-कहीं हल्की बारिश के आसार हैं। जींद, हिसार, सिरसा, फतेहाबाद, भिवानी, रोहतक, झज्जर, चरखी दादरी, महेंद्रगढ़, रेवाड़ी, मेवात, पलवल, गुरुग्राम, फरीदाबाद में मौसम साफ रहने का अनुमान है। 11 सितंबर : पंचकूला और यमुनानगर में अधिकतर एरिया में हल्की बारिश की संभावना है। अंबाला, कुरुक्षेत्र, करनाल, पानीपत, सोनीपत और कैथल में कहीं-कहीं हल्की बारिश के आसार हैं। जींद, हिसार, सिरसा, फतेहाबाद, भिवानी, रोहतक, झज्जर, चरखी दादरी, महेंद्रगढ़, रेवाड़ी, मेवात, पलवल, गुरुग्राम, फरीदाबाद में मौसम साफ रहने का अनुमान है। 12 सितंबर : पंचकूला, अंबाला और यमुनानगर में अधिकतर एरिया में बारिश के आसार हैं तो वहीं कुरुक्षेत्र, कैथल, करनाल, जींद, पानीपत और सोनीपत में कहीं-कहीं हल्की बारिश की संभावना है। इसके अलावा बाकी जिलों में मौसम साफ रहने का अनुमान है।आगरा में बाढ़ है। यमुना नदी का पानी शहर की सड़कों पर भरा है। ताजमहल को जाने वाली रोड पर 2 से 3 फीट तक भरा है। पानी में फंसकर कई गाड़ियां बंद हो गईं। पानी में घुसकर लोग बाइक पैदल घसीटते दिखे।

अमेरिकी टैरिफ- कालीन कारीगर लगा रहे ठेला,टेक्सटाइल का 2000 करोड़ का ऑर्डर होल्ड, 6 लाख लोगों की नौकरी खतरे में

भदोही। औराई तहसील में रहने वाले राजेश कालीन के पुराने कारीगर हैं। वो पिछले 10 साल से कालीन में गलीचे (बुनाई-कढ़ाई) का काम कर रहे थे। 18 अगस्त को उन्हें काम से निकाल दिया गया। हरिश्चंद लखनऊ में छोटे बेटे का इलाज करवा रहे थे, इस वक्त उन्हें पैसों की जरूरत थी, लेकिन नौकरी

जाने से उन्हें दिक्कतें उठानी पड़ रही हैं। अब पैसा जुटाने के लिए वो भदोही बाजार में केले का ठेला लगा रहे हैं। राजेश कहते हैं, 'कंपनी में मेरे जैसे 60-70 लोग काम कर रहे थे। इनमें से 40 को अचानक काम से निकाल दिया गया। हमने वजह पूछी तो सुपरवाइजर कहने लगे कि अभी मंदी है, विदेश में ऑर्डर रोक दिया गया है। जब नया काम आएगा, तब बुलाएंगे। कंपनी वाले बोल रहे हैं कि अभी 5-6 महीने तक कोई काम नहीं है।' ऐसे ही दूसरा मामला हैं जौहरी बाजार में कीमती पत्थर तराशने वाले आसिफ भी काम छिनने के डर में जी रहे हैं। वे कहते हैं, 'जब से अखबार में अमेरिकी टैरिफ के बारे में पढ़ा है, यही डर है कि कहीं नौकरी चली गई तो फिर क्या करेंगे। ये हमारा खानदानी काम है। हमारे पास दूसरा कोई हुनर नहीं है, कोई नया हुनर सीखने की उम्र भी नहीं रही।' भारतीय सामानों पर 27 अगस्त को अमेरिका ने 50फीसदी टैरिफ लगा दिया। इसका असर अब उन भारतीय कारोबार पर दिखने लगा है, जिनका माल अमेरिका एक्सपोर्ट होता था। टैरिफ लगने से भारत के प्रोडक्ट महंगे हो जाएंगे। लिहाजा अमेरिकी बाजार में उनकी डिमांड कम होना तय है। एक्सपोर्ट रुकने से प्रोडक्शन घटेगा। लिहाजा इससे जुड़े लोगों की नौकरियां खतरे में आ जाएंगी।रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर उर्जित पटेल के मुताबिक, भारत से अमेरिका एक्सपोर्ट होने वाले 55फीसदी सामानों पर टैरिफ का असर दिख रहा है। टेक्सटाइल का 2000 करोड़ का ऑर्डर होल्ड है। हमने अमेरिका एक्सपोर्ट होने वाले जेम्स एंड ज्वेलरी और कारपेट इंडस्ट्री की जमीनी पड़ताल की है। हमने कारीगरों और कारोबारियों से बात कर समझा कि आखिर अमेरिकी टैरिफ का इन पर कितना असर हुआ है।इजाज अहमद मंसूरी कालीन बुनकर हैं। वो भदोही की 'रग्स टेक्स्चर' कारपेट कंपनी में डेली वेज पर काम कर रहे थे, लेकिन मजदूरों की छंटनी में उनका नाम भी आ गया। अचानक काम छूटने से इजाज और उनके परिवार को काफी तकलीफ उठानी पड़ रही

है। इजाज ने बताया, '50फीसदी टैरिफ लगने के बाद भदोही की कारपेट मिलें बंद हो गई हैं। काम रुका पड़ा है। हमारे मालिक ने बताया कि ऑर्डर आने बंद हो गए हैं, इसलिए तुम लोग कुछ दिन कोई दूसरा काम पकड़ लो। फिलहाल हम लोग काम की तलाश में जगह-जगह भटक रहे हैं।' 'हम पीढ़ी-दर-पीढ़ी कालीन बनाते आ रहे हैं। जब से मैंने होश संभाला, इसी धंधे से जुड़ गया। कारपेट बनाने के अलावा हमें कोई दूसरा काम भी नहीं आता। अब यही सोचकर परेशान हैं कि 6 महीने तक कैसे घर चलाएंगे। हमारी सरकार से यही गुजारिश है कि जल्द से जल्द टैरिफ के मसले को सुलझाएं, ताकि हमारी जिंदगी सुकून से चल सके।'काका टेक्सटाइल्स कंपनी में मजदूरी करने वाले कारपेट वर्कर रौशन कुमार कहते हैं, 'भदोही में लाखों की संख्या में मजदूर कालीन कारखानों में काम करते हैं। हर दिन जितनी कमाई होती है, उन्हीं पैसों से घर चलता है। हमारी कंपनी में ऐसे बहुत लोग है, जो अब कारपेट का काम छोड़कर दिहाड़ी मजदूरी या ठेला लगा रहे हैं। अगर आने वाले दिनों में ये दिक्कत दूर नहीं हुई, तो हमें न चाहते हुए भी कोई दूसरा काम करना पड़ेगा।'ऑल इंडिया कारपेट मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन एआईसीएमए के मुताबिक, देश में हर साल 17 हजार करोड़ की कीमत के कालीन एक्सपोर्ट होते हैं। इसमें यूपी के भदोही-मिर्जापुर कालीन उद्योग की ह?स?सेदारी 60फीसदी है। यहां कारपेट के एक्सपोर्ट से होने वाला सालाना बिजनेस लगभग 10 हजार करोड़ रुपए का है। अमेरिकी टैरिफ बढ़ने से यहां के कालीन उद्योग में मंदी जैसे हालात बन गए हैं। इसका सबसे ज्यादा असर इस बिजनेस से जुड़े 20 लाख लोगों पर पड़ा है। एआईसीएमए के सेक्रेटरी और भदोही के कालीन वर्कर्स के हित में काम करने वाले एनजीओ कालीन निर्यात संवर्धन के मेंबर पीयूष बरनवाल टैरिफ बढ़ाए जाने की तुलना औद्योगिक महामारी से करते हैं। पीयूष कहते हैं, 'इस वक्त देशभर में कारपेट सेक्टर से जुड़ा 2000 करोड़ का माल रुका हुआ है। इसमें 500 करोड़ रुपए का स्टॉक अकेले भदोही-मिर्जापुर क्षेत्र का है। इससे कच्चे माल की खरीदारी से लेकर कालीन की फिनिशिंग तक का काम प्रभावित हो रहा है।' 'अक्टूबर से दिसंबर तक का समय कालीन एक्सपोर्ट के लिए सबसे मुफीद माना जाता है, क्योंकि अक्टूबर में जो ऑर्डर भेजा जाता है, वो विदेशी कंपनियां क्रिसमस के समय बेचती हैं। ऐसे में पीक सीजन आने से पहले ही 50फीसदी टैरिफ इंपोज होने से इस साल कारपेट बिजनेस को 6 हजार करोड़ का नुकसान उठाना पड़ सकता है।' कालीन का बिजनेस 98फीसदी एक्सपोर्ट के बलबूते चलता है, लिहाजा टैरिफ बढ़ने से नए ऑर्डर न मिल पाने का असर अभी से दिखना शुरू हो गया है। अमेरिका ने 30 जुलाई को पहली बार 25फीसदी टैरिफ बढ़ाया था, जिसके बाद से यूएस से मिलने वाले कारपेट ऑर्डर्स में लगातार कमी आई है। भदोही का कालीन उद्योग विदेशी बाजारों पर निर्भर है, जिसमें से 70फीसदी अकेले अमेरिका को एक्सपोर्ट किया जाता है। अप्रैल में ट्रम्प सरकार के 10फीसदी टैरिफ बढ़ाने के कारण पहले से ही ये सेक्टर मुश्किल दौर से गुजर रहा था। वहीं, 30 जुलाई को 25फीसदी, फिर 27 अगस्त को 50फीसदी टैरिफ कर दिया गया। इससे छोटे कारखानों में काम बिल्कुल बंद है। जो बड़े एक्सपोर्टर्स हैं, वो छंटनी के बाद बचे मजदूरों को आधी पगार देकर काम करा रहे हैं। भदोही में कालीन के बड़े एक्सपोर्टर्स पर टैरिफ का क्या असर पड़ा है? ये जानने के लिए हम यहां के सबसे बड़े एक्सपोर्ट हाउस 'काका-ओवरसीज लिमिटेड' पहुंचे। कंपनी में बना 100फीसदी कालीन अमेरिका एक्सपोर्ट किया जाता है। फर्म के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर यादवेंद्र रॉय कहते हैं, 'डोनाल्ड ट्रम्प ने राजनीतिक दबाव बनाने के लिए भारत पर जो 'टैरिफ बम' से अटैक किया है, इससे बड़ी त्रासदी भदोही समेत देश की कारपेट इंडस्ट्री के लिए नहीं हो सकती। यूएस के बड़े ऑर्डर रोक दिए गए हैं। इससे घाटा झेल रही कंपनियां वर्कर्स को हटाने पर मजबूर हैं।' 'टैरिफ बढ़ने से मजदूरों को नुकसान न हो, इसके लिए हमने रोटेशन के हिसाब से उन्हें बुलाना शुरू किया है। हम वर्कर्स को स्टेप-बाय-स्टेप 20-20 दिन की छुट्टियों पर भेज रहे हैं।'अमेरिका और गल्फ कंट्रीज में 2008 से कारपेट एक्सपोर्ट कर रही 'रग्स टैक्स्चर' कंपनी के डायरेक्टर अमजद अहमद कहते हैं, 'कालीन एक्सपोर्ट करने के प्रोसेस में 3 जगह पैसा इन्वेस्ट होता है, पहलाः शिपमेंट, दूसराः प्रोडक्शन और तीसराः परचेजिंग पर।' 'लिहाजा टैरिफ बढ़ने से जो सबसे बड़ी समस्या सामने आ रही है वो पैसों के फ्लो को लेकर है। पुराने ऑर्डर का माल घाटा झेल कर अमेरिका भेजा जा रहा है। दोनों देशों के बीच व्यापारिक रिश्ते पहले जैसे नहीं हैं, इसलिए जो शिपमेंट विदेश जा रहा है, उसका पेमेंट कब होगा और कैसे होगा, ये भी क्लियर नहीं है।' 'कारोबार की जो स्थिति है, वो किसी जंग से कम नहीं है। दो देशों के बीच वॉर होती है, तो वो साल, 6 महीने या 2 साल में खत्म हो जाती है। इस लड़ाई ने तो कालीन सेक्टर से जुड़े लोगों को इतना कमजोर कर दिया है कि वो अब दोबारा उठकर खड़े नहीं हो सकते हैं।'अमेरिकी टैरिफ बढ़ने और कालीन बिजनेस प्रभावित होने पर भदोही के विधायक जाहिद बेग नाराजगी जताते हैं। बेग कहते हैं, 'टैरिफ बढ़ने के बाद भदोही के कारपेट सेक्टर को बहुत नुकसान हुआ है। यहां कई हैंडलूम बंद पड़े हैं, जो एक-दो चल रहे हैं उनमें पुराना बचा हुआ स्टॉक बनवाया जा रहा है।' 'यहां की स्थिति को लेकर हमने विधानसभा में सीएम योगी से बात की है। कारपेट सेक्टर को राहत पैकेज भिजवाने के लिए हम पीएम मोदी को भी चिट्ठी लिखेंगे। जिस रफ्तार से भदोही में मजदूर वर्ग की नौकरी जा रही है।

कारखानों पर सन्नाटा है, अगर सरकार जल्द से जल्द बेलआउट पैकेज नहीं देती है, तो यहां का कालीन कारोबार 50फीसदी ही बचेगा।' जयपुर के जौहरी बाजार की गलियों में वर्कशॉप पर बैठे आसिफ खान पुखराज पत्थर को करीने से तराशते मिले। आसिफ के पास ये खानदानी हुनर है। वो सामान्य से दिखने वाले रंगीन पत्थर को तराशकर कीमती जवाहरात बना देते हैं। आसिफ पिछले 35 साल से ये काम कर रहे हैं। वे कहते हैं, 'इस काम में हर दिन एक नई सीख मिलती है इसलिए ऐसा नहीं कह सकता कि मैं पूरी तरह सीख चुका हूं।'आसिफ कहते हैं, 'पहले भी जब जवाहरात के काम में मंदी आई तो उनके कई जानने वालों ने ये काम छोड़ दिया था। कुछ फैक्ट्रियों में मजदूरी करने लगे तो कई गार्ड की नौकरी और ई-रिक्शा चलाने लगे। एक बार जो कारीगर जवाहरात का काम छोड़कर चए गए, वो फिर इस पेशे में कभी नहीं लौटे।' आसिफ के मुताबिक, हुनर और मेहनत के दम पर वो एक महीने में करीब 25 हजार रुपए कमा लेते हैं।'अमेरिका में क्रिसमस का त्योहार एक बड़ा मौका होता है, जिसके लिए जुलाई से ऑर्डर मिलने शुरू हो जाते हैं। सितंबर-अक्टूबर तक मैन्युफैक्चरिंग शुरू हो जाती है। अब अमेरिका का टैरिफ लगने के बाद ऑर्डर कैंसिल हो रहे हैं।' जेम्स और ज्वेलरी इंडस्ट्री में जयपुर दुनिया की सबसे बड़ी मंडी है। यहां ऐमरल्ड, रूबी, सफायर जैसे कीमती पत्थरों की कटिंग और पॉलिशिंग होती है। यहां के सीतापुरा इलाके में स्पेशल इकोनॉमिक जोन है, जहां नगों और ज्वेलरी की सैकड़ों वर्कशॉप हैं। सिर्फ यहीं करीब 1 लाख लोगों को काम मिलता है। अमेरिका जेम्स एंड ज्वेलरी (रत्न और आभूषण) के एक्सपोर्ट के मामले में भारत एक बड़ा सप्लायर है। फाइनेंशियल ईयर 2023-24 (एफ वाय 24) में भारत का कुल जेम्स एंड ज्वेलरी एक्सपोर्ट लगभग 32.85 बिलियन अमेरिकी डॉलर था, जिसमें अमेरिका का हिस्सा 30.28फीसदी यानी 9.95 बिलियन डॉलर यानी 8,759 करोड़ रुपए का था। 2024 में ये आंकड़ा 11.58 बिलियन डॉलर यानी 10,194 करोड़ रुपए तक पहुंच गया, जो अमेरिका के कुल जेम्स एंड ज्वेलरी इम्पोर्ट (89.12 बिलियन डॉलर) का 12.99फीसदी है।फेडरेशन ऑफ राजस्थान एक्सपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष राजीव अरोड़ा कहते हैं कि अमेरिकी टैरिफ का असर तुरंत दिखना शुरू हो गया है। इसकी वजह ये है कि सितंबर-अक्टूबर में हमारे पास क्रिसमस के लिए सबसे बड़े ऑर्डर्स आते हैं, लेकिन अब सारे ऑर्डर्स होल्ड पर चले गए हैं। अमेरिका जाने वाले शिपमेंट भी बंद हो चुके हैं, अगर कोई माल भेजना भी चाहे तो अमेरिका कंटेनर ही नहीं जा रहे हैं। अगर अमेरिकी टैरिफ जारी रहा तो इंडस्ट्री का एक्सपोर्ट घटकर आधा हो जाने की आशंका है, अगर ऐसा हुआ तो लाखों लोग बेरोजगार हो जाएंगे। टैरिफ का असर इंडस्ट्री पर कैसे होगा? इसके जवाब में राजीव समझाते हैं, 'ज्वेलरी पर 2फीसदी से लेकर 10फीसदी तक अलग-अलग टैरिफ लगता था। अब जो 50फीसदी टैरिफ लगा है वो भी इसमें जुड़ जाएगा।' 'मतलब जिस 50 हजार की ज्वेलरी पर पहले 2फीसदी के हिसाब से 1 हजार रुपए टैरिफ लगता था, तब वो 51 हजार में बिकती थी, अब वही ज्वेलरी करीब 76 हजार रुपए में बिकेगी। इसकी वजह से हमारे प्रोडक्ट कारोबारी प्रतिस्पर्धा में पिछड़ जाएंगे।' सिर्फ राजस्थान से एक साल में जेम्स एंड ज्वेलरी इंडस्ट्री से 18 हजार करोड़ रुपए का एक्सपोर्ट होता है। जयपुर के जौहरियों के लिए अमेरिका एक्सपोर्ट का सबसे बड़ा बाजार है। हर साल जयपुर से अमेरिका के लिए करीब 3200 करोड़ रुपए की जेम्स और ज्वेलरी एक्सपोर्ट होती है। वहीं अगर रोजगार की बात करें तो राजस्थान में जेम्स और ज्वेलरी इंडस्ट्री से करीब 2 लाख लोगों को रोजगार मिलता है। अगर टैरिफ जारी रहा तो यहां स्थायी तौर से नौकरी जाने का खतरा गहरा जाएगा। भारत के साथ ही बांग्लादेश, पाकिस्तान, नेपाल, श्रीलंका, थाईलैंड जैसे देशों में भी ज्वेलरी का काम होता है, लेकिन भारत की तुलना में उन देशों पर काफी कम टैरिफ है। ऐसे में भारतीय जेम्स कारोबारियों को ये डर है कि उनका दशकों से बना-बनाया कारोबार कहीं इन देशों के एक्सपोर्टर ना हथिया लें। जेम्स और ज्वेलरी में काम करने वाले कुछ कारोबारियों ने नाम न लिखने की शर्त पर बाताया, 'अमेरिकी टैरिफ की वजह से हालात बहुत खराब हैं। हमें सबसे बड़ा डर ये है कि हम अमेरिका में अपना

कस्टमर न खो दें। अगर ऐसा होता है तो हमारा धंधा हमेशा के लिए चौपट हो जाएगा।'

'इसलिए अब हम अपनी मैन्युफैक्चरिंग यूनिट थाईलैंड, वियतनाम, दुबई, बांग्लादेश और श्रीलंका जैसे देशों में शिफ्ट करने के बारे में गंभीरता से सोच रहे हैं। इन देशों में भारत की तुलना में काफी कम टैरिफ है। आगे आने वाले वक्त में भारत पर टैरिफ कम होगा, इसकी हमें कम ही उम्मीद है।'कारोबारी कहते हैं कि अगर ऐसा हुआ तो इससे 'मेक इन इंडिया' और भारत को 5 ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी बनाने के सपने को भी झटका लग सकता है। हम चाहते हैं कि हम अपने देश में ही मैन्युफैक्चरिंग करें और यहीं कारोबार करें, लेकिन टैरिफ की वजह से दूसरे देश में शिफ्ट करने के अलावा हमारे पास कोई रास्ता नहीं है। जयपुर के दिग्गज सर्राफा कारोबारी और जयपुर चेंबर एंड कॉमर्स इंडस्ट्री के सेक्रेटरी अजय काला कहते हैं कि सरकार को अभी कारोबारियों को सहारा देने का वक्त है। सरकार को ब्याज में राहत दी जानी चाहिए, कर्ज की मात्रा बढ़ाई जानी चाहिए। एक साल का लोन मोरेटोरियम मिलना चाहिए। इसके अलावा यूरोप, लैटिन अमेरिका जैसे देशों में जो ट्रेड एग्रीमेंट अधूरे पड़े हैं, उन्हें लागू करके शुरू करना चाहिए, ताकि हमारे लिए कारोबार के नए मार्केट खुलें। वहीं, राजीव अरोड़ा कहते हैं कि सरकार को स्पेशल इकोनॉमिक जोन में मैन्युफैक्चर हुए सामान को डोमेस्टिक मार्केट में बेचने की परमिशन देनी चाहिए।

नेपाल हिंसा देख भावुक हुईं मनीषा कोइराला,खून से सने जूते की तस्वीर शेयर कर कहा- जनता की आवाज का जवाब गोली से मिल रहा है

मुंबई। नेपाल सोशल मीडिया बैन के खिलाफ प्रदर्शन से शुरू हुआ विरोध अब हिंसा में तबदील हो चुका है। लंबी हिंसा के बाद सरकार ने सोशल मीडिया पर बैन लगाने का फैसला वापस तो ले लिया है, लेकिन इससे पहले करीब 19 लोग अपनी जान गंवा चुके हैं। इसी बीच नेपाल से ताल्लुक रखने वालीं मनीषा कोइराला ने हिंसा के इस दिन को नेपाल के लिए ब्लैक डे कहा है। मनीषा कोइराला ने सोमवार रात अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम अकाउंट से खून से सने एक जूते की तस्वीर शेयर करते हुए नेपाली में लिखा है, आज नेपाल के लिए एक ब्लैक डे है, जब जनता की आवाज, करप्शन के खिलाफ नाराजगी और न्याय की मांग का जवाब गोलियों से मिल रहा है। बताते चलें कि पॉपुलर एक्ट्रेस मनीषा कोइराला नेपाल से ताल्लुक रखती हैं। 16 अगस्त 1970 को मनीषा का जन्म नेपाल की राजधानी काठमांडू में हुआ था। वो एक राजनीतिक परिवार से हैं। उनके दादाजी विशेश्वर प्रसाद नेपाल के प्रधानमंत्री और पिता कैबिनेट मिनिस्टर रह चुके हैं। संयोग की बात ये है कि जिस 8 सितंबर को मनीषा नेपाल का ब्लैक डे कह रही हैं, उसी दिन 8 सितंबर 1914 को उनके दादाजी का जन्म हुआ था। मनीषा कोइराला ने करियर की शुरुआत भी नेपाल से ही की थी, जिसके बाद सुभाष घई की फिल्म सौदागर से उन्होंने बॉलीवुड डेब्यू किया था।दरअसल, नेपाल सरकार ने हाल ही में कई सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर बैन लगाने की घोषणा की। सरकार के इस फैसले के खिलाफ कई लोग विरोध प्रदर्शन करने लगे। प्रदर्शनकारियों में ज्यादातर जेनरेशन जेड (जेन-ज़ी) थे, क्योंकि ज्यादातर सोशल मीडिया यूजर इसी एज ग्रुप के थे। प्रदर्शन में शामिल छात्र-छात्राएं स्कूल और कॉलेज की ड्रेस पहनकर सड़कों पर उतरे। कई जगहों पर उन्होंने खुद बैनर और पोस्टर बनाए, नारे लगाए और बिना किसी राजनीतिक पार्टी से जुड़ाव के विरोध जताया। विरोध बढ़ने के बाद पहले आंसू गैस छोड़ी गई, जिसके बाद इस प्रदर्शन ने हिंसक रूप ले लिया। 19 लोगों की मौत हो गई और करीब 300 से ज्यादा लोग घायल हैं।

काजल अग्रवाल ने पढ़ी अपने ही निधन की खबर,खुद सफाई देते हुए कहा- ये बिल्कुल गलत है, मैं ठीक हूं,दावा था एक्सीडेंट में हुई मौत

मुंबई। सिंघम एक्ट्रेस काजल अग्रवाल को तब सफाई देनी पड़ी, जब उन्होंने अपने ही निधन की खबर पढ़ी। कुछ रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा था कि एक्ट्रेस का एक एक्सीडेंट हुआ है, जिसमें उनका निधन हो चुका है। एक्ट्रेस ने न सिर्फ अपने सुरक्षित और स्वस्थ होने का अपडेट दिया, बल्कि लोगों को इस तरह की अफवाहों से बचने की भी नसीहत दी है। काजल अग्रवाल ने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम अकाउंट के स्टोरी सेक्शन में लिखा है, 'मैंने कुछ बेबुनियाद खबरें देखी हैं, जिनमें दावा किया गया है कि मेरा एक एक्सीडेंट हो गया है (और मैं अब इस दुनिया में नहीं हूं) और सच कहूं तो, यह काफी मजेदार है क्योंकि यह बिल्कुल गलत है।' आगे एक्ट्रेस ने लिखा है, 'भगवान की कृपा से, मैं आप सभी को यह विश्वास दिलाना चाहती हूं कि मैं बिल्कुल ठीक हूं, सुरक्षित हूं और बहुत अच्छा कर रही हूं। मैं आपसे विनम्र अनुरोध करती हूं कि ऐसी झूठी खबरों पर विश्वास न करें और न ही उन्हें फैलाएं। आइए, हम अपना फोकस पॉजिटिविटी और सच्चाई पर रखते हैं।' बताते चलें कि काजल अग्रवाल इन दिनों मालदीव में वेकेशन एंजॉय कर रही हैं। वो एक महीने से मालदीव में हैं और लगातार वहां से खूबसूरत तस्वीरें शेयर कर रही हैं। करियर की बात करें तो काजल अग्रवाल इस साल फिल्म सिकंदर और कनप्पा में नजर आई हैं। आने वाले दिनों में एक्ट्रेस द इंडिया स्टोरी, इंडियन 3, रामायणः पार्ट-1 और रामायणः पार्ट- 2 में नजर आने वाली हैं।रणबीर कपूर और साई पल्लवी स्टारर रामायण सीरीज में काजल अग्रवाल मंदोदरी का रोल निभाने वाली हैं। उन्होंने अपनी कई फिल्मों में माइथोलॉजिकल कैरेक्टर प्ले किए हैं। फिल्म कनप्पा में भी काजल अग्रवाल ने पार्वती की भूमिका निभाई थी।

अक्षय कुमार हुए 58 के, नाम बदलते ही मिली पहली फिल्म,जिस बंगले में नहीं मिली एंट्री वही खरीदा,शार्क का शिकार बनने से बाल-बाल बच

मुंबई। अक्षय कुमार यानी एक ऐसा नाम, जिसने अपनी मेहनत के दम पर बॉलीवुड में बहुत ऊंचा मुकाम हासिल किया। साधारण परिवार में जन्मे अक्षय ने कभी शेफ का काम किया, कभी वेटर बने, कभी बच्चों को मार्शल आर्ट्स सिखाए और कभी लाइटमैन भी बने। फिर मॉडलिंग की और जब फिल्मों में आए, तो अपने एक्शन से लोगों का दिल जीता। कॉमेडी में आए तो अपनी डायलॉग डिलीवरी से सबको खूब हंसाया। साथ ही उन्होंने कई अलग-अलग तरह के रोल निभाए। 1990 के दशक में करियर की शुरुआत करने वाले अक्षय कुमार की गिनती आज भी बॉलीवुड के टॉप अभिनेताओं में होती है। अक्षय कुमार का असली नाम राजीव भाटिया है, उनका जन्म 9 सितंबर 1967 को हुआ था। उनके पिता हरि ओम भाटिया आर्मी ऑफिसर थे और मां अरुणा भाटिया गृहिणी थीं। बचपन में ही उनके पिता के ट्रांसफर से परिवार दिल्ली से मुंबई आ गया। छुट्टियों में वे अक्सर चांदनी चौक जाते थे। अक्षय बचपन से ही खेल-कूद में बहुत रुचि रखते थे।जब अक्षय सातवीं क्लास में थे तो उनके नंबर अच्छे नहीं आए। पिता गुस्सा हुए और पूछा कि आगे क्या करना है। अक्षय डर गए और लिखकर बताया कि वे हीरो बनना चाहते हैं। जिस पर पिता ने कहा था कि पढ़ाई जरूरी है, हिंदी-इंग्लिश आनी चाहिए। स्कूल के दिनों में बस में सफर करते हुए संजय दत्त के पोस्टर देखकर कहते थे कि एक दिन मैं भी ऐसा हीरो बनूंगा। अक्षय ने स्कूल की पढ़ाई माटुंगा के डॉन बॉस्को हाई स्कूल से की। वहीं, उन्होंने कराटे सीखना भी शुरू किया। उनका पढ़ाई में ज्यादा मन नहीं लगता था और वे मार्शल आर्ट्स सीखना चाहते थे। पिता ने पैसे इकट्ठे कर उन्हें थाईलैंड (बैंकॉक) भेजा, जहां उन्होंने थाई बॉक्सिंग सीखी। अक्षय कुमार ताइक्वांडो में ब्लैक बेल्ट हैं। करियर की शुरुआत में उन्होंने शेफ और वेटर का काम भी किया।भारत लौटने के बाद वे मार्शल आर्ट्स सिखाने लगे। एक दिन एक स्टूडेंट के पिता, जो मॉडल कोऑर्डिनेटर थे, ने उन्हें कहा, लंबे-चौड़े और अच्छे-खासे दिखते हो, मॉडलिंग क्यों नहीं करते? जिसके बाद अक्षय ने फर्नीचर का ऐड किया और इसके लिए उन्हें सिर्फ 2 घंटे के काम में 21 हजार रुपए मिल गए। जिस पर अक्षय ने सोचा कि मैं तो महीने भर में 5 हजार रुपए कमाता हूं। यहां इतने कम समय में इतने सारे पैसे मिल गए। जिसके बाद उन्होंने यहीं से मॉडलिंग करने का फैसला किया। इसके बाद उन्होंने फोटोग्राफर जयेश शेठ के यहां उनके असिस्टेंट और लाइटमैन के तौर पर काम किया। फिल्मों में वे बैकग्राउंड डांसर भी बने। जब अक्षय फोटोग्राफर जयेश शेठ के साथ लाइटमैन के तौर पर काम करते थे, तब एक बार फोटोशूट के दौरान गोविंदा ने उन्हें देखकर मजाकिया अंदाज में कहा था- 'ओए, हीरो क्यों नहीं बनता तू?' इस पर अक्षय ने कहा, 'सर, आप क्या मजाक कर रहे हैं?' , लेकिन गोविंदा ने दोबारा कहा -'हीरो बन, हीरो।' पहली बार अक्षय ने फिल्म 'आज' (1987) में एक कराटे इंस्ट्रक्टर का छोटा सा रोल प्ले किया था। यह रोल केवल 7-8 सेकेंड का था। इस फिल्म के बाद उन्होंने अपना नाम बदलने का फैसला किया। उन्होंने अपना नाम बदलकर अक्षय कुमार रख लिया। दरअसल, फिल्म 'आज' में लीड एक्टर कुमार गौरव के किरदार का नाम अक्षय था और उन्होंने वही नाम अपना लिया। नाम बदलने के बाद अक्षय ने सबसे पहले एक विजिटिंग कार्ड छपवाया। जिसमें उनका नया नाम और घर का पता लिखा था। उन्होंने बताया था- 'उस दिन सुबह मुझे कार्ड मिला और शाम को मुझे पहली फिल्म 'दीदार' मिल गई थी।' पहली लीड रोल फिल्म से जुड़ा एक और किस्सा है। दरअसल, अक्षय बेंगलुरु में ऐड शूट के लिए जाने वाले थे, लेकिन उनकी फ्लाइट छूट गई। निराश होने के बजाय अक्षय ने खाली समय में एक फिल्म प्रोड्यूसर से मिलने का फैसला किया। उसी मुलाकात की वजह से उन्हें फिल्म 'दीदार' में काम करने का मौका मिला। बाद में उन्हें और भी मूवी मिली, जिसमें 'सौगंध' भी शामिल थी, जो 1991 में 'दीदार' से पहले रिलीज हुई और इस तरह यह उनकी पहली फिल्म बनी। शुरुआती दौर में उनकी फिल्में खास प्रदर्शन नहीं कर पाईं, लेकिन 1992 में आई फिल्म 'खिलाड़ी' ने उन्हें खास पहचान दिलाई। इसके बाद 'मोहरा', 'मैं खिलाड़ी तू अनाड़ी' और 'ये दिल्लगी' जैसी हिट फिल्मों ने उन्हें स्टार बना दिया। 90 के दशक में 'खिलाड़ी' सीरीज से वे एक्शन हीरो के रूप में लोगों के बीच पॉपुलर हो गए। वहीं, 'अफलातून' जैसी फिल्मों में उनका अलग अंदाज दिखा। अपने करियर के दौरान अक्षय ने कई उतार-चढ़ाव देखे हैं। हालांकि वो इंडस्ट्री से गायब नहीं हुए। अक्षय कुमार ने बताया था कि लगातार 16 फ्लॉप फिल्मों के बावजूद उन्हें काम मिला क्योंकि वे हमेशा प्रोफेशनल और समय के पाबंद रहे। उन्होंने प्रोड्यूसर्स की बात मानी, सेट पर अनुशासन रखा और कभी मनमानी नहीं की।साल 2000 में आई कॉमेडी फिल्म 'हेरा फेरी' ने अक्षय की इमेज बदल दी। इस फिल्म ने अक्षय को कॉमेडी हीरो के रूप में नई पहचान दी। साल 2000 से 2010 के बीच 'मुझसे शादी करोगी', 'दीवाने हुए पागल', 'खट्टा मीठा', 'भागम भाग', 'दे दना दन', 'गरम मसाला', 'हे बेबी', 'भूल भुलैया' और 'वेलकम' जैसी फिल्मों में लोगों ने उनकी कॉमेडी को खूब पसंद किया। वहीं, इस दौरान उन्होंने 'धड़कन', 'अजनबी', 'अंदाज' और 'खाकी' जैसी फिल्मों में अलग तरह के किरदार भी निभाए। 'अजनबी' के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ विलेन का फिल्मफेयर पुरस्कार मिला। पिछले एक दशक में अक्षय कुमार ने ऐसी फिल्मों में ज्यादा काम किया, जिनमें मनोरंजन के साथ सामाजिक संदेश था और कुछ फिल्में इतिहास से भी जुड़ी थीं। जिसमें 'एयरलिफ्ट', 'रुस्तम', 'टॉयलेटः एक प्रेम कथा', 'पैडमैन', 'बेलबॉटम', 'केसरी', 'सम्राट पृथ्वीराज', 'रक्षाबंधन', 'सिरफिरा' और 'राम सेतु' जैसी फिल्में शामिल हैं। रुस्तम और पैडमैन के लिए उन्हें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार भी मिला। अक्षय 2018 में रजनीकांत के साथ 2.0 और 2019 में 'गुड न्यूज' जैसी फिल्मों भी नजर आए।हालांकि 2020 के बाद उनका करियर फिर उतार-चढ़ाव से गुजरा। 'लक्ष्मी', 'बच्चन पांडे', 'सम्राट पृथ्वीराज', 'रामसेतु' और 'सेल्फी' जैसी फिल्में बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाईं, लेकिन 'ओएमजी 2' ने उन्हें फिर से चर्चा में ला दिया। टीचर को दिल दे बैठे थे अक्षय कुमार- अक्षय कुमार ने बताया था कि स्कूल के दिनों में उन्हें अपनी एक टीचर पर क्रश था। अक्षय ने हिम्मत जुटाकर अपनी टीचर से कहा -'आई लव यू।' इस पर टीचर ने मुस्कुराते हुए उनके सिर पर हाथ फेरा और कहा-'आई लव यू टू।' इसके बाद अक्षय ने बताया था कि यह किस्सा वहीं खत्म हो गया। बता दें कि अक्षय कुमार का नाम रवीना टंडन और शिल्पा शेट्टी जैसी एक्ट्रेस से जुड़ा। दोनों के साथ रिश्तों ने खूब सुर्खियां बटोरीं। जब आप की अदालत में अक्षय कुमार से सवाल पूछा गया था कि आपको लेकर शिल्पा शेट्टी ने कहा था कि अक्षय ने धोखा दिया और चीटिंग की थी। इस पर अक्षय कुमार ने कहा था- 'देखिए, इसका उत्तर मेरे पास नहीं है। इसका जवाब वही दे सकता है, जो यह बातें बोलता है। मैं सिर्फ इतना कह सकता हूं कि मैं एक मैन हूं और मैंने अपनी जिंदगी में कभी किसी के बारे में कुछ बुरा नहीं कहा। न ही मैं कहना चाहता हूं और न ही आपके शो पर कहूंगा।' अक्षय ने आगे कहा था- 'मैंने हमेशा चुप्पी साधी है क्योंकि मैं एक परफेक्ट जेंटलमैन हूं। मैं कभी अपनी प्राइवेट लाइफ के बारे में बात नहीं करूंगा।' अक्षय कुमार और ट्विंकल खन्ना की शादी 17 जनवरी 2001 को हुई थी। टीवी शो 'यारों की बारात' में अक्षय कुमार ने बताया था कि उनकी पहली मुलाकात ट्विंकल खन्ना से फिल्मफेयर के फोटोशूट के दौरान हुई थी। इसके बाद वे फिल्म 'जुल्मी' की शूटिंग के दौरान मिले, जहां से उनका अफेयर शुरू हुआ। करीब ढाई साल बाद अक्षय ने उन्हें शादी के लिए प्रपोज किया। वहीं, अपने रिश्ते को लेकर ट्विंकल खन्ना ने कई इंटरव्यू में बताया है कि यह रिश्ता शुरू में सिर्फ 15 दिन का फ्लिंग था। वे एक लंबे रिश्ते से बाहर आई थीं और शूटिंग के दौरान बोर हो रही थीं। उस वक्त उन्होंने सोचा कि अक्षय के साथ वक्त बिताना अच्छा रहेगा। ट्विंकल ने मजाक में कहा भी था - 'वो छह फीट लंबे चॉकलेट आइसक्रीम जैसे थे, और मैंने तय किया कि 15 दिन तक ही रिश्ता चलेगा।' लेकिन धीरे-धीरे यह रिश्ता गहराता चला गया। राज्यसभा टीवी के कार्यक्रम 'गुफ्तगू' को दिए इंटरव्यू में अक्षय कुमार ने कहा था कि मैंने कभी नहीं सोचा था कि मेरी शादी राजेश खन्ना की बेटी से होगी। मैं तो उनके ऑफिस में काम की तलाश में अपनी फोटो लेकर जाया करता था। उस समय वे कहते थे- 'ठीक है बेटा, बाद में आना, मैं अभी फिल्म बना रहा हूं।' अक्षय कुमार उन एक्टर्स में गिने जाते हैं, जो शूटिंग के दौरान स्टार्स के साथ मजाक-मस्ती करते हैं। ऐसा ही एक किस्सा रितेश देशमुख ने 'द कपिल शर्मा शो' में बताया था। उन्होंने कहा था कि फिल्म 'हे बेबी' की शूटिंग के दौरान अक्षय कुमार ने उनके फोन से विद्या बालन को शरारत में 'आई लव यू' का मैसेज भेज दिया। यह देखकर रितेश हैरान रह गए। हालांकि मजेदार मोड़ तब आया जब विद्या बालन ने उस मैसेज के जवाब में किस वाला स्माइली भेजा। रितेश को समझ नहीं आया कि आखिर यह सब हुआ कैसे। बाद में सच्चाई सामने आई कि विद्या का मोबाइल उस वक्त अक्षय कुमार के पास था और उन्होंने ही यह पूरा मजाक किया था। यह बात तो जगजाहिर है कि अक्षय कुमार फिल्मों में अपने स्टंट खुद करते हैं। अक्षय ने 'खिलाड़ी 420', 'ब्लू', 'सिंह इज ब्लिंग' जैसी फिल्मों में खतरनाक स्टंट किए हैं। 'खिलाड़ी 420' के लिए अक्षय कुमार ने एक बेहद खतरनाक स्टंट किया था, जिसमें उन्हें हवाई जहाज से गुब्बारे पर कूदना पड़ा। यह स्टंट इतना रिस्की था कि इसमें 70फीसदी मौत की संभावना और केवल 30फीसदी बचने की संभावना थी। वहीं, फिल्म ब्लू की शूटिंग के दौरान अक्षय पानी में 70-80 फीट नीचे गए थे। वहां उनके सिर पर चोट लगी और खून निकलने लगा। उन्होंने बताया कि खून शार्क को आकर्षित करता है, इसलिए स्थिति बेहद खतरनाक हो गई थी, लेकिन टीम ने तुरंत उन्हें बाहर निकाला और उनकी जान बची। अगर थोड़ी भी देरी होती तो अक्षय शार्क का खाना बन जाते। अक्षय ने हाल ही बताया था कि उन्हें एक्शन सीन की प्रेरणा कार्टून शो टॉम एंड जेरी से आती है। हेलिकॉप्टर से लटकने या खतरनाक स्टंट्स, उन्होंने उसी कार्टून से सीखा और पर्दे पर उतारा। अक्षय कुमार अपने शुरुआती दिनों में पोर्टफोलियो शूट के लिए एक बार जुहू बीच के पास एक बंगले के अंदर जाना चाहते थे, लेकिन चौकीदार ने मना कर दिया। मजबूरी में अक्षय ने उसी बंगले की बाहर वाली दीवार पर बैठकर अपना फोटोशूट करवाया। सालों बाद, जब उन्होंने पुरानी तस्वीरें देखी तो हैरान रह गए कि वही दीवार, उसी का हिस्सा है, जिस बंगले में वे रह रहे हैं। फिल्म 'कीमत' की शूटिंग के दौरान रणवीर सिंह भी वहां पहुंचे थे। उस समय रणवीर छोटे थे और उन्हें वहां से धक्का देकर बाहर निकाला जा रहा था, जिससे वे रोने लगे। तभी अक्षय की नजर रणवीर पर पड़ी तो उन्होंने अपने सिक्योरिटी गार्ड्स से उन्हें सेट के अंदर लाने को कहा।

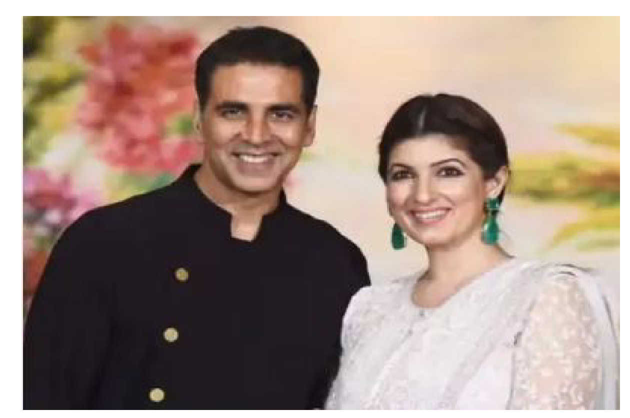

पति बेरोजगार हैंःससुराल से मदद लेने में उनका इगो टकराता है, पति को कैसे समझाऊं, मदद लेना कमजोरी नहीं, साहस है

नयी दिल्ली। एक्सपर्टः द्युतिमा शर्मा, क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट एंड ट्रॉमा थेरेपिस्ट, भोपाल से समझते हैं सवाल जवाब के माध्यम से. सवालः मेरी शादी को 3 साल हो गए हैं। मैं और मेरे पति आर्थिक तनाव से जूझ रहे हैं। हाल ही में उनकी नौकरी चली गई और अब हम मेरी आमदनी और कुछ बचत पर निर्भर हैं। मैं पैसे को लेकर सतर्क हूं, लेकिन वह खर्च करने में लापरवाह हैं, जिससे हमारे बीच बहस होती है। मैं उनकी नौकरी छूटने के दुख को बढ़ाना नहीं चाहती, लेकिन मुझे भविष्य की चिंता सता रही है। मेरे परिवार ने मदद की पेशकश की, पर उन्हें लगता है कि उनका आत्मसम्मान बिखर जाएगा। हम पैसे के मसले को रिश्ते पर हावी होने से कैसे रोकें? क्या मुझे सख्त बजट बनाना चाहिए या कोई और तरीका है? उनकी इमोशनल मदद कैसे करूं और हकीकत से कैसे निपटूं? उन्हें कैसे समझाऊं कि ससुराल से मदद लेने में कोई बुराई नहीं है? जवाबः शादी के 3 साल बाद, आपके पति की नौकरी छूटने से आर्थिक तनाव बढ़ गया है। आप अपनी इनकम और कुछ बचत पर निर्भर हैं और आपके अलग-अलग खर्च करने के तरीकों के कारण बहस हो रही है। आप भविष्य की चिंता में हैं, लेकिन अपने पति के दुख को बढ़ाना नहीं चाहती हैं। आपके परिवार ने मदद की पेशकश की है, लेकिन आपके पति को लगता है कि इससे उनका आत्मसम्मान कम होगा। आप पूछ रही हैं कि पैसे के मसले को रिश्ते पर हावी होने से कैसे रोका जाए, क्या सख्त बजट बनाना चाहिए, उनकी भावनात्मक मदद कैसे करें और उन्हें कैसे समझाएं कि ससुराल से मदद लेना ठीक है। सबकुछ एक-एक करके समझते हैं।पैसे के मसले को रिश्ते पर हावी होने से कैसे रोकें? पैसे के मसले को रिश्ते पर हावी होने से रोकने के लिए सबसे जरूरी है खुलकर बातचीत और एकजुटता। अपने पति के साथ शांत माहौल में बैठें और अपनी चिंताओं को साझा करें। उदाहरण के लिए, आप उन्हें बताएं कि आप ये समझती हैं कि यह आप दोनों के लिए मुश्किल है, लेकिन अगर हम साथ मिलकर इसे संभालें, तो हमारा रिश्ता मजबूत रहेगा। बहस को समाधान की ओर मोड़ें।खुलकर बातचीत से आप दोनों के बीच विश्वास बढ़ेगा और पैसे का तनाव रिश्ते पर भारी नहीं पड़ेगा।हां, एक सख्त लेकिन लचीला बजट बनाना चाहिए। इसे दोनों आपसी सहमति से तैयार करें, ताकि कोई दबाव महसूस न करे। बजट आपकी आय और खर्चों को नियंत्रित करेगा और बहस को कम करेगा। साथ ही, साझा वित्तीय लक्ष्य बनाना भी जरूरी है।इस दौरान आप अपने पति की नौकरी खोजने में मदद करें। उनके रिज्यूम को अपडेट करने या जॉब पोर्टल्स पर आवेदन करने में मदद करें। बजट और लक्ष्य से आपको स्पष्टता मिलेगी और आप दोनों एक टीम की तरह काम करेंगे। उनकी भावनात्मक मदद कैसे करूं और हकीकत से कैसे निपटूं? नौकरी छूटने से आपके पति का आत्मसम्मान को नुकसान हुआ होगा। उनकी भावनात्मक मदद के लिए आपको संवेदनशीलता और धैर्य दिखाना होगा। हकीकत से निपटने के लिए व्यावहारिक कदम उठाएं। भावनात्मक रूप से साथ देने के तरीके- बातें सुनेंः उनकी बात बिना जज किए सुनें। अगर वे चिंता साझा करें, तो कहें, 'मैं समझती हूं कि यह तुम्हारे लिए कितना मुश्किल है।' सहानुभूति रखेंः उन्हें बताएं कि आप उनके साथ हैं। कैसी भी मुश्किल हो साथ मिलकर पार कर लेंगे। सकारात्मकता लाएंः साथ में वॉक पर जाएं, पुरानी यादें ताजा करें, या घर पर कोई सस्ता शौक शुरू करें। हिम्मत बंधाएंः उन्हें याद दिलाएं, 'यह अस्थायी है, तुम जल्द ही नई शुरुआत करोगे।' हकीकत से निपटने के लिए- उनकी भावनाओं का सम्मान करते हुए भी वित्तीय स्थिति पर स्पष्ट चर्चा करें।छोटे-छोटे कदम सुझाएं, जैसे नौकरी की तलाश में मदद करना या बजट का पालन करना। धैर्य रखें, लेकिन जरूरत पड़ने पर सख्ती भी दिखाएं, जैसे गैर-आवश्यक खर्चा रोकना। भावनात्मक समर्थन से उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा, और हकीकत से निपटने में आप दोनों की भागीदारी रिश्ते को मजबूत करेगी।उन्हें कैसे समझाऊं कि ससुराल से मदद लेने में कोई बुराई नहीं है? आपके पति को लगता है कि ससुराल से मदद लेने से उनका आत्मसम्मान कम होगा, जो भारतीय संस्कृति में आम सोच है। इसे संवेदनशीलता से समझाएं। मदद को अस्थायी बताएंः उनसे कहें कि यह मदद सिर्फ इस मुश्किल वक्त को पार करने के लिए है। जब तुम्हारी नौकरी लग जाएगी, हम इसे लौटा देंगे। औपचारिक बनाएंः इसे कर्ज की तरह पेश करें और कहें, हम इसे लिखित रूप में रख सकते हैं, ताकि तुम्हें बोझ न लगे। प्यार और समर्थन पर जोर देंः उन्हें बताएं कि आपका परिवार हमारी मदद करना चाहता है क्योंकि वे हमसे प्यार करते हैं। इसमें शर्म की बात नहीं है।

इससे जुड़े उदाहरण देंः अगर आपके परिवार ने पहले उनकी मदद की हो, तो उसे याद दिलाएं। उन्हें यह एहसास दिलाएं कि यह एक अस्थायी समाधान है और इससे उनकी गरिमा कम नहीं होगी।आर्थिक तनाव से निपटने के टिप्स खुलकर बात करेंः अपनी चिंताएं साझा करें और उनकी भावनाओं को समझें। बजट और लक्ष्य बनाएंः सख्त लेकिन लचीला बजट बनाएं और साझा फाइनेंशियल टारगेट तय करें। इमोशनल सपोर्ट देंः उनका आत्मसम्मान बढ़ाएं और सकारात्मक रहें। परिवार से मदद लेंः इसे अस्थायी और सम्मानजनक तरीके से पेश करें। जरूरत पर पेशेवर मदद लेंः वित्तीय सलाहकार या काउंसलर से सहायता लें।

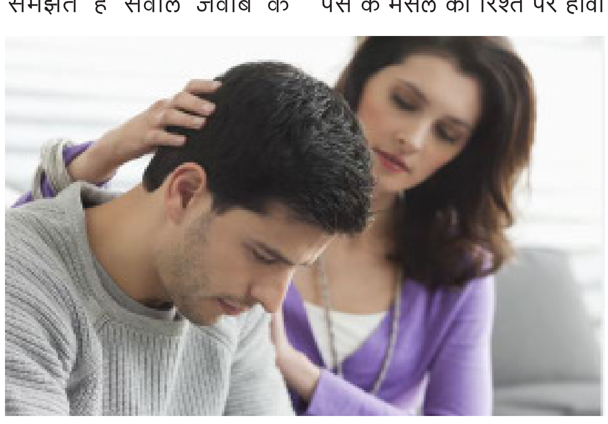

ब्लैक ड्रेस में बोल्ड अंदाज में नजर आई शिवानी तोमर दर्शकों ने कहा 'चाँद निकला है'

मुंबई। हाल ही में टीवी की मशहूर अभिनेत्री शिवानी तोमर ने एक इवेंट में अपनी उपस्थिति से सभी को हैरान कर दिया। ब्लैक ड्रेस में उनका बोल्ड और आकर्षक अंदाज देखने लायक था। शिवानी का यह नया लुक सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रहा है, जहाँ दर्शकों ने उनकी खूबसूरती की तारीफ करते हुए कहा 'चाँद निकला है।' शिवानी ने अपने लुक को मिनिमल मेकअप और सिंपल हेयर स्टाइल के साथ कम्पलीट किया था, जिससे उनका प्राकृतिक सौंदर्य और भी उभरकर सामने आया। इस इवेंट में उनकी नजाकत और आत्मविश्वास ने हर किसी का दिल छू लिया। फैशन और ग्लैमर की दुनिया में उनकी यह शाही उपस्थिति चर्चा का विषय बन गई है। इसके साथ ही शिवानी ने अपनी सोशल मीडिया पोस्ट में भी अपनी फैन्स को धन्यवाद दिया और कहा कि वह हमेशा अपने दर्शकों के प्यार और समर्थन से प्रेरित रहती हैं। अर्थात, शिवानी तोमर का यह नया लुक न सिर्फ उनके फैशन सेंस को बल्कि उनकी व्यक्तिगत स्टाइल को भी एक नया आयाम दे रहा है, जिसे उनके फैंस बेतहाशा सराह रहे हैं।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
द्वारा रामा प्रिंटर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र) 211002 से मुद्रित एवं सी-41यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज से प्रकाशित।
संपादक/प्रकाशक
डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।